খজৰা টোপী



শ্ৰী চন্দ্ৰনাথ মিশ্ৰ 'অমৰ'

★ देख, परदेश एलेहेँ, बोली लरम कर । जेकर बोली लरम रहै छै तकदीरो तकरे संग दै छै ।

★ अन्न वस्त्र दूनू अत्यन्त आवश्यक वस्तु थीक, प्रत्युत अन्नक अभावमे दू चारि दिन प्राण धारण कऽ सकैत छी, मुदा वस्त्रक अभावमे एको क्षण बितायब परम संकट ।

★ लिखले पढ़ल लोक तँ आइ-काल्हि सस्त अछि, एक बजायब चौदह आबय ।

★ हाथ पैर बान्हि कऽ बैसल रहब आराम नहि थिकैक । अपना हाथेँ काज करह आ तकरफल भोगह तँ मन मस्त रहतह, जे मसलंग पर ओठङल बाबू भैयाकेँ कहियो ने भेटि सकैत छनि ।

★ आजुक भारतमे एक गामक मुखिया जँ एना छोट लोक, पैघ लोकक विचार करय तखन तँ ग्राम राज्य भेल कि किछु बाँकी रहल ।

★ सुन, सुन, पाहुन साच्छात विस्नु थिकाह । गिरहस्त केँ जखनी भागक उदय होइ छै तखनी पाहुन अबै छथिन ।

खजबा टोपी

(एकांकी संग्रह)

आयुष्मान श्रीशंकर कें
आशीः पुरस्सर
श्री अमर
26.5.05

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नवरत्न गोष्ठी
आदित्य सदन
मिश्रटोला
दरभंगा- 846004

KHAJABĀ TOPI
SRI CHANDRANĀTH MISHRA 'AMAR'

प्राप्ति स्थान :
आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा- 846004
दूरभाष : 06272-223485

पहिल खेप : मई, 2005

प्रति : 300 मात्र

मूल्य : एक सय टाका (100/-) मात्र

मुद्रक : प्रिंटवेल,
टावर चौक, दरभंगा
दूरभाष : 06272-248421

कहबाक अछि जे....

जेँ किछु नहि छी तेँ सब किछु छी आ जेँ सब किछु छी तेँ किछु नहि छी ।

ई कोनो बुझौअलि नहि, एक तथ्य थीक । नाटकक कोनो शास्त्रीय विवेचन करब हमर उद्देश्य नहि अछि, मात्र एतबा कहि देब आवश्यक बुझायल जे काव्यमे नाटक विधाकेँ एहि कारणेँ सबसँ रम्य कहल गेलैक जे आँखि आ कान एहि दूनू ज्ञानेन्द्रियक सक्रियतासँ रसावबोध होयबाक कारणेँ आपामर जनता एकर रसास्वादन करबामे क्षम होइत अछि । निर्देशकसँ लऽ अभिनेते नहि, प्रत्युत परदाक डोरी घिचनिहार धरि तथा वाद्ययन्त्र सबमे मजीरा बजौनिहार धरि नाटकक प्रायोगिक सफलतामे कारक तत्त्व होइते अछि, हमरा जनैत दर्शकोकेँ एही कोटिमे मानल जयबाक चाही ।

नाटक दिस उन्मुखता एक दर्शकेक रूपमे हमरा भेल से प्रतीत होइत अछि । हमरा जहिया सँ ज्ञान-प्रान भेल, मिथिलांचलमे शेरपुर लगमा निवासी उमाकान्तक नाटक मण्डली सुख्यात छल । राज दरभंगा द्वारा आयोजित दरभंगामे इन्द्रपूजा तथा राजनगरमे दुर्गापूजाक अवसर पर उक्त मण्डली द्वारा प्रतिदिन नाटक खेलायल जाइत छलै । राजसँ संपृक्त रहबाक कारणेँ बाल्यकालेसँ हमर ओहिमे निर्बाध प्रवेश छल । यैह नाटक सब देखैत-देखैत नाटक खेलयबोक प्रवृत्ति जन्म लेलक ।

मैथिलीमे नाटकक अल्पता एखनहु छैक, ताहि समयमे अत्यल्पता छलैक । हिन्दीएक नाटक सब खेलायल जाइक ।

कटहरवाड़ीमे सम्प्रति जे दुर्गास्थान छैक, 1934 ई.क भूकम्पसँ पहिने ओहीठाम महारानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय रहैक, हमर पिता जकर प्रधानाचार्य रहथि । भूकम्पमे भवन ध्वस्त भऽ गेलै' तँ ओही परिसरमे फूसक घर सब बनाबाओल गेल रहैक, विद्यालयोक हेतु आ अध्यापक ओ छात्र लोकनिक आवास हेतु सेहो ।

कटहरबाड़ीमे हरिवल्लभबाबू नामक एक वकील छलाह जे जातिसँ कायस्थ रहथि आ चित्रगुप्त पूजाक अवसर पर दू राति नाटकक आयोजन करथि । नाटकक पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) करबाक हेतु विद्यालयक भवनमे संध्या 5 बजे सँ अबैत जाथि । बाल सुलभ उत्सुकतावश हम ओ देखऽ जाइ । गीत गयबाक नैसर्गिक गुण हमरामे छल तेँ दू तीन टा गीत

ओहि नाटकमे गयबाक अवसर ओ हमरो देलनि । एहि तरहें अभिनयक मंच पर उतरबाक संयोग लागल ।

हमर गाम खोजपुरमे कृष्णाष्टमीक पूजा बड़े धूमधामसँ मनाओल जाइक । यद्यपि खोजपुरमे रहबाक अवसर हमरा बहुत थोड़ भेटैत छल, तैयो एक बेर गाममे छलहुँ । गोइ मिसर लगमा निवासी पं० बच्चा झा हमरा गामक संस्कृत पाठशालामे अध्यापक रहथि जे मूर्ति निर्माणक कलामे पूर्ण प्रवीण छलाह । कृष्णाष्टमीक पूजाक हेतु प्रतिवर्ष मूर्त्ति वैह बनावथि । हुनके आग्रह पर पूजाक अवसर पर मुन्सी रघुनन्दनदास 'साहित्य रत्नाकर' रचित नाटक खेलयबाक जोगाड़ कयल । निरस्ते पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' ओहि नाटकक निर्देशक तँ बनबे कयलहुँ, किछु मुर्दाशंख, पाउडर, पफ, काजर, सिन्दूर, स्प्रीट गम आ मोंछ दाढ़ी बनाबऽ लै बाजारसँ केश, विग आदि जुटा लेलहुँ । मेक-अप मैन सेहो बनि गेलहुँ । साड़ी सभकें जोड़ि पर्दा, चौकी सबकें जोड़ि मंच बनल । नाटक भेल । 'मिथिला'क भूमिका गामक एक भगिनमानसँ कराओल । मिलाजुलाकऽ देहाती लोकक हेतु नाटक मनोरंजक भेल । अपना तँ उमाकान्तक नाटक सब देखल छल, तें सन्तोष पूर्णरूपें नहि भेल तथापि नवसिखुआ अभिनेता सब, साधनक अभाव ताहि सबकें ध्यानमे राखि असन्तोषो नहि भेल ।

जखन एम्.एल्. एकेडमीमे शिक्षक पदपर नियुक्त भेलहुँ तँ छात्रसमुदायमे हमर लोकप्रियता देखि छओ मासक बाद 1948मे छात्रावास अधीक्षकक भार सेहो देल गेल । स्कूल सबमे धर्मनिरपेक्षताक भूत तावत सवार नहि भेल छलै । सरस्वतीपूजाक आयोजन बहुत उत्साहसँ होइत छलैक । ताहि अवसर पर 1948 सँ 1953 धरि छओ गोट नाटकक मंचन कयल ।

एकबेर वार्षिक पुरस्कार वितरणक अवसर पर तत्कालीन मुख्यमंत्री डा० श्रीकृष्णसिंह अन्य अनेक मंत्रीक संग आयल छला । ओहि समय पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीयुत झिंगुरकुमरक अभिभावकत्वमे नाटक 'तमाशा'क एक छोट छीन दृश्यक उपस्थापन कयने रही । कारण तमाशा जखन पाण्डुलिपिए छलनि तँ पहिले पहिल उपर्युक्त छवो नाटकमे एक टा नाटक ईहो छल ।

तकरबाद तमाशाकें प्रकाशित करयबाक उद्देश्यसँ दरभंगा नगरभवन आ लहेरियासरायक वीणापाणि क्लबमे टिकट पर मंचन कयल, मुदा शेखरजीक तुनुक मिजाजीसँ तथा रिहर्सल ओ मंचनमे ततेक खर्च भऽ गेलैक जे प्रकाशनक योग राशि नहि बँचलै । तखन सूर्यनारायणझा (पेपर हाउस)कें सहमत कऽ एकरा प्रकाशित कराओल ।

कनेक विषयान्तर भेल । उक्त पुरस्कार वितरणक अवसर पर एक आन्हर भिखारी एक गीत गबैत छैक- ''दुनियां एक तमाशा बाबा'' । राघवेन्द्रराय नामक एक छात्र ई गीत प्रस्तुत कयने छलाह । श्रीयुत झिंगुर बाबू उपस्थापनसँ पूर्व सम्पूर्ण व्यवस्थाक निरीक्षण करैत नेपथ्य कक्ष (ग्रीन रूम)मे पहुँचलाह । राघवेन्द्रकें देखि हमरा पुछलनि- यह कौन है ?

ओहि नाटकमे गयबाक अवसर ओ हमरो देलनि। एहि तरहेँ अभिनयक मंच पर उतरबाक संयोग लागल।

हमर गाम खोजपुरमे कृष्णाष्टमीक पूजा बड़े धूमधामसँ मनाओल जाइक। यद्यपि खोजपुरमे रहबाक अवसर हमरा बहुत थोड़ भेटैत छल, तैयो एक बेर गाममे छलहुँ। गोइ मिसर लगमा निवासी पं० बच्चा झा हमरा गामक संस्कृत पाठशालामे अध्यापक रहथि जे मूर्ति निर्माणक कलामे पूर्ण प्रवीण छलाह। कृष्णाष्टमीक पूजाक हेतु प्रतिवर्ष मूर्त्ति वैह बनावथि। हुनके आग्रह पर पूजाक अवसर पर मुन्सी रघुनन्दनदास 'साहित्य रत्नाकर' रचित नाटक खेलयबाक जोगाड़ कयल। निरस्ते पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' ओहि नाटकक निर्देशक तँ बनबे कयलहुँ, किछु मुर्दाशंख, पाउडर, पफ, काजर, सिन्दूर, स्प्रीट गम आ मोंछ दाढ़ी बनाबऽ लै बाजारसँ केश, विग आदि जुटा लेलहुँ। मेक-अप मैन सेहो बनि गेलहुँ। साड़ी सभकेँ जोड़ि पर्दा, चौकी सबकेँ जोड़ि मंच बनल। नाटक भेल। 'मिथिला'क भूमिका गामक एक भगिनमानसँ कराओल। मिलाजुलाकऽ देहाती लोकक हेतु नाटक मनोरंजक भेल। अपना तँ उमाकान्तक नाटक सब देखल छल, तेँ सन्तोष पूर्णरूपेँ नहि भेल तथापि नवसिखुआ अभिनेता सब, साधनक अभाव ताहि सबकेँ ध्यानमे राखि असन्तोषो नहि भेल।

जखन एम्.एल्. एकेडमीमे शिक्षक पदपर नियुक्त भेलहुँ तँ छात्रसमुदायमे हमर लोकप्रियता देखि छओ मासक बाद 1948मे छात्रावास अधीक्षकक भार सेहो देल गेल। स्कूल सबमे धर्मनिरपेक्षताक भूत तावत सवार नहि भेल छलै। सरस्वतीपूजाक आयोजन बहुत उत्साहसँ होइत छलैक। ताहि अवसर पर 1948 सँ 1953 धरि छओ गोट नाटकक मंचन कयल।

एकबेर वार्षिक पुरस्कार वितरणक अवसर पर तत्कालीन मुख्यमंत्री डा० श्रीकृष्णसिंह अन्य अनेक मंत्रीक संग आयल छला। ओहि समय पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीयुत झिंगुरकुमरक अभिभावकत्वमे नाटक 'तमाशा'क एक छोट छीन दृश्यक उपस्थापन कयने रही। कारण तमाशा जखन पाण्डुलिपिए छलनि तँ पहिले पहिल उपर्युक्त छवो नाटकमे एक टा नाटक ईहो छल।

तकरबाद तमाशाकेँ प्रकाशित करयबाक उद्देश्यसँ दरभंगा नगरभवन आ लहेरियासरायक वीणापाणि क्लबमे टिकट पर मंचन कयल, मुदा शेखरजीक तुनुक मिजाजीसँ तथा रिहर्सल ओ मंचनमे ततेक खर्च भऽ गेलैक जे प्रकाशनक योग राशि नहि बँचलै। तखन सूर्यनारायणझा (पेपर हाउस)केँ सहमत कऽ एकरा प्रकाशित कराओल।

कनेक विषयान्तर भेल। उक्त पुरस्कार वितरणक अवसर पर एक आन्हर भिखारी एक गीत गबैत छैक– ''दुनियां एक तमाशा बाबा''। राघवेन्द्रराय नामक एक छात्र ई गीत प्रस्तुत कयने छलाह। श्रीयुत झिंगुर बाबू उपस्थापनसँ पूर्व सम्पूर्ण व्यवस्थाक निरीक्षण करैत नेपथ्य कक्ष (ग्रीन रूम)मे पहुँचलाह। राघवेन्द्रकेँ देखि हमरा पुछलनि– यह कौन है ?

हम परिहासक मुद्रामे कहलियनि— ई पार्ट तँ बूढ़-आन्हरक थिकै तेँ बाहरक एक प्रौढ़ व्यक्तिकेँ ताकि कऽ आनऽ पड़ल ।

क्रूद्ध क्षुब्ध सन होइत कहलनि— यहाँ जो कुछ पर्फौर्मेंस होगा, स्कूल के लड़के ही करेंगे । आप बिना पूछे बाहर के आदमी को इसमे घुसा दिया है । इसको रद्द कीजिये । तखन राघवेन्द्र कहि उठलथिन— सर, आपने नही पहचाना ? मैं राघवेन्द्र हूँ ।

चकित-विस्मित होइत कहलनि— वाह ! अहाँ तेना मेक-अप कऽ देने छिऐ जे हमरा एको रत्ती चिन्हबामे नहि आयल । हमरा आत्मसन्तोष भेल जे हम मेक-अप-मैन भऽ सकैत छी । एहि प्रकारेँ पहिने अभिनेता, पुनः निर्देशकक संग रंगकर्मी बनि गेलहुँ ।

पहिने कहि आयल छी जे मैथिलीमे नाटकक अल्पता छलै, तेँ मंचक स्वाद बदलबा लै बीच-बीचमे मैथिलीक प्रहसन होइक । तन्त्रनाथ बाबूक लिखल 'एकांकी चयनिका' प्रवेशिका परीक्षामे पाठ्य पुस्तक रहनि । घुरा-फिराकऽ ओहीमेसँ खेलायल जाइक । तेँ आग्रह होअऽ लागल एकांकी लिखि देबाक । ताही आग्रहकेँ पूरा करबालै यदा-कदा लिखऽ पड़ल ।

साक्षरताक प्रसार हेतु एक प्रकारक आन्दोलन भेलै' तँ 'निरक्षरता निवारक पाठशाला', कोसीकेँ बन्हबाक हेतु श्रमदानक नारा स्व-ललित नारायणमिश्र लगौलनि तँ 'श्रमदान', बेसिक एजुकेशनक कार्यक्रम आरम्भ भेलै तँ 'आधुनिक पाठ्य प्रणाली' एकांकी लिखा गेल । ई तीनू टा समस्यामूलक छल तेँ 1955मे 'समाधान' शीर्षक सँ पुस्तिकाक रूपमे प्रकाशित कयल ।

'वैदेही' मासिकक सम्पादनक क्रममे कथा, कविता, एकांकी आदि विधाक विशेषांक सभक सम्पादन कयल । ओहि अवधिमे किरणजी, परमेश्वरमिश्र, भवनाथझा 'दीपक' प्रभृति बहुतो साहित्यकार एकांकीक प्रणयनमे दत्त-चित्त छलाह ।

1978क मार्चमे 20 ता० सँ 25 ता० धरि साहित्य अकादेमी द्वारा एकांकीपर काशीमे एक कार्यशाला आयोजित भेलै, जाहिमे दस भाषाक चारि-चारि एकांकीकारकेँ बजाओल गेल रहनि । उपस्थित भेलाह कुल 21 व्यक्ति—

संस्कृतमे-3, अंग्रेजीमे-3, उर्दूमे-2, डोगरीमे-2, हिन्दीमे-1, पंजाबीमे-1, राजस्थानीमे-1 कश्मीरीमे-0 मैथिली आ नेपालीमे 4-4 । उदघाटन सत्रक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उद्घाटन तथा उमाशंकर जोशी अध्यक्षता कयने छलाह । केलकर साहेब अकादेमीक तत्कालीन सचिव अपन सहायक सचिव विष्णु खरेक संग स्वयं आयल रहथि । मैथिलीक जे चारि गोटे सम्मिलित भेलहुँ ताहिमे सुधांशु शेखर चौधरी, श्री गंगेश गुंजन, डॉ० उदय नारायण सिंह नचिकेताक संग चारिम हम रही ।

समापन सत्रकेँ उद्बोधित करबाक हेतु आचार्य सीताराम चतुर्वेदी आयल रहथि । ओ अपन उद्बोधनमे कहने छलाह जे एकांकीक आचार्य लोकनिमे फ्रेंचक आचार्यक मत छनि जे

समय दृश्य आ परिणाम एक होयबाक चाही, जर्मन आचार्य समय आ परिणाम एक होयबआवश्यक मानैत छथि, किन्तु भारतीय आचार्य परिणाम मात्रकेँ महत्त्व देलनि अछि। अन्ततः 'निरंकुशाः कवयः' कहल गेल अछि तेँ सब बन्धनसँ मुक्तो एकांकी भऽ सकैछ।

उक्त संगोष्ठीमे अपन-अपन भाषाक एकांकी विषयक कतेको आलेख पाठ भेल। संवाद वाचन नृत्य गीत आदि सेहो भेल, संगहि कहल गेलै जे कार्यशालाक अवधि मे एक एक एकांकी लिखैत जाथि। एहि प्रस्तावकेँ सब ई कहि नकारि देलथिन जे लेखन कार्यक हेतु पृथक् मानसिकता होइत छै' जे कार्यशालामे नहि भऽ सकैत छै। तेँ ई संभव नहि अछि। तथापि हम एक टा एकांकी लिखलहुँ जकर शीर्षक देलिऐक-'दिशाबोध' जे 16 जुलाइ 78क मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल।

ओहि समय डॉ० श्रीजयकान्तमिश्र साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि छलाह। उक्त कार्यशालामे हमर नाम सम्मिलित कयलनि तकर कारण हमरा प्रतीत भेल एक पूर्वक घटना।

1954 मे म.म.डॉ. उमेश मिश्र संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगाक निर्देशक छलाह। डॉ० एडगर्टन दरभंगा आयल रहथि। हुनक सम्मानमे राजक नाटक घरमे प्रो. हरिमोहनझा लिखित 'अयाची'क मंचन भेलैक। ओहिमे प्रो. कृष्णकान्तमिश्रक विशेष आग्रहपर हमरा अयाची मिश्रक भूमिकामे मंच पर उतरऽ पड़ल छल। विख्यात डॉक्टर अमूल्यधन चटर्जी बंगालसँ आयल छात्रक तथा डॉ० श्रीगणपतिमिश्र बालक शंकरक रूपमे भाग लेने छलाह। वैदेही समितिक दिससँ हमरा रजतपदक दऽ प्रोत्साहित कयल गेल छल। प्रायः ताहिसँ प्रभावित भऽ हमरो नाम कार्यशालामे पठौने छल होयताह।

जाहि अवधिमे एम्.एल्. एकेडमीमे सरस्वती पूजाक अवसर पर नाटक सभक निर्देशन कयने रही, मिर्जापुर (राजनगर)क महंथ श्री मदनमोहन दास, स्कूलक छात्र छलाह। यद्यपि ओ मैट्रिक परीक्षा देबासँ पहिनहि ई स्कूल छोड़ि देने रहथि तथापि 1964 ई.मे जखन मैथिलीमे फिल्म बनयबा लै अग्रसर भेलाह तँ ओकर मुहूर्त (आरंभ) पटनाक हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवनमे कयने रहथि। दुराग्रह पूर्वक हमरा ओहि अवसर पर पटना लऽ गेलाह। ओहि फिल्मक नायिका एक वाक्य संवाद बजलैक जकर ध्वनि विकृत छलै जकर उच्चारण कऽ हम सुधारऽ कहलिऐक जकरा दृष्टिमे राखि महन्थजी जखन राजनगरमे एकर शूटिंग आरम्भ कयलनि तँ हमरो सहयोग करबाक आग्रह कयलनि।

गर्मी छुट्टी भऽ गेल छलै' तँ हमरा कोनो असुविधा नहि भेल। मैथिलीमे फिल्म बनय तकर सेहन्ता छले, ताही लोभेँ हम समय देलियनि। हँऽ, फिल्मक नाम रखने छलथिन- 'नैहर भेल मोर सासुर'' हमरा एहि नाममे कनेक गारिक गन्ध लागल। एकर निर्देशक रहथिन सी. परमानन्द ओहो एम्.एल्. एकेडमीक छात्र रहथि। गीतकार रहथि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर जे कवि सम्मेलनक मंच पर सबठाम संग रहथि। उदयभानुसिंह जमीन्दारक

भूमिकामे रहथि। बहुत घमर्थनक बाद 'नैहर भेल मोर सासुर'कें बदलि 'ममता गाबय गीत' नाम स्वीकृत भेल।

'रचना' अक्टूबर-दिसम्बर 2004क अंकमे एहि फिल्मक निर्माणक इतिहास प्रस्तुत कयल गेल अछि जाहिमे हमर योगदानदक कोनो चर्च नहि अछि, नाम परिवर्त्तनक प्रसंग कमलनाथ सिंह ठाकुरक सोचक परिणाम' कहल गेल अछि। हमरा नामोल्लेखक सेहन्ता नहि अछि, किन्तु सत्यक अपलाप भेल अछि। तज्जन्य क्षोभ अवश्य। राजनगरक बाद हम एहि सँ सम्बद्धो नहि रहलहुँ, किन्तु एही समाचारसँ अवगत भेलापर श्रद्धेय हरिमोहनबाबू 'कन्यादान' फिल्ममे सहयोग करबाक आग्रह कयलनि जाहि प्रसंग कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा (बम्बैक डायरी) नामक पुस्तकमे हम विस्तारसँ लिखने छी। यद्यपि एकर आउट डोर शूटिंग, पुनः पुनः बम्बैक विवरण ओहिमे नहि अछि। अस्तु।

आब नाटकक तकनीक तते विकसित भऽ गेलैक अछि, ध्वनि ओ प्रकाशक तेहन सुव्यवस्था प्राप्त छैक जे ताहि दिनक मंचनकें पचास कोस पाछू छोड़ि देने छैक। हमरासन पछुआयल लेखको ततबे दूर पड़ि गेलाह। तैयो यत्र-तत्र छिड़िआयल एकांकी सबकें एकत्र पुस्तकक आकार देबाक लौल भेल, तकर कारण ई जे आधुनिक मैथिली नाटकक 2005 शताब्दी वर्ष थिकै। आधुनिक नाटकक प्रवर्त्तक कविवर जीवनझाक प्रथम नाटक 1905 ई. मे प्रकाशित भेल छलनि। एही ऐतिहासिक महत्त्वकें इंगित करबाक उद्देश्य सँ एकर प्रकाशन।

मैथिलीक पाठक वृन्दकें सूचनार्थ उल्लेख कऽ देब अप्रासंगीकि नहि होयत जे साहित्य अकादेमीक दिससँ बंगला मराठी तथा असमीभाषाक नाटक संग्रह सभक मैथिलीमे अनुवाद कार्य चलि रहल अछि जाहि सभक प्रकाशन एहि वर्ष भऽ जयबाक आशा कयल जा सकैत अछि।

अन्तमे पनुः दोहरा दी जे हम ने नाटककार छी, ने अभिनेता, ने निर्देशक, ने रंगकर्मी तें आरंभे कहलहुँ जें सब किछु तें किछु नहि छी। पुनः ई कहब आवश्यक लागल जे तीन गोट एकांकीक संग्रह 'समाधान' नामसँ 50 वर्ष पूर्व प्रकाशित भेल छल, ताहू तीनू कें एहिमे समाहित कऽ लेल गेल अछि।

सबसँ पहिल एकांकी 'टोपी' वैदेही (पाक्षिक)क दू अंकमे प्रकाशित भेल छल जें पहिल एकांकी (प्रहसन) टोपी लिखलहुँ तें मित्र मण्डलीक अनुरोधें खजबा विशेषण जोड़ि एहि संग्रहक नामकरण खजबा टोपी भेल।

आशीर्वाद दैत छियनि अपन द्वितीय दौहित्र श्रीशंकरदेवकें जे विभिन्न ठाम छिड़िआयल एकांकीकें छानि कऽ बाहर कऽ प्रेसमे देबाक भार लेलनि। चि. कुमारी राधाकें जे मुख पृष्ठ बना देलनि। प्रिंटवेलक अधिकारीकें धन्यवाद पूर्वक आब ई एगारहो एकांकी पाठकक हाथमे समर्पित कऽ रहल छियनि।

—श्रीअमर

अनुक्रम

खजबा टोपी

पात्र-परिचय

गुरुजी : प्रौढ़ वयस, धोती, कुर्त्तामे

मुसाइ, मुनचुन, सुकना, तिलक, विसुन, : 14 सँ 16 वर्षक, ठेठी धोती, हाफ शर्ट, गोलगला आदि पहिरन, सभक हाथमे स्कूली बस्ता ।

रामचरन : 40-45 वर्ष वयस, विशुद्ध देहाती पहिरन

ग्राहक 1 : मध्य वित्तक साफ सुथरा पहिरन, खुटिआयल दाढ़ी

ग्राहक 2 :

सैलून चलौनिहार

मुनिञा : 17-18 वयस, सामान्य परिवारक पहिरन

बिल्टू : 20-22 वयस, पुरान सन फुलपेन्ट आ शर्ट

एक महिला : अधवयसू

पहिल दृश्य

[स्थान- उच्च विद्यालय, बेंच, डेस्क, टेबुल, कुर्सी, ब्लैक बोर्ड, पाँच टा विद्यार्थी बेंच पर बैसल अछि, गुरुजी ब्लैक बोर्ड पर लिखैत]

गुरुजी : मनुक्ख अपना मनक भाव जाहि द्वारा प्रकट करैत अछि तकर नाम थिकै भाषा । संसारमे जतेक देश छैक, सब देशकेँ अपन-अपन भाषा छैक, मुदा अपन देश भारत वर्ष बहुभाषी देश अछि । बुझै गेलही ?

सब : (एक संग) हँऽ ।

गुरुजी : की बुझलिही ? **(छात्र सब हाथ उठबैत अछि, एककेँ इशारा सँ बाजऽ कहैत छथिन)**

मुनचुन : मनुक्ख अपना मनक बात जाहिसँ अनका कहै छै तकर नाम थिकै भाखा।

गुरुजी : **(दोसर छात्रसँ)** भारतवर्ष बहुभाषी देश थीक तकर माने की ?

मुसाइठाकुर : **(हँसैत)** हें, हें हम केना कहब, जेकरा बहु छै से ने कहत। **(गुरुजी लग आबि कान ऐंठैत)** तोरा बापकेँ बहु छै ने, काल्हि बापसँ पूछि कऽ अबिहें। **(दर्शकसँ)** बीत भरिक छौंड़ा आ एहन अलगटेंट। **(मुसाइ जोर-जोर सँ कानऽ लगैत अछि)**

गुरुजी : चुप रह, ने तँ पीठक खाल खीच लेबौ।

सुकना : गुरुजी, बापक नाँ लेलिऐ, से तँ ठीक बात नहि।

गुरुजी : तोरो कान सबसबाइ छौ ? **(ओकरा लग जाइत छथिन) (पाँचो विद्यार्थी ठाढ़ होइत)** अहाँ गारि पढ़बै से हम सब नहि सहब। चलै चल, अइ गुरुजीसँ हम सब नहि पढ़ब। **(इनकिलाब जिन्दाबाद कहैत सब चल जाइत अछि)**

गुरुजी : ई कोन स्वतन्त्रता भेलै जे एहि गदहा सन सन छौंड़ो सभक मगजी उनटि गेलै अछि। **(प्रस्थान)**

दोसर दृश्य

[स्थान– रास्ता, पोथीक बस्ता लेने पाँचो छात्रक प्रवेश]

मुसाइ : एते सबेरे गाम पर जेबै तऽ बाबू मारत।

मुनचुन : आ हमरा बाबू दुलार करता ?

सुकना : मारि तँ सबकेँ खाय पड़तौ।

तिलका : चलै चल ओइ गाछीमे ताबे खेलाइत जायब।

विसुन : हँऽ सब गोटे झिज्झिर कोना चोरा नुक्की खेलायब। **(सब जाइत अछि, परदा उठैत अछि, पाँचों छात्रक प्रवेश)**

मुनचुन : तोँ सब एक पाँतीमे ठाढ़ हो। **(सब ठाढ़ होइत अछि)** एक बान सूझय

तिलका : बंडा बूझय।

मुनचुन : कतहु कतहु एक टा लुक्खी देखा दे। **(चारू गोटे चारू कात उपर मुँहें तकैत अछि, ककरो नहि देखि पड़ैत छै)**

सुकना : हमरा आउर केँ नइँ भेटल। मुनचुन, आब तोँही देखाबह।

मुनचुन : (आङ्गुरसँ देखबैत) ओइ दोकन्हा पर छपकल, देखै गेलही ?

(हँऽ हँऽ कहैत चारू थपडी पाड़ऽ लगैत अछि)

मुनचुन : तोँ सब आँखि मून, हम नुकाइत छी ।

विसुन : झिज्झिर कोना झिज्झिर कोना कोन कोना जायब ?

मुसाइ : बेल तर मारल बबूर तर जायब ?

मुनचुन : तोँ सब आँखि मून, जाबे हम नुकाइ ताबे जे ताकय से कुकुरक हग्गल खाय । (नुका रहैत अछि)

(मुसाइक बाप खाली देह, अंगापोछा माथमे बन्हने, काँखतर डटौखा, तमाकू चुनबैत प्रवेश करैत)

रामचरण ठाकुर: (मुसाइक चुरकी पकड़ैत) तोरा हम पठौली इसकूल पढ़े ला आ तू अइ ठिना.... (तीनू छौंड़ा फुर्र भऽ जाइत अछि) पढेला कहबौ तऽ पढ़बेँ नइँ, कैंची अस्तूराचलाबे कहबौ तऽ चलेबेँ नइँ, भीख माइङ के गुजर करबेँ रे अभगला ! (मुसाइकेँ ठेलि दैत छै, मुसाइ खसि पड़ैत अछि, रामचरण चल जाइत अछि । मुनचुन प्रवेश कऽ)

मुनचुन : तोहर बाबू कोमहर सँ आबि गेलौ ? हमरा तँ नहि देखलक ?

मुसाइ : (उठिकऽ देह पोन झाड़ैत) इयार, दुनू गोड़े भागिकऽ चलबेँ कोनो शहर ?

मुनचुन : किछुओ ढौआ कौड़ी तँ संग रहबाक चाही (कनेक सोचि) हम अन्हरोखे पुरनी पोखरि पर जे कदंबक गाछ छै, ताही तर ठाढ़ रहबौ । (दूनू दूनू दिस चल जाइत अछि)

तेसर दृश्य

[स्थान- दाढ़ी केश बनयबाक सैलून । मुसाइ एक डोलमे पानि लेने प्रवेश करैत अछि । सैलूनक मालिक अंगपोछासँ कुर्सी झाड़ि रहल अछि]

एक व्यक्ति: (प्रवेश कऽ) कने दाढ़ी बना दैह (दाढ़ी केँ कुड़ियबैत अछि)

ठाकुर : हौ मुसाइ, कने दाढ़ी बना दहुन ।

मुसाइ : बना दिऔनि कि काटि दिऔनि ।

ठाकुर : तू बातकेँ बड़े पदाबे लगै छेँ ।

(आगत व्यक्ति कुर्सी पर बैसैत अछि, मुसाइ साबुन लगा कऽ फेनाबऽ लगैत अछि)

मुसाइ : सरकार, अहाँ दाढ़ी रखले छी आ कि खढ़ौर ?

आगत : ठाकुर, ई छौंड़ा बड़ लबर लबर बजैए । कहाँ सँ अइ बनमानुख केँ बझा कऽ अनलहुँ अछि ?

ठाकुर : काल्हि मुनहारि साँझमे आयल । खेखनिञा करे लागल जे हम जाति भाइ छी । बाप बेमार भऽ गेलहेँ, हमरा अपना सैलूनमे रैख लू ।

आगत : एहन केँ जँ रखलहुँ तँ गहिकी भड़कि जायत ।

मुसाइ : हम की जानऽ गेली जे विआयल गाय जँकती गहिकीओ आउर भड़कै छै ?

ठाकुर : **(मुसाइक हाथसँ ब्रश छीनि, ठेलि कऽ हटबैत)** इह् मुँह जे लगै छनि ।

मुसाइ : **(दर्शक दिस आगाँ आबि)** जेना हिनकर पित्ती रहियनि ।

ठाकुर : की बोललेँ ? मारते घड़मेच्चा से घेंट सीधा कऽ देबौ । **(आगत व्यक्ति पानिसँ दाढ़ी धो कऽ उठि जाइत अछि)**

आगत : अहाँ दुनू गोटे फड़िछबैत रहू, हमरा बस छूटि जायत । **(कहैत चल जाइत अछि)**

ठाकुर : पहिले बोहनी के ई अलच्छा भङठौलक । **(मुसाइसँ)** भाग हमरा ओइ ठिन से । हम नइँ एहन नोकर के रक्खब ।

मुसाइ : मालिक, हमर ई पहिल गलती के छेमा कऽ दिअऽ । आब सऽ गलती नइँ करब । हे नेहोरा करै छी । **(दूनू हाथेँ पैर पकड़ैत छै)**

ठाकुर : देख, परदेश एलेहेँ, बोली लरम कर, जेकर बोली लरम रहै छै, तकदीरो तेकरे संग दै छै । आइ माफ कऽ दै छियौ, फेनो जे कयलेँ तँ सीधे निकाइल देबौ । **(बगुली सँ तमाकू बाहर करैत)** तू ताले दोकान के देख, हम झाड़ा फिरने अबै छी । **(ठाकुर चल जाइत अछि)**

एक ग्राहक : **(प्रवेश कऽ)** ठाकुर कतऽ गेलाह ?

मुसाइ : ऊ गेलखिनहेँ कैंची अस्तूरा पर सान चढ़ावे आ लहरनी पिटबाबे ला । वैह एक-दू घंटामे आइबे जेता ।

ग्राहक : एक दू घंटा बैसब से पलखति अछि ! **(चल जाइत अछि)**

मुसाइ : **(सैलूनमे राखल वस्तु सबकेँ उठा उठा देखैत अछि । स्नो केर डिब्बीसँ तर्जनी आङ्गुरसँ कनेक बाहर कऽ चाटि लैत अछि, मुँह विकृत बना कऽ थूकि दैत छै आ मुँह फोलि ऊपर कऽ श्वास लैत)** मुँह मगर गमगमा गेल । **(पुनः मूड़ी डोलबैत पाउडरक डिब्बासँ पुष्ट कऽ ढारि मुँहमे लेपि अयनामे मुँह देखैत अछि)**

ठाकुर : (प्रवेश करैत मुसाइकेँ देखि) आ रौ डकूबा ! ई तऽ हमर पूजीए के भट्ठा बैठा देत। (धक्का दैत) भाग हमरा ठिन सऽ। हम एहन आदमीकेँ नइँ रक्खब। (मुसाइ नेहोरा करैत रहै छै, ठाकुर ओकरा ठेलैत रहैत छै, परदा खसैत छैक)

चारिम दृश्य

[स्थान- रास्ता, एकटा झोरा हाथमे लेने मुनचुनकप्रवेश]

मुनचुन : इयार तँ गेल अपन खान्दानी काज पकड़ऽ, मुदा हम ? अच्छा जे सोचलहुँ सैह ठीक। हम तान्त्रिक बनि जाइ, भूत, भविष्य वर्त्तमान सब कहबै, झाड़-फूक, यन्त्र-मन्त्र, जऽड़ी-विभूति सभक उपयोग करब, ठकि ठकि सब सँ मौज उड़ायब। (**झोरा सँ नकली दाढ़ी मोंछ, लालरंगक कुर्त्ता, रुद्राक्षक माला आदि गीत गबिते बाहर करैत अछि**)

गीत

हम तँ तान्त्रिक जी बनि जायब,
लोकसँ बैसल खूब पुजायब। हम तँ....
भूत भविष्यक कहब बात सब
अपनहि औता साँझ प्रात सब
हम कनैत केँ हँसा देब हँसितो केँ खूब कनायब। हम तँ....
हमर करत सब अपने पूजा
फाँकय पड़त आब नहि भूजा
तस्मै संगहि चाभब पूआ बैसल मौज उड़ायब। हम तँ...
हमर होयत घर-घरमे चर्चा
बढ़ले जायत दिन-दिन खर्चा
बुड़िबक सँ दशटकही पहिने पन्द्रह गोट गनायब। हम तँ....

(गीत समाप्त होइत वेश बदलि लैत अछि)

[शर्ट, फूलपेंट पहिरने मुनिञाक प्रवेश]

मुनिञा : काकाकेँ कहैत कहैत थाकि गेलिऐ जे हौ काका ! इसकूलमे हमरो नाँ लिखा दैह। हमहू कङरेसी बनब, टोपी पेन्हब आ कम्मे मेहनतिमे बेसी कमायब। (**दर्शक सब दिस बढ़ि**) मगर काका की कहय से सूनब ?

एक दर्शक : (उठिकऽ) की कहौ ?

मुनिञा : कहय जे इसकूल जाइ छै बाबू भैयाक लड़िका । तू चाक चलायब सीख, घैला, कोहा, सरबा, ढकना बनायब सीख जइसऽ गुजर चलतौ । अहीं आउर कहू जे भगवान खाली बाबुए भैयाकेँ अकिल दै छथिन ? हम आइ सँ तीन बरख पहिने घर सऽ भागिकऽ अइली । (**घूमि कऽ देखि**) अरे, ई महतमा के छिया ? (**लग जाइत अछि**)

(**मुनचुन आँखि मूनि ध्यानस्थ होयबाक मुद्रा बनबैत अछि**)

मुनिञा : (**लगमे बैसि**) परनाम महत्माजी !

मुनचुन : के थिकहुँ ? की चाहै छी ? (**देखि कऽ चिन्हि जाइत छै**)

मुनिञा : हम घर सऽ भागल एक अभागल छी । कने हमर भाग करम केहन ऐछ से हाथ देखि दिती ।

मुनचुन : (**पहिने कपारक तखन हाथक रेखा नीक जकाँ देखि**) हमरा बुझाइत अछि म अक्षर पर अहाँक नाम अछि ।

मुनिञा : (**आश्चर्य चकित होइत**) हँऽ हमर नाँ छी मुन्नीलाल ।

मुनचुन : छुच्छे मुन्नीलाल नहि, मुन्नीलाल पण्डित कहू । अहाँक हृदयमे विद्या प्राप्त करबाक बड़ सेहन्ता अछि ।

मुनिञा : साँचे ।

मुनचुन : मुदा अहाँक पिता स्वर्गवासी भऽ गेल छथि आ पित्ती पढ़ाबऽ नहि चाहलनि तेँ अहाँ गृहकेँ त्यागि देल ।

मुनिञा : (**दूनू हाथेँ मुनचुनक पैर पकड़ैत**) अहाँ साच्छात देवता छी, मनक बात धरि केना जाइन गेली ?

मुनचुन : अहाँक कपारक रेखा कहैत अछि– अहाँकेँ सफलता भेटत, मुदा एखन एक टा ग्रह बाधक अछि, दोसर ग्रहक प्रभावसँ कतहु नीक आश्रय भेटि गेल अछि ।

मुनिञा : हँऽ, ए गो सेठजीकेँ हमरा पर दया आइब गेलनि ऊहे सरन देले छैथ ।

मुनचुन : एहि बाधक ग्रहकेँ शान्त करबा लै अनुष्ठान करा ली तँ शीघ्रे अहाँक उन्नतिक बाट फूजि जायत ।

मुनिञा : अनुष्ठानमे की खरच पड़तै ।

मुनचुन : अनुष्ठानीके एक जोड़ धोती, गमछा, आसन, सवा पौआ मेवा, सबा सेर मधुर आ अन्तमे दक्षिणा जे अहाँक साध्य हो ।

मुनिञा : तैयो...

मनुचुन : 151/– रु० सँ कम तँ नहिएँ, तखन सामर्थ्यक अनुरूप दक्षिणा नहि देलासँ अनुष्ठानक पूरा फल नहि भऽ पबैत छैक ।

मुनिञा : ओना सेठजी के अपना बेटा नइँ छनि तँ हमरा खूब मानै छैथ मगर एतना सामान दऽ हुनकरा कहबैन केना ।

मुनचुन : सेठानी जी ? हे पुरुषसँ बेसी स्त्रीगणमे ममता होइ छै ।

मुनिञा : मानै तऽ छैथ ऊहो, अच्छा... **(बिल्टू हुलकी दऽ सुनैत अछि)**

मुनचुन : हम अनुष्ठान करैत नहि छिऐक । अहाँक ललाटक उज्ज्वल रेखा देखि हमरा दया आबि गेल अछि । ई ग्रह जँ अहाँक कटि गेल तँ तुरन्त राजसी योग शुरू भऽ जायत । दू दिनक समय दै छी । तत्काल सवा पौआ मेवा दऽ जाउ, ओकरा मन्त्राबऽ पड़ै छै । जेना माछ लै बन्सीमे बोर तहिना ग्रहके फँसाबऽ लै मेवा ।

(मुनिञा जाइत अछि । बिल्टू प्रवेश करैत)

बिल्टू : **(तान्त्रिक सँ)** अपने की सब जनै छी ?

मुनचुन : अहाँ अपन प्रयोजन कहू, हम तँ भूत-भविष्यक बात कहैत छिऐ, जड़िआयल रोग व्याधि लै जड़ी दैत छिऐ, भूत-प्रेत-पिशाच, डाइनि-योगिन सभक प्रतीकार करै छिऐ ।

बिल्टू : हमरा घरमे भूत बड़ उपद्रव करैत अछि, अपने ओकरासँ उद्धार कऽ दी तँ हम जीवन भरि गून गबैत रहब आ सामर्थ्य भरि अपनेक आदेशक पालन करब ।

मुनचुन : बेस, हमहू तँ जनता जनार्दनक सेवामे जीवन उत्सर्गि देने छी ।

(मुनिञा एक पुड़ियामे किसमिस, काजू, छोहाड़ा आदि आगाँमे राखि)

मुनिञा : हम तीन दिनक बाद आयब ।

मुनचुन : नहि, दू दिनक बाद माने परसू । **(ओ चल जाइत अछि । बिल्टूसँ)** अहाँ कारनी के लेने आउ ।

बिल्टू : कारनी आबि नहि सकैए, अपनेके चलऽ पड़त । लऽगे छै ।

मुनचुन : पहिने अहाँ जा कऽ एक मटकूड़ी बकरीक सुखायल नेंड़ी, एक लप बड़ौर, दस टा सुखायल लाल मेरिचाइ, एक ढाकन आगि, दू इंचक दू टा काँटी, दू टा पीपरक टुस्सा आ एकटा काँच कड़ची ओरिया कऽ तखन आउ। आ हे ! कम सँ कम 151/- रु० दक्षिणा लागत ।

(बिल्टू बेस कहि चल जाइत अछि । मुनचुन पुड़िया सँ लऽ खाइत गबैत अछि)

यार कहाँ सँ अनता मेवा

करथु राति-दिन अनकर सेवा

हम तँ बड़का धोधिवलासँ पैर अपन जँतवायब । हम तँ....

विल्टू : **(प्रवेश कऽ)** चलियौ सरकार, सब फीट छै ।

(दुनू गोटेक प्रस्थान । परदा उठैत अछि ।)

[एकटा खाट, ताहि पर सोनाक हार आ औंठी गेडुआक उपर राखल छैक । एक टा महिला खाटक कातमे नीचेमे बैसलि, नूआसँ मूँह झँपने, देहकेँ डोलबैत, मूड़ीकेँ झँटैत चिचिया रहल अछि]

महिला : एमरी हम नइँ मानबौ, हम एकर बलि लऽकऽ छोड़बौ । **(गरजि गरजि)** नइँ मानबौ, नइँ मानबौ.... ।

तान्त्रिकजी : **(बिल्टूक संग प्रवेश कऽ ठिकिया कऽ देखि)** पहिने बैसऽ लै एक टा आसन दिअऽ आ सब सामान लऽ आनू । **(बिल्टू आसन आनि-ओछा दै छनि । सामानसब आनिकऽ रखैत अछि । संगमे दू टा महिला अबैत छै)**

तान्त्रिक : अहाँ सब घर खाली कऽ दिअऽ ।

(ओ सब चल जाइत अछि । मनुचुन आगिमे थोड़ेक बकरीक नेड़ी, बड़ौर दऽकऽ फूकि कऽ आगिकेँ धधकबैत दू टा मेरिचाइ दऽ दैत छै । कारनी ओहिना झूमैत बजैत जाइत अछि, मुदा मेरिचाइक दौंक लगला पर उकासी उठि जाइत छैक ।)

तान्त्रिक : **(कड़ची कारनीक माथ पर सटबैत)** ह्राँ, ह्रीं ह्रूं, ह्रै, ह्रौं फट **(तीन बेर पढ़ि, सोनाक हार आ औंठी झोरामे रखैत)** बाज तों के थिकेँ । **(कारनी खोंखैत-खोंखैत बोकरऽ लगैत अछि । मुनचुनकेँ अपनो सुरसुरी लागि जाइत छैक)** कहाँ गेलहुँ औ घरबैया **(बिल्टू दौड़ल अबैत अछि । बिल्टूक हाथमे दूनू पीपरक टुस्सा दऽ)** कारनीक दुनू कानमे ई टुस्सा ठूसू तँ । **(तावत बिल्टूक नजरि गेडुआ पर जाइ छै, हार आ औंठी नहि देखि–)**

बिल्टू : एहि ठाम सोनाक चेन आ औंठी छलै !

तान्त्रिक : कतहु होयबे करत । एखन ई पीपरक टुस्सा....

बिल्टू : मुदा चेन आ औंठी ?

तान्त्रिक : घरेमे कतहु होयत । हम भूतकेँ एहि काँटीमे पकड़ने छी । अहाँ टुस्सा कानमे ठुसने रहू ने तँ फेर कान दऽ भूत पैसि जेतै । हम काँटी पीपरमे ठोकने अबैत छी । **(झोरा लऽ बाहर होइत अछि । कारनी निस्स भऽ गेल अछि । बिल्टू पाछाँसँ आबि झोरा छीनि लैत छै, मुनचुन पड़ाइत अछि ।**

(परदा खसैत छैक)

पाँचम दृश्य

(मुनचुनक हिचुकैत गबैत प्रवेश)

भेट कहा सँ भेल डकूबा,
सठा देलक सबटा मनसूबा,
हे जगदम्बा ! हमर शत्रु केँ कहिया नरक पठायब,
मैया ! कहिया नरक पठायब ।

जे लिखलाहा छल से पूरल,
सुखक समय कहियो ने घूरल **(कान पकड़ैत)**
कान पकड़लहुँ फेर घूरिकऽ एहि बाट नहि आयब,
कहियो एहि बाट नहि आयब, कहियो एहि बाट नहि आयब ।

अरे बाप रे बाप ! कोन कुकुरमाँछी कटलक जे घर छोड़ि घुड़मुड़िया खेलाय अयलहुँ । इयारक संग छूटि गेल, अपन कपार फूटि गेल, लगक वस्तु लूटि लेलक, आब कतऽ जाउ ! अच्छा, जाइ छी सैलून सबमे ताकऽ । **(मुनचुन एक दिस जाइत अछि, दोसर दिससँ मुसाइ प्रवेश करैत अछि ।)**

मुसाइ : आ रौ डकूबा ! मङनीमे काज करा लेलक आ खाइओ नहि देलक । इयार ऐछ चुस्त चलाक, ओ कतहु हाथ सुतारनहि होयत । जाइ छिऐ ताकऽ जँ भेटि गेल । **(जाइत अछि, दोसर दिस सँ मुनचुन आबि)** यरबाकेँ तकैत-तकैत तरबा खिया गेल, मुदा यरबाक पता नहि चलल, गाम जाउ तँ कोन मुँह लऽकऽ ? **(मुनिञा प्रवेश करैत अछि आ मुनचुन नुका कऽ हुलकी दैत रहैत अछि ।)**

मुनिञा : सुनलहुँ जे तान्त्रिक वेषधारी ओ ठक भूत झाड़ऽ गेलै आ सोनाक चेन संग औंठी चोरा कऽ लेने जाइ छलै तेँ झोरा झपटा सब छीनि लेलकै । एहन समाज भऽ गेल, बाघक खाल ओढने बेसी गदहे सौंसे खेत चरि रहल अछि । बाना एहन आ करनी छुछुन्नर सन । **(जाइत अछि)** ।

मुनचुन : (**प्रकट होइत**) यार भेटि जइतय तँ दूनू गोटे जहर माहुर खा संगहि मरितहुँ जे यमराजोक लग किछु रंग लगबितहुँ । भगवानोकेँ चश्मा किनबाक काज पड़ि गेलनि अछि, बेसी दूर नहि सुझै छनि । यार ने जानि कोन काँकोड़क बीहरि बाटेँ पाताल चल गेल । (**मुसाइक प्रवेश, मुनचुन भरि पाँज कऽ पकड़ैत**) इयरबा रौ इयरबा ! तोरा तकैत तकैत जाँघ लोढ़ी भऽ गेल ।

मुसाइ : हँऽ यौ इयार, हमरो छाती सिलौट भेल जाइ छल । कहू, केना छी ?

मुनचुन : की कहब कपार, अहाँ सैलून पकड़लहुँ, हम तान्त्रिक बनि गेलहुँ । पहिल ग्राहक सोमनाक भातिज मुनिञा भेटल । ओ तँ नहि चिन्हलक, मुदा हम चीन्हि गेलिऐ । ओकर बगय-बानी तँ देखिते बनय । धोती, कुर्ता, जुत्ता पहिरने बुझायल जेना मालिकके बेटा हो । तत्काल पाँच कनमा पंचमेवा ओकरासँ झाड़ल । परसूक समय देने छलिऐ, मुदा बिच्चे विधाता लगौलनि तमाशा ।

मुसाइ : की भेल ?

मुनचुन : छोड़ू ओ बात, अपन हारल, बहुक मारल क्यौ बजैत अछि ? हे, मुनिञा एखने ओमहर गेल अछि । ओकरा एक टा सेठ हाथ लागि गेल छै । लफड़ि कऽ चलू । ओकरे पकड़ब, कतहु कोनो ने कोनो जोगाड़ ओ धरा सकैत अछि ।

मुसाइ : ठीक सोचलहुँ हेँ इयार, मुदा पेटमे मुसरी डंड पेलैत ऐछ, मन अकबक आ तन फकफक करैए ।

मुनचुन : से की कहै छी इयार यथा एन्नी तथा ओन्नी, एन्नी-ओन्नी तथैवच ।

मुसाइ : इयार, लाजेँ होइए जे चुलहीमे मुँह नुकाकऽ कानी ।

(सोझाँ सँ मुनिञा प्रवेश, दुनू केँ देखि चकुआइत)

मुनिञा : एँऽऽ, मुनचुन आ मुसाइ ! अहाँ दूनू गोड़े एत्तऽ केना ?

(दूनू गोटे मुनिञा केँ दूनू दिससँ पाँजमे पकड़ैत)

दूनू : मुन्नीलाल हौ मुन्नीलाल ! (**छोड़ि कऽ ठाढ़ होइत**)

मुनचुन : भने तोरा सँ भेट भऽ गेल ।

मुसाइ : गाम जाह तऽ कहि दिहक गाम पर जे दूनू मारल गेल ।

मुनिञा : से किए ?

मुनचुन : जखन कोनो रोजगारे नहि भेटत तँ जीब कोना ?

मुसाइ : हम दूनू गोड़े जाइ छिकी रेलमे कटि जाइ ला ।

मुनिञा : कहू भला, भगवान दू टा हाथ-पैर, दू टा आँखि-कान देने छथि । नइँ कुइछ तऽ ट्रक सब पर सँ माल उतारब, माल चढ़ायब, 10-5 रुपैया कमा लेब अपन पेट भरिकऽ दू टाका बचाइओ सकै छी ।

मुनचुन : ओ काज हमरा सब सँ पार लागत ?

मुनिञा : मेहनतिसँ जे देह नुकौत तेकर जिनगी पहाड़ छै । (**किछु सोचैत**) अच्छा, ए गो बात ।

मुसाइ : की ?

मुनिञा : हमर सेठजी गान्धीबाबा के बड़ भारी भक्त छथिन । तू दूनू गोड़े कङरेसक परचारक काज करह तऽ हम सेठजी सऽ ऊ काज दिया देबऽ ।

मुनचुन : की करऽ पड़ै छै ?

मुनिञा : अहाँ के पैजामा, कुर्त्ता आ टोपी पेन्हे ला मिलत, खायला आठ आना रोज, सूतऽ पड़ऽ ला सेठजीके मण्डिल । घरे-घर जाउ, छूआछूत अपना समाज के कोढ़ छी से लोकके बुझाबे पड़त । जनी जातिसऽ ले के बेदरा धैरके सफाइ के गून समझाबे पड़त । सब जाति के लोकके सिच्छा सऽ जोड़ऽ ला लिखब-पढ़ब सिखाबे पड़त ।

मुसाइ : एहन काज मिलत तऽ किए ने करब ।

मुनचुन : बस, बस, सब सँ सोझ, सबसँ हल्लुक आ सबसँ चोटगर ।

मुनिञा : तऽ चलू हमरा सङे ।

(मुनिञा आगाँ आ मुनचुन, मुसाइ पाछाँ पाछाँ गबैत मंच पर घुमैत)

गोपी कृष्णक समय न रहलनि

टोपी कृष्ण कहल कर, रे मन ! टोपी कृष्ण कहल कर ।
आब धर्म पर प्राण गमौने हाथ न किछुओ लगतौ
टोपी धारण करबेँ लगले भाग करम सब जगतौ
नेता सबहक डाँट-डपट केँ गबदी मारि सहल कर । रे मन...
जौँ इच्छा छौ हम समाजमे खूरी अपन पुजाबी
बिनु मेहनतिएँ ठाठबाटसँ गहवर अपन सजाबी
नव-नव देब उठौथुन डाली, तनिके चरण गहल कर
रो मन ! टोपी कृष्ण कहल कर ।

(परदा खसि पड़ैत अछि ।)

[रचनाकाल 1950 ई.]



निरक्षरता निवारक पाठशाला

पात्र-परिचय

सोनेझा : ग्रामीण गृहस्थ, वयस साठिक लमपास
पंचमनि : ग्रामीण किशोर
चतुर्भुज : प्रगतिशील विचारक नवयुवक
नेनाबाबू : गामक माइनजन
गूजन : ग्रामीण
सन्तलाल : ग्रामीण
नेवालाल : ग्रामीण
एकपंच
दोसर पंच
तेसर पंच

प्रथम दृश्य

[स्थान– सोनेझाक दलान, गोनड़ि ओछाओल, कतबहिमे कुट्टी काटक हाँसू राखल, एकटा छुतहड़ ओंघड़ायल, एकटा खाट पर सोनेझा बैसल, माँझिल बेटा एमहरसँ आबि ओमहर जाय लगैत छथिन–]

सोनेझा : हौ पाँचो ! सबटा कड़ची बथानेपर पड़ल छह, महींस काछड़ि कटैत कटैत सब गोंत-गोबरकेँ घोरिकऽ अमौट बना देलकह आ' तोँ टलवाहि केने फिरैत छह ?

(पंचमनि मुँह दूसि कऽ पड़ा जाइत अछि)

सोनेझा : हौ बूड़ि ! क्यौ नहिं काज औतह, धन्न ई बुढ़िआ महींस जे चुरकी पर तेल, एमहर अबैत' छह की आउ ?

(पंचमनि मुँह फुलौने अबैत अछि)

पंचमनि : हमरा भाइ कहलनि अछि पंच सबकेँ बजा लाबऽ ।

सोनेझा : बड़ पंचक नाँति बनलाह अछि, जेहने ओ बूड़ि, कने गान्ही टोपी माथ पर लेलनि की नबाब भऽ गेलाह, जतेक नाढ़र से गामक पंच । अपन काज करह गऽ, नहि तँ हम एही हाँसू सँ कुट्टी-कुट्टी कऽ देबह । **(सोनेझा ओकरापर हुड़कैत छथिन, ताबत गान्धी टोपी पहिरने चतुर्भुजक प्रवेश-)**

चतुर्भुज : एँ हौ पंचमनि ! तोँ गेलाह नहि ?

(पंचमनि इशारासँ बूढ़ाक दिस देखबैत छनि)

चतुर्भुज : सब नाश कयलह ।

सोनेझा : ई बूड़ि नाढ़र नहि तँ, अपने लोकक पाछाँ-पाछाँ ढहनायल फिरैत छथि, आ' ई जँ घरक काज करैत अछि तँ नाश कैलकनि ?

चतुर्भुज : काका ! अहाँ बुझैत छिऐक किछुने आ' सब बातमे दखल देबऽ लगैत छिऐक ।

सोनेझा : हँऽ हौं, जेँ हम नहि किछु बुझैत छिऐक तेँ ने तोरा सन वंश कुड़हरि, खाली बेँट लागब बाँकी छह, से लगा देल जाह तँ अङरेजिआ कोदारि भऽ जैबह । हौं ! पंचक पाछू-पाछू घुमने कोन नेढ़ा भेटतह ?

चतुर्भुज : **(कनेक जोरसँ)** हमरा कोन काज अछि पंचक ?

सोनेझा : तँ किऐक कहैत छहक बजा' लाबऽ ?

चतुर्भुज : भरि गामक लोक मूर्खे मूर्ख अछि तेँ...

सोनेझा : तेँ तोरा की ?

चतुर्भुज : हमरा की, हमरा यैह जे स्वतंत्र देशक युवक छी, ई सब देखि कऽ लाज होइत अछि ।

सोनेझा : आ' अपेन धाकड़ सन भऽ गेलाह, तैओ घर-दुआरि नाश होइत छह तकर लाज नहि ?

चतुर्भुज : से हमरे द्वारेँ नाश होइत अछि ? ताहि लय हम की करब ?

सोनेझा : तोँ की करबह, खाली भरि गामक पाछू नुड़िआयल फिरह, अपने लीखि-पढ़ि कऽ कटहरमे नेढ़ा लगबैत छह, आब चललाह अछि भरि गामकेँ पढ़ाबऽ ।

चतुर्भुज : अहाँसँ के लागै 'कनही गाइकेर भिन्न बथान' ।

सोनेझा : **(चतुर्भुजकेँ हुरपेटैत)**- एँ रौ ! तोरा लेखेँ हम कनही गाय, पड़ाह एहि ठामसँ की हम...

चतुर्भुज : अहाँक मारने हमर इज्जति कहाँ चल जायत, बाप तँ बेटाकेँ मारिते छैक, डँटिते छैक, मुदा दुलारो तँ वैह करैत छैक ।

सोनेझा : तोरे सन चुल्हिचनकेँ दुलार करतैक ।

चतुर्भुज : हौ पंचमनि ! तोँ झट दऽ जाह, कहिहौनि जे स्कूल पर अबैत जयताह शीघ्रे, ने तँ साँझ पड़ि जैतनि ।

सोनेझा : अपना जतऽ जैबाक होअऽ से जाह, ओ नहि जैतह ।

पंचमनि : ईह् हम जैब ने तँ की ?

सोना : जाह तँ हम देखैत छिअहु ।

[पंचमनि जाय लगैत अछि, सोनेझा मारऽ दौड़ैत छथिन चतुर्भुज पकड़ैत छथिन, पंचमनि पड़ाइत अछि, सोनेझा सब कड़ची पातकेँ उठाकऽ छीटऽ लगैत छथि, परदा खसैत अछि ।]

दोसर दृश्य

[स्थान- गामक स्कूल तीन व्यक्ति बैसल छथि, -चतुर्भुजक प्रवेश ।]

चतुर्भुज : आरो गोटे कतऽ जाइत गेलाह ?

एक-पंच : सब अपना-अपना काजक लेल चारू भाग छिड़िआयल छथि ।

दोसर : कोन काज अछि सभक ?

तेसर : औ चतुर्भुज बाबू ! परमिन्ट-तरमिन्टक काजमे जतेक कम लोक रहत ततेक नीक, अपने सब मिलि कऽ सब काज कऽ लेब सैह ठीक । जखन पंच भेलहुँ आ' अपनो लोकवेद नीक जकाँ खुसफैलसँ नहि रहल, दू पाइ बाइली प्राप्ति नहि, तखन तँ भाँड़ो छुइल आ' पेटो नहि भरल, की औ नेना बाबू ?

नेनाबाबू : अवस्से की ।

दोसरपंच : हमर तँ विचार होइत अछि जे चतुर्भुजबाबूपर भरि गामक लोककेँ विश्वास छैक, हिनका पड़ि गेलासँ सब काज सोझरयले अछि ।

चतुर्भुज : औ नेनाबाबू ! एहि बुद्धिजे गामक उन्नति होयब कठिन अछि । हमरा लोकनिक उपर बड़ भारी भार अछि, महात्मा गान्धी बड़ सूक्ष्म दृष्टिजे हमरा लोकनिक जीवनक अध्ययन कयने छलाह, ओ बुझैत छलथिन जे बड़े-बड़े नगरक अभ्युत्थानसँ भारतवर्षक जन-साधारणक जीवनउन्नत होयब असम्भव, एहि ठामक संस्कृति हमरा गामक कणकणमे मिलल अछि, तेँ हुनकर ध्यान भारतवर्षक गामपर गेलनि । हमरा लोकनिक सोझाँ

जतेक स्थावर जंगम पदार्थ अछि, सब हमरे अहाँक सुख सुविधा एवं आत्म विकासक साधन थिक, अतएव ई सिद्ध जे एहि निखिल भूमण्डलक सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्ये अर्थात् हमहीं अहाँ थिकहुँ, समस्त सृष्टिपर एक मात्र मनुष्यक अधिकर छैक आ' 'से मनुष्य अपना अधिकारसँ वञ्चित अछि' ई कथा महात्माजीक आँखिमे बड़ खटकलनि, ओ एही हेतुएँ सबसँ पहिने ग्रामोद्योग पर जोर देलथिन जकर प्रतीक थिक चर्खा ।

नेनाबाबू : अवस्से की ।

तेसर : चर्खासँ कोन उन्नति भेल ?

चतुर्भुज : चर्खा हमरा स्वावलम्बिता सिखबेत अछि, भोजनक चिन्ता हम अहाँ सब दिन करैत छी, मुदा वस्त्रक नहि ।

नेनाबाबू : अवस्से की ।

चतुर्भुज : अन्न, वस्त्र दूनू अत्यन्त आवश्यक वस्तु थीक, प्रत्युत अन्नक अभावमे दू चारि दिन प्राण धारण कऽ सकैत छी, मुदा वस्त्रक अभावमे एकोक्षण बितायब परम संकट, की तकर चिन्ता हम अहाँ करैत छी ?

दोसर पंच : नहि ।

चतुर्भुज : हमरा अहाँकेँ स्वतंत्र शब्दक अर्थ नहि लगैत अछि ।

नेनाबाबू : अवस्से की ।

चतुर्भुज : यदि हमरे अहाँक विचार पतित हो तँ स्वतंत्रता के लेत ? तेहना स्थितिमे सरकार जँ कोनो सुविधाक प्रबन्ध करत तँ हमरे अहाँक हाथेँ ! आ' हम अहाँ स्वार्थ साधनमे लागि जाइ तँ ई दोष सरकारक अथवा हमरा अहाँक ?

तेसर पंच : हँऽ मुदा...

चतुर्भुज : मुदा तुदा किछु नहि, बिनु हमरा सभक विचारेँ समाजक कोन गति ?

नेनाबाबू : अवस्से की ।

दोसर पंच : ई बात सब बुझैक तखन कि ने ?

तेसर : खाली हमरे अहाँक बुझने तँ हेतैक नहि, तखन बुड़िपनी करी जे अपनो दुःख काटी, आ' कि नहि औ !

नेनाबाबू : अवस्से की ।

चतुर्भुज : सब कोना बुझतैक ?

दोसर पंच : सैह कहू !

तेसर : हमरा अहाँक साध्य थिक जे सौंसे संसारक लोकके बुझौने फिरबैक, कहू औ !

नेनाबाबू : अवस्से की ।

चतुर्भुज : साध्य किऐक ने थिक । एकर कारण छैक अशिक्षा, जतेक शिक्षित लोक रहत ततेक एकर महत्त्व बुझतैक से जँ अधिकके शिक्षित बना' देल जाय तँ सब अपन-अपन उत्तरदायित्व बुझऽ लगतैक ।

नेनाबाबू : अवस्से की ।

चतुर्भुज : तेँ हमर विचार जे एकगोट निरक्षरता निवारक पाठशाला फोली ।

दोसरपंच : ओ कोना हेतैक ?

चतुर्भुज : जतेक लिखल-पढ़ल लोक छी से यदि प्रतिज्ञा करी आ' कमसँ कम दस व्यक्तिके शिक्षित बनाबी तँ एकसँ दस, दससँ सय, सयसँ हजार तुरत भऽ जायत । तेँ हेतु साँझ खन जे समय घूड़लग बितैत अछि से एही काजमे लगाबी तँ कोन क्षति ?

सब गोटे : कोनो क्षति नहि ।

(ई कहि सब उठि जाइत छथि, पट परिवर्तित होइत अछि)

तेसर दृश्य

[स्थान- नेनाबाबूक दलान, घूड़ पजारल अछि, चारि-पाँच व्यक्ति बैसल अछि, खोरनासँ घूड़के खोरैत-]

गूजन : नेवालाल ! ई आगि जे अछि अल्हुआ पकैबाक जोग ।

सन्तलाल : तऽ बड़ विलच्छन आगि अछि ।

नेवालाल : बूझल नहि छह-

बड़का घूड़क ओ भुम्हुर आगि
घोंसिआय दैत छल हृदय दागि,

गूजन : आगिमे पकौल आलूक साना महाग सोन्हगर होइत छैक ।

सन्तलाल : जँ कनेक सुच्चा कड़ु तेल रहैक ।

नेवालाल : आ' सेहो अँचारक ।

गूजन : आब सैह भेटब दुर्लभ ।

सन्तलाल : तऽ आइ छोटकनि काकाक आङनमे भोजमे बड़ी जे चिटचिटाइनि लगैत छल ।

नेवालाल : ताहिमे किछु सोनक दोष आ' किछु सोनारक ।

गूजन : से बात धरि ठीके, परसरमा बालीकेँ बड़ी रान्हहु नहि अबैत छनि ।

सन्तलाल : आ' ताहि परसँ टिपौरी की ।

गूजन : अदौड़ी भाँटा सेहो झौंसाइनि ।

सन्तलाल : आ' तिलक अँचार जेना बिलाड़िक.... ।

नेवालाल : दुर छी, अंचारोकेँ दूरि कयल ।

सन्तलाल : हौ ! तिल जे छनि भैअन काकाक धूर पर ।

गूजन : आ' घास ?

नेवालाल : ओहेन चण्ठ क्यौ गाममे अछि ?

(चतुर्भुज प्रवेश करैत)

चतुर्भुज : अहाँ लोकनि की करैत छी ?

सन्तलाल : पहाड़ ढाहैत छी ।

गूजन : रेलवी पर रोड़ा खसतैक ।

नेवालाल : कोन रेलवी पर ?

सन्तलाल : यैह चतुर्भुजबाबू अपना गामे दऽने रेल मङौथिन ।

(चतुर्भुज कनेक क्रुद्ध होइत छथि, किन्तु हँसमुख मुद्रा बनबैत-)

चतुर्भुज : अहाँ लोकनि चाही तँ हबाइ जहाज पर्यन्त आबि सकैछ ।

सन्तलाल : ओ उतरत कतऽ ?

गूजन : सौंसे बाधकेँ परती बनबा देथिन ।

चतुर्भुज : हटाउ एहि गप्पकेँ, हम जे कहब से करब ?

नेवालाल : भला कहू ।

सन्तलाल : अपना गामक महात्मा गान्धी यैह छथिन की ।

गूजन : दुर बूड़ि ताहूसँ बेसी, ई तँ जमाहिरे लाल.... ।

(सब ठहाका मारि हँसैत अछि, नेनाबाबूक प्रवेश)

नेनाबाबू : चलैत चलह उपर, जे-जे पढ़बैत छथुन से-से पढ़ह ।

(सब दलानपर जाइत अछि)

चतुर्भुज : पढ़ैत जाउ !

सन्तलाल : अहाँ पढ़ाउ ने ।

गूजन : आब एहि बुढ़ारी बयसमे हि हिं हिं हिं ।

सन्तलाल : कपारक लिखलाहा ।

चतुर्भुज : **(पाटी पर किछु लिखि कऽ)** तरटेका कऽ ।

सन्तलाल : तट्टेका कऽ ।

गूजन : आ' दूर बूड़ि तऽर टेका कऽ ।

सन्तलाल : नहि भेलह, कयलह तँ जन्मभरि महिंसवारि तखन होयतह कोना, कहक तऽर टेऽकाऽ कऽ ।

(सब ठहाका मारैत अछि, सोनेझाक प्रवेश)

सोनेझा : ऐँ हौ चतुर ! एहीसँ जीवन चलतह ?

सन्तलाल : सोने काका ! अहूँ थोड़े पढि लिअऽ ।

गूजन : अहींक बेटा मास्टर तखन अहाँकेँ कोन कम्मी ?

सन्तलाल : जकरे माय मरैक तकरे पात भात नहि ?

गूजन : अहाँक गुरुक सप्पत थिक ।

चतुर्भुज : बेजाइए कोन ?

सोनेझा : हँ हौ चतुर ! छौंड़ी सिखाबै बुढ़ दादीकेँ ?

नेनाबाबू : सोने काका ! क्षति कोन ? आउ थोड़ेक पढ़ा' दैत छी ।

सोनेझा : हे लैह **(कहि बैसि जाइत छथि)** हौ आजुक छौंड़ा केँ सलाइ तँ नहिने कीनऽ पड़तैक ।

गूजन : से किएक सोने काका ?

सोनेझा : आब सब अपने आगि मुतैत अछि तखन... ।

(सब ठहाका दैत अछि)

सन्तलाल : सोने काका लिअऽ भट्ठा ।

(सोनेझा भट्ठा धरैत छथि)

नेनाबाबू : पढ़ू ! क' ख' ग' घ' ङ' ।

सोनेझा : कखगघ उवाँ ।

नेनाबाबू : उवाँ नहि ङ'

सोनेझा : न

नेनाबाबू : न' नहि, ङ ।

सोनेझा : गं, ।

नेनाबाबू : गं नहि, नाक लऽकऽ कहिऔ ।

सोनेझा : नाक लऽक.. ?

नेनाबाबू : हँऽ, क' ख' ग' घ' नाक लऽकऽ ङ' ।

सोनेझा : क खऽ ग घ, नाक लऽकऽखुँ:

(सब ठहाका मारैत अछि)

सोनेझा : (सबकेँ डटैत) बुड़ि सटही सब नहिंतऽ, ठि ठि ठि ठि ? काल्हि जँ सब नहिं सुना दी तँ सोने नाँव नहि ।

सन्तलाल : काल्हि की ? आइ सुनाबी तँ बूझी मर्द ।

(सोनेझा पहाड़ा पोथीपर थोड़ेक काल आङुर फेरि कऽ एक स्वरेँ क' सँ क्ष, पर्यन्त पढ़ि जाइत छथि)

सब : वाह रे सोनेकाका....

सोनेझा : कनेक आरो थम्हह, **(थोड़ेक काल ठोर पट-पटबैत छथि पुनः कव्विर काने कऽ कांचून काऽ सँ लऽ दू बन्ना दू पासी कः धरि, स्वरमे पढ़ि जाइत छथि ।)**

सब : वाह रे सोनेकाका वाह, वाह ।

सोनेझा : हौ मनुक्ख जे चाहय से कऽ सकैत अछि । आब एकबार नहिं पढ़ी तँ मोंछ ने राखी... ।

(सब हँसैत अछि, परदा खसैत अछि)

[रचनाकाल 1953 ई.]



आधुनिक पाठ्य-प्रणाली

पात्र-परिचय

बुद्धन : अधवयसू, ग्रामीण वेशभूषामे

बचकानी : अधवयसू, ग्रामीण वेशभूषामे

नूनू : स्कूली छात्र, बुद्धनक बालक

सोनू : स्कूली छात्र, बुद्धनक बालक

सयनू : स्कूली छात्र, बुद्धनक बालक

नेनमणि : प्रगतिशील विचारक ग्रामीण

[पाकल केश, ठेहुँन धरि धोती, देहमे गोल गला गंजी, कान्ह पर अंगपोछा, ऊर्ध्व पुण्डक उपर अर्ध चन्द्र सन चानन, भयंकर त्रिपुण्ड, सिन्नुरक ठोप, गराँमे डबलका दानावला रुद्राक्षक माला पहिरने बुद्धनक प्रवेश]

बुद्धन : एकटा बड़ पुरान कहबी छैक जे पेट काटि कऽ पोसल पूत, सैह पूत कहय फलामा भूत, तकरे परि अछि अपना देशमे । बेचारे गान्धीबाबा कोन-कोन दुख कटलनि एहि सोराजक हेतु से वैह जनैत छलाह, तखनतँ भेल सोराज आ' ताहि सोराजक ताल देखि तँ किछु फुरिते नहि अछि, एहुना होइत छैक ?

(बचकानी-छोट खुटक लोक, गाल पर पैघ 'अइला', फ्रेंच 'कट' मोंछ, हाफ शर्ट पहिरने, श्रीखण्डक झाड़ चानन एक धारी आ' सीकी कोरसँ सिनुरक बिन्दी ।)

बचकानी : **(प्रवेश कऽ)** बुद्धनकाका कोन ताल देखि कऽ किछु नहि फुरैत अछि ?

बुद्धन : हौ बचकानी ! तोरा सभ तँ नेना छह । ओ सभ दुनिञा नहि देखलहक तखन की बुझबहक ?

बचकानी : बुझौने ने बुझबैक । बुझिते तँ क्यो जन्म नहि लेलक अछि ?

बुद्धन : हौ ! भैया कका कहथिन जे पहिलुका लोक सब पढ़बाक लेल जाय काशी, जखन सौंसे शास्त्र पढ़ल भऽ जाइक तँ आबय देश आ' महाराज साहेबक ओहि ठाँ होइक परीक्षा धोतीमे–

बचकानी : धोतीमे कोना परीक्षा होइक ? हा हा हा हा... !

बुद्धन : बस, दाँत छह संगमे निपोंड़ि देलह । मुँह छह अपन की हँसि उठलाह, तोरो बुड़ित्व जिनगी भरि छुटतह नहि ?

बचकानी : उँ हूँ... धोतीमे कोना परीक्षा होइक ?

बुद्धन : लोक महाराजक ओहि ठाँ परीक्षा देल करय आ' पास करय तँ साटीपिटीमे महाराज अपने हाथेँ धोती देथिन ।

बचकानी : आ' जे फस्ट करय तकरा ?

बुद्धन : फस्ट करय तँ दोशाला ! मुदा जखन तीर्थ, आचार्य इन्टरेंस ई सब परीक्षा चललैक तँ लोक साले-साले परीक्षा देल करय, पास करय की फेल करय ।

बचकानी : एखनो तँ से होइते छैक ।

बुद्धन : हौ नहि बूझल छह । आब तँ परीक्षा भऽ गेल सत्यनारायणक पूजा-सँकरातिञे-सँकरातिञे ।

बचकानी : हँ औ काका ! से कोनो बेजाय नहि कहलहुँ, ई बात तँ हमरा मने ने छल सत्यनारायणक पूजामे तँ अपवादो छैक जे 'अभावे शालि चूर्णं वा' मुदा एहिमे ताहि सबसँ काज चलऽबला नहि, एहिठामतँ एकदम बस 'रम्भा फलम् घृतं क्षीरम्' आ' से जँ नहि भेल तँ...

बुद्धन : तखन मास्टर लोकनि धिया-पूताकेँ 'गोधूमस्य च चूर्णकम्' बना देथि ।

बचकानी : बाप रे ! से धरि सत्ते, छोट-छोट नेना सब हक्कर पेलैत चढ़ले भानसमे सँ काँचे-कोचिल खा कऽ तीन-तीन कोस दौड़ल जाइत अछि आ' सुनैत छिऐक जे स्कूल पर एकरा सबसँ टकुरी-चर्खा कटबबैत जाइत छैक ।

बुद्धन : सैह बूझह, ई लूरि बेटी ने सीखय जे जनउ काटत आ' बेटाकेँ की सासुर बसबाक छैक ?

बचकानी : औ बुद्धन कका ! कोदारि-खुरपी सेहो चलबबैत छैक ।

बुद्धन : ई सोन सन-सन नेना सबसँ कोदारि चलबाओल जाइक । ई उचित थिकैक ?

बचकानी : आ' ताहू परसँ एक जपाल आर...

बुद्धन : हँ हौ, गोड़ दशेक मोटकी कोपी लदने जाइत अछि आ' लदने अबैत अछि, एना तँ नेना सभक करेजे ने टूटि जाइक ?

बचकानी : नेना सभक करेज तँ आगाँ पाछाँ टुटतैक, अपन करेज तँ कागत आ' पोथी कीनैत-कीनैत एखने टूटि रहल अछि ।

बुद्धन : हौ जी बचकानी, तोँ तँ जनिते छह जे हम जीहक पातर लोक छी, कनेक चटनी भेल ताकय, झूर कऽ तरल कनेक मेरचाइ हो... ?

बचकानी : हँ से तँ ठीके । दूध, दही, घीक सङे ने अन्न ससरैत छैक आ' से तँ भऽ गेल सपना, तखन जँ चहटगर वस्तु नहि होइक तँ लोकके कोना ससरतैक...

बुद्धन : मुदा खुट्टा पर दू टा बड़द अछि, ओकरा पन्हैबाक तँ कोनो टा आशा नहि । आ' ई छौंड़ा सब, सब दिन चढ़ले भानसमेसँ खा कऽ स्कूल जाइत अछि । भानस कैनिहारिक मोन नङो-चङो भऽ गेने कथी लय कहिओ रुचिगर अन्न सोझाँमे आबि सकत ।

बचकानी : बुद्धन कका ! अहाँक गप्प तँ बूझि पड़ैत अछि जेना हमरे पेटसँ बहराइत हो, यैह ताल अछि हमरो आङनक । जँ ईहो सार्थक होइत तँ एकटा बात छल, सेहो तँ देखैत छी जे स्कूलोमे पढ़ौनाइसँ बेसी कोदरिवाहिए होइत छैक । हमरा छोटकनिक हाथमे ठेला भऽ गेलैक अछि ।

बुद्धन : मन निचैन छह ?

बचकानी : निचैन तँ जा धरि जीबैत रहब ता धरि नहिञे हैब तखन जखने बूझी तखने निचैन ?

बुद्धन : हौ, मनमे एकटा मनूसबा बन्हने रही, मुदा आब की कहिअह– 'मनक मनोरथ मनहि बेतित भेल, आन करैत भेल आन हो रामा' !

बचकानी : आ' हमर मनोरथ तँ बाओग करबाक योग खेसाड़ी जकाँ फूलिकऽ मनेमे अंकुरा गेल अछि ।

बुद्धन : हौ ! सोचैत छलहुँ जे नूनूकेँ ओकालति पढ़ायब, सोनूकेँ कलक्टरी आ', सचनू केँ पण्डिताइ आ' मङनूकेँ डाकदरी ।

बचकानी : हँऽ औ' बुद्धन कका ! अहाँकेँ तँ भगवान् चारिटा बेटा देने छथि, बोनिञे करत तँ चारि चौका सोड़ह सेर, मुदा हमरा तँ एखन एके टा पेंपी अछि आ' हमहूँ मनसूबा बन्हैत रही जे एकरा लिखायब, पढ़ायब बुढ़ारीमे ई कमा कऽ टाल लगा देत, बथान पर महींस राखब आ' छाल्ही संग फुलकीकेँ पनपिआइमे दुख देल करबैक आ' घिउमे तरल तिलकोड़केँ ओरिया कऽ दाँत त्तर देबैक जे कुड़कुड़ा कऽ भरकुस्सा भऽ जायत ।

बुद्धन : हौ बचकानी । कहैत छलहुँ जे ई छौंड़ा सब कमा कऽ अमार लगा देत ।

बचकानी : से तँ सत्ते, डाकदर जँ होइत तँ एक रत्ती नाड़ी छुबितनि की धरा लितनि सोड़ह रुपैआ । एँह....

बुद्धन : कही जे तखन ई लङटवा सब, जे एखन कनडेरिञे तकैत अछि, सेहो कहत-परनाम बुद्धन बाबू ।

बचकानी : काका ! बिनु धारने परोपट्टाक लोक बहिया बनल रहैत, मुदा हाय रे कर्म ! कहबी छै जे 'बहिरा नाचय अपने तालेँ' तकर परि छैक आइ-काल्हि !

बुद्धन : तऽ, ककरा की बितैत छै से पुछारि के करैत अछि, खाली भोट लेबाक दिनमे सात बेरकऽ पुछारी ।

(नूनू प्रवेश कऽ)

नूनू : बाबू हम स्कूल नहि जायब ।

बुद्धन : से किऐक ?

बचकानी : कुकुरमाछी कटैत हेतनि ।

नूनू : हमरा पथिआ-खुरपी कहाँ कीनि देलहुँ ?

बुद्धन : तोरा घास छिलबाक छह ?

नूनू : नहि, कस्तर मस्तर उठायब आ' खेतमे रामझिमनी रोपब ।

बुद्धन : कस्तर-मस्तर उठैबह ?

नूनू : हँ, समाज-सेवाक घंटीमे ।

बुद्धन : घंटीमे आ' घंटामे, समाज-सेवा करऽ चलल छथि ? माय-बापकेँ बङौर लगा कऽ उपस्थिते ने करैत छथि आ' समाज-सेवा करऽ चलल छथि ? अभागल नहि तन । रामझिमनी कतऽ रोपबह ?

बचकानी : बड़का डोंड़ामे एहि बेर रामझिमनिञे, किने हौ नूनू ।

नूनू : उँहूँ... स्कूलक खेतमे ।

बुद्धन : बूड़ि कहाँ केर, हमर खेत बटाइ जोतय आन आ' ई स्कूल पर खेत बटाइ करैत छथि ?

नूनू : बटाइ करैत छी की मास्टर साहेब कहैत छथिन ?

(सोनू प्रवेश कऽ)

सोनू : बाबू ! हमरा चरखा कहाँ भेल ?

बुद्धन : हौ तोँ मसोम्मातक बेटा थिकाह जे चर्खा लेबह । ओ तँ गान्धीबाबा एकटा रास्ता देखा गेलथिन जे राँड़, मसोम्मात अपन गुजर करत, जकर जीवन पहाड़ छैक, आ' तोरा कथीक चिन्ता छह ? कोन वस्तुक कम्मी छह ?

सोनू : मास्टर साहेब सब कहैत छथिन..

बुद्धन : साफ-साफ कहुन जे हम मसोम्मातक बेटा नहि छी, अहाँकेँ जनउक खगता हो तँ से कहू, हम गाम पर सँ नेने आयब ।

(सचनूक प्रवेश)

सचनू : बाबू ! हमरा कोदारि कहाँ भेल, हम खेतीक घंटीमे कोना काज करब ?

बुद्धन : रे राक्षस सब ! तोरा सबकेँ सनक सवार भेल छौक ? अभागल सब ! पोथी लेताह, पतड़ा लेताह, कागत-पिलसिम लेताह से नहिञे, तँ पथिआ, खुरपी, कोदारि, चर्खा । विधाता जे कपारमे भोथहा कलमसँ घसि देलथिन तकर कोन उपाय ? आब नाकदम ठेकि गेल ।

बचकानी : औ बुद्धन कका ! अहाँ नेना सब पर बेकारे ने तमसाइत छिऐक, ई की अपना मने कहैत अछि ?

बुद्धन : मास्टरे सबकेँ ई कोन सनक सबार भेल छैक, नहि पढ़यबाक छैक तँ छोड़ि दौक । मास्टरक कोनो कम्मी छैक ? लिखले-पढ़ल लोक तँ आइ काल्हि सस्त अछि, एक बजाबय चौदह आबय ।

बचकानी : औ ! मास्टर सबकेँ तँ अपने नाकदम ठेकल छैक, की करत बेचारा सब, एहन रङताल तँ देखने ने छलिऐक, एना कतहु पढ़ाइ होइक ?

बुद्धन : हमरा तँ आब किछु फुरिते ने अछि । हमरा धिया-पुताकेँ पढ़ैबाक अछि की गृहस्थी सिखैबाक अछि ?

बचकानी : आब तँ ने पढ़त ने गृहस्थ होयत, पाँच वर्षक बाद अगबे बनहुल्लुक गाममे पसरि जायत, ने वानर ने मनुक्ख !

(नेनमणि प्रवेश कऽ)

नेनमणि : बुद्धन भाइ ! मोन बड़ लोहछल देखैत छी, की कोनो नव बात भेलैक अछि ?

बुद्धन : हौ नेनमणि ! तोँ बड़ बेरिपर अयलाह । तोँ तँ संसार भरिक हाल चाल पढ़ैत छह; जनैत छहक । ई बात कहह जे गान्धीबाबा जे सोराज लेलनि से एही लेल जे बाप चाहय बेटाकेँ पढ़ाबी आ' मास्टर सब ओकरासँ घास छिलबथिन ?

नेनमणि : के कहलक अछि ई सब बात ? सुनू आब की पुरनका जमाना छैक जे लोक एके शास्त्रकेँ घसैत रहत ? आब तँ देश स्वतंत्र भऽ गेलैक, आब जे पढ़ैत अछि से ज्ञानक लेल...

बुद्धन : हौ जी ! हमरा होइत छल जे तोँ मनुक्ख भेलह, बात बुझैत हेबहक, एकबार-तेकबार पढ़ैत छह तँ बुद्धि नीक भेल हेतह मुदा तोँ तँ बाबू सिलौटोकेँ जितने छह ।

नेनमणि : बुद्धन भाइ ! जा' धरि अङरेजक राज छलैक तावत जे लोक पढ़ैत छल से खाली नौकरी करबाक लेल आ' सरकार जे पढ़बैक सेहो ताही लेल मुदा...

बुद्धन : आब लोक पढ़ैत अछि ढहनैवाक लेल, लिखलक-पढ़लक ढहनायल फिरल आ' अन्तमे...

नेनपणि : नहि, आब लोक पढ़ैत अछि ई ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु जे साफ-सुथरा रहने लोककेँ की लाभ छैक... ।

बुद्धन : आ' सातबेरि कऽ केश फेरने की लाभ...

नेनपणि : अहाँकेँ एखन क्रोध भेल अछि तेँ एहि रहस्य दिश ध्यान नहि जाइछ । मुदा सुनू तँ, जतेक लोक पढ़ैत अछि से सब नोकरिए करय तँ एतेक नोकर राखत के ?

बुद्धन : से तँ बूझल, मुदा तैओ तँ सब वर्ण पढ़नाइए शुरू कयलक अछि ।

बचकानी : अपन-अपन जे व्यवसाय छैक, से करैत तँ आब लोककेँ लाज बुझना जाइत छैक ।

नेनमणि : तकर कारण ई छैक जे हमरा लोकनि बहुतदिनसँ परतंत्र छलहुँ तेँ पढ़बाक की अर्थ होइत छैक से बुझिते ने छलिऐक ।

बचकानी : लिखलक-पढ़लक नोकरी तकलक, सैह होइत छल ।

नेनमणि : हँऽ, मुदा नोकरीसँ तँ कमा कऽ आनत टाका आ' टाका चूरि कऽ क्यो खायत नहि, खायत तँ अन्ने ।

बुद्धन : हँऽ, से तँ ठीके, मुदा अन्नक हेतु धरती कोड़ऽ पड़ैत छैक ।

नेनमणि : तेँ ने धिया पुताकेँ कोदारि-खुरपी कहैत छैक चलबऽ ।

बुद्धन : ई गामे पर किऐ ने करत जे स्कूलमे जा कऽ करत ।

नेनमणि : असलमे मनुष्यकेँ कोना बजबाक चाही, कोना ठाढ़ होयबाक चाही, कोना बैसबाक चाही, ककरा सङे कोना व्यवहार करबाक चाही, अपने साफ सुथरा रहने कोन लाभ, घर-आङन, घाट-बाट साफ रखने की फल, ईहो सब तँ सिखबाक वस्तु थिकैक आ' से गाम पर कोदारि भँजने नहि होयतैक ।

बचकानी : तखन एकर अर्थ भेल जे लिखि-पढ़ि कऽ घोड़ीक घास छिलैत जाथु ।

नेनमणि : ई कतऽ लिखैत छैक जे लिखि-पढ़ि कऽ नोकरीए करी ?

बुद्धन : मुदा ई बूझल जे एतेक बात सिखबाक चाही से बड़ बेस, मुदा ई टकुरी, ई चर्खा...

नेनमणि : आहि, बुद्धन भाइ ! ई सब तँ गृहोद्योग थिकैक, सबकेँ ने खेते-पथार आ' ने सबकेँ नौकरी होइत छैक, तखन जँ आन लूरि सिखने रहत तँ भीख नहि माङऽ पड़तैक, अन्न वेत्रेक मरत नहि ।

बुद्धन : एक दिस तँ सब जाति अपन लूरि बिसरि रहल अछि आ' दोसर दिस चललाह अछि लूरि सिखबऽ से चलतह ?

नेनमणि : से जा धरि परतंत्रताक गन्ध रहतैक ता धरि अवश्य किछु ई सब हेतैक । असलमे बुद्धन भाइ !

बचकानी : आ' कम असलमे... ?

नेनमणि : आ' दुरछी, अहाँ तँ सब दिनक नकसुड़ारि छी । हँऽ, बुद्धन भाइ ! पहिने लिखलाहा-पढ़लाहाकेँ कने जहाँ कोनो नोकरी भेटि गेलैक की गुमाने फाटऽ लगैत छल । बुझू नोकरी कोनो वरदान होइक । मुदा ई परतंत्रताक प्रसाद छलैक । आब तँ लोक पढ़त जे कोना स्वावलंबी बनी, कोना सहयोगिताक भाव समाजमे भरी, कोना सेवा करबाक अभिलाषा लोकमे जगाबी, राष्ट्रक प्रति अनन्य प्रेम कोना उत्पन्न करी, ई सब ने थिकैक शिक्षाक उद्देश्य ।

बचकानी : आ' बसात पीबि कऽ कोना जीबि सकैत छी ।

नेनपणि : अहाँ सन अथाहकेँ बसातो पीबि कऽ जीबाक अधिकार कोनो स्वतंत्र देशमे नहि छैक । बुद्धन भाइ । युग बड़ तेजीसँ ससरि रहल छैक, आब बड़ तरक ब्रह्मबाबा कोशीक बाढ़िकेँ नहि रोकि सकैत छथि, ताहि हेतु विज्ञानक शरण लेबऽ पड़त । अहाँ लोकनि पुरनका मनोवृत्तिकेँ छोड़,, युग जे आगाँ बढ़ि रहल छैक ताहिमे सहयोग दिऔक ।

बुद्धन : हौजी ? बड़े छँटलह । बाज अयलहुँ तोरा सङ्ग शास्त्रार्थ करबासँ ।

नेनमणि : बुद्धन भाइ ! कनेक ध्यान दिऔक तँ हमरा गप्प पर, बड़का टा पाँतरमे पड़ल रही, संगमे हजार टाकाक नोट रहय, मुदा अन्न एको चुटकी नहि आ' पेटमे ज्वाला धधकैत रहय, तँ अन्न चाही की नोट ? नोट चटने ओ ज्वाला शान्त होयत ?

बुद्धन : से कतहु होइक ।

नेनमणि : तहिना मानसिक विकास कतबो भेल रहैक, बौद्धिक योग्यतामे सबसँ उँचका स्तर पर पहुँचल रहय, मुदा शरीरिक ह्रास एतेक भेल रहैक जे घुसुकि नहि सकैत हो, बाजि नहि सकैत हो तँ ओ पण्डिताइ काज औतैक ?

बुद्धन : से तँ नहि औतैक ।

नेनमणि : एकटा युग एहनो अयलैक जे लोककेँ अपन काज अपना हाथेँ करबामे संकोच होइक ।

बचकानी : एना ने कहूँ, जे जेहन अथबल से तेहन पैघ लोक ।

नेनमणि : बहुतो पुरान विचारक लोक एखनो समाजमे छथि, जनिका नदी दिससँ आबि कऽ लोटा मटिऐबामे हीनताक बोध होइत छनि ।

बचकानी : औ ! उपाय रहितनि तँ शौचौ ने करतथि अपना हाथेँ, मुदा करताह की ?

नेनमणि : ई बड़ पैघ भ्रम लोकक छलैक जे शारीरिक श्रम करब उपहासक बात थीक । धन्य शारीरिक श्रम कैनिहार सब, जकरा प्रसादेँ बाबू भैया ढेकरैत रहैत छथि ।

बचकानी : आ' हाकिम की हुकमान सब कुर्सी तोड़ैत छथि आ' बड़े कष्टसँ रसगुल्लाकेँ दुःख देल करैत छथिन ।

नेनमणि : आजुक युग लोकके मानसिक संग शारीरिक श्रम करब सिखबैत छैक । तेँ हेतु नवीन-शिक्षा प्रणालीमे एहि सब बातक अँटाबेस भेलैक अछि । आब तँ ई बूझक चाही जे जेना हाथ कमाइत अछि, मुँह अन्नकेँ चिबाबऽमे खटैत अछि आ' बैसल-बैसल पेट ओकरा पचबैत अछि तँ पेट नहि पैघ भेल, हाथो मुँहक सैह स्थान ।

बचकानी : इह एहेन बुद्धि धिया-पुता सभक होइक तखन तँ स्वर्ग भऽ जाय ।

बुद्धन : हौ जी बाबू ! जे नीक बुझि पड़ैत जाह से करैत जाह, हमरा सभतँ पाकल आम भेलहुँ । दू-चारि दश वर्ष जीव की नहि । मुदा युग जे ने कराबय, जे ने देखाबय ।

बचकानी : सुनल नहि अछि 'जीबी तँ की की ने देखी, 'युग चक्रे' परमान दैत अछि' ?

(परदा खसैत अछि)

[रचनाकाल - 1954 ई.]



श्रमदान

पात्र-परिचय

ज्ञानधन : नवयुवक सामाजिक कार्यकर्त्ता

निरसन : प्रौढ़ ग्रामीण

जयराम : प्रौढ़ ग्रामीण

सुन्दरलाल : प्रौढ़ ग्रामीण

बबुजन : प्रौढ़ ग्रामीण

श्रमदानी (एक)

श्रमदानी (दू)

श्रमदानी (तीन)

श्रमदानी (चारि)

[स्थान– ग्राम पथ, एक गोटा गर्दनिमे डिगडिगिया, एक व्यक्ति खद्धड़क पोशाकमे प्रवेश करैत]

ज्ञानधन : महात्माजीक तपस्यासँ हमरालोकनिकेँ राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त भेल, मुदा आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करबाक हेतु आइ व्यक्ति मात्रकेँ फाँड़ बान्हऽ पड़त। ढोलियासँ-बजा रे ! ढोल बजा। **(ढोलिया बजबैत अछि डिग् डिग् डिग्)**

ज्ञानधन : देशक एक-एक गोटेसँ निवेदन अछि जे निर्माण कार्यमे तन-मन-धनसँ सहायता करू। श्रमदानक भूखलि भारत माता अहाँक आह्वान कऽ रहलि छथि। **(क्रमहिं लोक गोट-पगरा एकट्ठा होमऽ लगैत अछि)** एकत्र भेल व्यक्तिमेसँ एक गोटे–

निरसन : औ ज्ञानधन बाबू ! कथीक ढोलहो पिटबौने फिरैत छी ?

ज्ञानधन : देशक दरिद्रताकेँ दूर करबाक हेतु सब गोटे फाँड़ बान्हू आ चलू कोशीक दूनू कछेड़केँ तेना कऽ बान्ही जे बाढ़िक पानिसँ भसिआइ नहि ।

जयराम : एना जँ कँछेँड़केँ बन्हने बाँढ़ि बन्न होअँऽ लागय तँ अनर्थ हैत । अहाँ लोकनि जेना एँकराँ खेँड़ि बुँझइँ जाँइ छिअइँ से कोँसी मैयाँक परँताँप नहि बूँझल अछि । तँरैँ-तँरैँ खंघारि कँऽ घँर दुआँर सँबकेँ चाँटि लेतीह खोँप संहित कँबुतराँय नमः भँऽ जाँइ जैंब ।

(ई सब ठाम नकिऐताह)

निरसन : मनुक्खकेँ एखन बड़ दिमागि भऽ गेल छैक जे हम सब जे चाहब से चट दऽकऽ लेब, मुदा एतबा ज्ञान नहि जे ओ बुढ़बा जे कैलास पर बैसल अछि तकरो हाथमे किछु छैक ।

ज्ञानधन : अवश्य ओहि बूढ़ानाथ भोलेनाथक हाथमे सब किछु छनि, ओ जे चाहथि हेतैक सैह । आ एखन ई बुझबाक चाही जे ई बुद्धि जे हमरा लोकनिकेँ फूरल अछि सेहो हुनके प्रेरणासँ, हुनके कृपासँ । हमरा लोकनितँ आस्तिक छी, गाछ वृक्ष सँ लऽ माटि पाथर धरिक पूजा करैत छी । कोटि-कोटि कंठसँ कोशी मैयाक आगाँमे ठाढ़ भऽ हुनकर प्रार्थना करबनि, अपन दुःख सुनैबनि तँ ओ अवश्य सुनतीह । विश्वास राखि कऽ यदि काज आरम्भ करी तँ सफलता ईश्वर अवश्य देताह ।

जयराम : (नकिआइत) एना जौं कोँसी मैंयाँ सुनथिँ तँ जुँलुँम्मे थौँक, हुनकाँ बुते अँधलाँह जहाँधरि हैत से भँऽ सँकैत अछि, नींक कँरबाँ लेल ओ कतहु सूँनथि, पाँनिक धार कतहुँ मनुक्खँक दुँक्ख सुनलकँइ अछि ?

ज्ञानधन : की नास्तिक बनि कऽ रहू अथवा आस्तिक बनि कऽ । कहू की बनि कऽ रहब ?

जयराम : पहिने नास्तिक ।

ज्ञानधन : तखन सुनू, नास्तिक ईश्वर पर विश्वास नहि राखि अपना शक्ति पर भरोस रखैत अछि । चारि कोटि बिहार निवासी यदि लागि जाइ तँ एक दिनमे कोशी बान्हि लेब ।

जयराम : तँखन हँम आस्तिकेँ रँहब ।

ज्ञानधन : बेस, तखन सुनू– महाकवि विद्यापति अन्तःकरण सँ गंगा माताक आह्वान कैलथिन तँ गंगा माता अपना भक्तक आर्त्तवाणी सुनि आकुल भऽ गेलीह आ दौड़ल अयलथिन अपना भक्तक मनोरथ पूर्ण करबाक हेतु, तखन हमरा लोकनि एक स्वरसँ कोशी मैयाक प्रार्थना करबनि तँ ओ किएक नहि सुनतीह ?

निरसन : औ ज्ञानधन बाबू ! एकटा बात पहिने कहू जे बाढ़ि मे जे ओतेक पानि अबैत छैक तकरा अहाँ रखबैक कोना कऽ, कतऽ कऽ ?

ज्ञानधन : सबटाक व्यवस्था हेतैक । चारू भाग नहरि बना कऽ जेमहर पानिक काज पड़तैक तेमहर लऽ जेबैक । मुख्य केन्द्र पर बिजुलीक उत्पादन हेतैक, घर-घरमे लक्ष्मी खल-खल हँसैत रुनझुन नचैत भेटतीह । साहस करू, फाँड़ बान्हू, उठू, कहू कोशी माताक जय हो ।

(सब एक स्वरसँ कोशी माताक जय हो)

(पट परिवर्तित)

दोसर दृश्य

[स्वयं सेवकक दल कान्ह पर कोदारि, काँख तर छिट्टा नेने गबैत प्रवेश करैत अछि]

भारत माता आकुल मनसँ मङइत छथि श्रमदान रे
फोलह आँखि, उठह तोँ आबहुँ कोटि कोटि सन्तान रे,
आइ मनुक्खक सोनित पीबक हेतु बहुत तैयार रे
आतुर आँखि तकइ अछि टकटक हमरे दिश संसार रे
मानवमे दानवता दमसय जकरा गर्व अपार रे
दलितक नाव पड़ल चक्करमे आबि लगाबह पार रे
पहिने हृदयक साहस समटह पुनि सुमिरह भगवान रे
भारत माता आकुल मनसँ मङइत छथि श्रमदान रे
छी स्वतंत्र, नहि भऽ सकलहुँ अछि तदपि पूर्ण स्वाधीन रे,
दुख दारिद्र्य हटल नहि, सकलहुँ गाबि न राग नवीन रे,
अपना पैरक आश एखन धरि कय न सकल जन दीन रे
हमरे बजबऽ पड़त ताहिपर जगमे शान्तिक बीन रे
संसारक उत्थान करक हित करह अपन निर्माण रे
फोलह आँखि, उठह तोँ आबहुँ कोटि मनुज सन्तान रे,

एक-श्रमदानी– हम श्रमदानी अपना श्रमसँ करब जगक उद्धार
दोसर– श्रमक सिखाकऽ पाठ करब नित नव जीवन संचार ।
तेसर– मनुज अपन थिक भाग्य विधाता देखि लेत संसार ।
चारिम– हम श्रमदानी अपना श्रमसँ बान्हब कोशी धार ।
सब गोटे– भारत माता आकुल मनसँ मङइत छथि श्रमदान रे
फोलह आँखि उठह तोँ आबहुँ कोटि मनुज सन्तान रे (प्रस्थान)

तेसर दृश्य

सुन्दरलाल : (प्रवेश कऽ) की ई छौंड़ा सब रङ़ धुम्मस कैने फिरैत अछि ? दम्म ने दुरुस्त खाली बात पकठोसल ।

बबुजन : आहि रे बा ! किछु काज मेहनतिसँ होइत छैक तँ किछु फुफकारोसँ, से ई इसकुलिया छौंड़ा सब काज करत से तँ भगवाने जनैत छथिन, तखन चल भाइ हूलेलेले ।

सुन्दरलाल : सुनैत छिऐक जे सरकार दिससँ इसकुलिया छौंड़ा सबकेँ किदन सिखाओल जाइत छैक । आब सरकारकेँ जहाँ कतहु नहर छहर, बान्ह धूर बनैबाक काज पड़तैक की सब छौंड़ाकेँ जोति देल करतैक । कीदन एकर नाम धैने छैक ए.सी.सी. ।

बबुजन : आब सीसी रहौ की बोतल, मुदा एकटा बात अवस्से जे इसकुलिए सबकेँ खूब हूथबण्डा उठौने रहैत अछि । सब बड़े चुरकीपरसँ तेल चुअबैत रहैत छलाह अछि, एक मुट्ठी नार-पोआर कोनो मालक सोझाँमे कहैत छलिऐक देमऽ की छिलमिला उठैत छल आ आब तेहेन ने नम्बर केर लोभ मास्टर सब देने छैक जे सब नाङड़ि सुटकबैत सब काज करबा लेल वृत्त रहैत अछि ।

सुन्दरलाल : जे सोचलक ई बात से बड़ बुधियार छल । देखहक आब पढ़ैत छैक बारहो वर्णक धिया पूत, सबकेँ नोकरी भेटतैक नहि, तखन सब बेकार भेल गामपर एहि खोन्हीसँ ओहि खोन्ही ढहनाइत फिरैत छल से तँ नहि ने हेतैक ।

बबुजन : मुदा एकटा बात जे कोशी बन्हबाक काज एकरे सबसँ हेतैक ?

सुन्दरलाल : ई सब तँ एकटा लोकमे उत्साह अनबाक हेतु होइत छैक । असलमे एहि काजक हेतु देशक बड़का-बड़का नेता सब जी जान लगौने छथि । सुनहलक नहि जे राष्ट्रपति अपने आयल छलथिन कोशी बान्ह देखबाक लेल ।

बबुजन : बहुत बाबू भैया कहैत छथिन से सरकार एकटा टाटक ठाढ़ कैलक अछि। जतेक काज होइत छैक ताहिसँ बीस बड़ बेसी एकबारेमे बढ़ा-चढ़ाकऽ लोक छापि दैत छैक ।

सुन्दरलाल : आ' बहुत लोक कहैत छैक जे टुटपुजियासब एहि बेरमे बड़का नेता बनऽ चाहैत अछि जाहिसँ अगिलाबेरक चुनावमे कांग्रेसकेँ टिकट देबऽ पड़तैक ।

बबुजन : ततबे नहि, बहुत गोटाक अनुमान छनि जे एहि लाथेँ बहुत लोक अपन टेंट नीक जकाँ गरमा लेबामे लागल अछि ।

जयराम : (प्रवेश कऽ नकिआइत) सेँ कोनो फूँसि नहिं जे बुँड़िबँलेल छँथि सेँ माँटि उँघैत रहँथु मुदा बुँधिअरबा सँब बँगुली भँरबेँ करत ।

ज्ञानधन : (प्रवेश कऽ) एहि अवसर पर जे क्यौ अपन स्वार्थ सिद्धकरबाक पाछाँ लगताह तनिका इतिहास क्षमा नहि करतनि, इतिहासे नहि, समाजो हुनका क्षमा करबालेल कथमपि तैआर नहि हैतन्हि ।

जयराम : एहिँ तरहेँ सँसारमे कतहुँ काँज भेबोँ कैंल छैंक की एँही ठामसँ शुरू भेलैक अछि ?

ज्ञानधन : संसारक जे कोनो पराधीन देश स्वतंत्रता प्राप्त कऽ अपना पैर पर आइ ठाढ़ भेल अछि ताहि सब देशक जनतामे एहिना उत्साहक लहरि उमड़ि अयलैक अछि आ आब सिंह जकाँ ओ सब गरजि रहल अछि । अपना देशक दुख दरिद्रताकेँ कालापानी पठाय व्यक्ति मात्र सुखी ओ प्रसन्न अछि ।

जयराम : गप्पी सभक लेल तँ गप्पक खँरिहाँन पँसरले रँहैत छैंक, एँखन नँव योँगी भेँलाह अँछि, कोँना ने काँग्रसक दोँहाइ देँबहक, मुँदा हौं ज्ञाँन धन ! कोँनो देँशक नाँम लँऽ सँकैत छँह ?

ज्ञानधन : लगहिं मोछ परोसहिं दाढ़ी, एहि ठाम चीनक एक-एक कण भूमि आइ लहलहा रहल छैक । एक-एक जनता देशक निर्माणक हेतु अपन शरीर समर्पण कऽ चुकल छैक । ओहि ठाम पाखण्डीक निर्वाह कहाँ छैक ?

जयराम : दूँरंक ढोँल एँहिंना सोँहौंन लँगैंत छैंक । सँबँ लोँक कँहैंत छैंक जे चीन कँम्युनिष्टँ अँछि ।

ज्ञानधन : देशक निर्माण काजमे सोसलिस्ट आ कम्युनिस्टक भेदभाव रखने काज नहि चलत ।

(नेपथ्यमे महात्मागान्धीजीक जय हो, राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादक जय)

ज्ञानधन : कृषक बोनिहारक मंडली अदम्य उत्साहसँ देशक निर्माणमे लागि गेल अछि । ओना तँ नेतासँ लऽ पंडित धरि, शिक्षकसँ लऽ विद्यार्थी धरि, समाजवादीसँ लऽ साम्यवादी धरि आब सन्नद्ध छथि, परन्तु सबसँ अधिक आवश्यकता अछि कृषके बोनिहार लोकनिक, जनिकर जीवन एहि कोशीक बाढ़िसँ, संक्रामक रोगसँ जर्जर भऽ गेल छनि । दोसर बात जीवन भरि बबुआनी कैनिहारकेँ ने एकर समुचित ज्ञान ने माटिक मर्म बुझबाक लूरि आ ने जी-जान अरोपि काज करबाक क्षमता ।

जयराम : एँहौं ज्ञाँनधन । सँमाजवादी लोँकनि एँहि मेँ भाँग लैंत छथिँ ।

ज्ञानधन : जौं समाचार पत्रक दुनिञासँ सरोकार रखैत होयब तँ प्रजा समाजवादी नेता जयप्रकाशनारायणक वक्तव्य पढ़ने होयबनि ।

जयराम : आँ साँम्यवाँदी लोँकनि ?

ज्ञानधन : अखिल भारतीय साम्यवादी नेता श्री ए.के. गोपालन मुक्त कंठेँ अपना पार्टीक दिशसँ सहयोग देबाक वचन देलथिन अछि ।

सुन्दरलाल : औ जी! असलमे यदि ई चाहैत छी जे सरकार हमरा सहायता करय आ जतेक अभाव हमरा सभक सोझाँमे मुँह बौने ठाढ़अछि तकर पूर्ति हो तँ ई परम आवश्यक थीक जे सब गोटे जी-जानसँ सरकारक सहायतामे लागि जाइ ।

ज्ञानधन : एहिसँ तँ ने हम कांग्रेसक उपकार करैत छिऐक ने कोनो दोसर पार्टीक, ने कोनो नेताक उपकार करैत छियनि ने कोनो नेता होयबाक कामना रखनिहारक । एकर प्रत्यक्ष फल तँ हमरे अहाँकेँ भेटत ।

जयराम : आँ जौं नहि सुँतँरलैक तँखन ?

ज्ञानधन : एना जौं आशंका करऽ लागी तँ अन्न नहि खाइ, कारण जे जौं पेटमे जा कऽ ओ नहि पचल ?

सुन्दरलाल : चलह आइ सौंसे गौआँ मिलि कऽ निश्चय करी आ बालेँ-बच्चेँ एक बेरि देशक निर्माण, अपना भाग्यक निर्माण, अपना सन्तानक भविष्य-निर्माणमे लागि जाइ (**बाजू कोशीमाताक जय हो । सब स्वरमे स्वर मिलबैत अछि ।**)

ऊठि जो, तकैत छेँ कथीक बाट आब तोँ
आबि गेल छेँ स्वतन्त्रताक घाट आब तोँ

फूक शंख, जागि गेल आइ सुप्त देश ई
भऽ सशंक, भागि गेल आइ गुप्त क्लेश ई
हो सचेत, फाँड़ बान्ह, काज छउ विशेष ई
दूर भऽ सकय स्वदेश केर दीन वेश ई
श्रम करैत काज केर क्रम बना विराट तोँ
ऊठि जो, तकैत छेँ कथीक आब बाट तोँ
क्रांति हो कि शान्ति आइ कोन कोन व्याप्त हो
बन्धु-भाव-बद्धलोक, दुष्टता समाप्त हो
ताहि वस्तु केर वृद्धि हो कि जे कमाप्त हो
व्यक्ति मात्रकेँ स्वतंत्रताक स्वाद प्राप्त हो
त्याग मोह तोड़ निन्न, छोड़ आब खाट तोँ
आबि गेल छेँ स्वतंत्रताक आब घाट तोँ

(समाप्त)

[रचनाकाल- 1955 ई.]



ब्रह्मस्थान

पात्र-परिचय

सुगिया : पचकौड़ीक स्त्री, वयस 35-36, मैल नूआ पहिरने ।

पचकौड़ी : वयस 40-42 । गरीब-बोनिहार, डोरिया गंजी आ अंगपोछा ।

हरिवंशबाबू : वयस 45-50 । गामक मुखिया, खद्धरक धोती-कुर्त्ता, टोपी, घड़ी,चश्मा ।

नूनू बच्चा : वयस 12-13 । मुखियाक बेटा, धनिक परिवारक ओढ़न-पहिरन ।

मखना : वयस 16-17 । रुग्ण, मैल-कुचैल कपड़ामे लेपटायल ।

ठकाइ : वयस 40-42 । साधारण बोनिहारक ओढ़न-पहिरन ।

धरणीधर : वयस 30-32 । उग्र विचारवादी युवक । शान्त, गंभीर, तेजस्वी ।

जयकान्त : वयस 30-35 । राजनीतिक विचारसँ प्रभावित । मध्यम ओढ़न-पहिरन ।

चिरञ्जीव : वयस 35-40 । खुशादमी स्वभाव, गप्प चिवौनिहार, मध्यमवर्गीय ।

तीन चारि ग्रामीण भिन्न-भिन्न वयसक देहाती वेश-भूषामे ।

पहिल दृश्य

(स्थान - पचकौड़ीक आङन, बाँसक खाटपर पड़ल मखना कुहरि रहल छैक । सुगिया बेटाक सिरमामे बैसलि नीमक पातसँ हौंकि रहल छैक । परदा उठैत अछि ।)

सुगिया : **(ठाढ़ होइत)** हे बरहम बाबा ! हमरा बच्चा के कष्टसँ उबारि लियऽ, हमरा गरीबक गोहारि करू हे बरहम बाबा ! **(आँचर पसारि लैत अछि । पुनः आँचरसँ आँखि पोछैत)** हम गरीब-गुरबा डाकदरकेँ फीस कहाँसँ आनब ? डाकदरी दबाइ-बीरो केनाकऽ किनि सकब ? सरकारी अस्पताल तँ जरलाहा गरीबक वास्ते छैके ने ! अहींक एक असरा हे बरहम बाबा ! अइ गरीबनीक गोहारि करू हे बरहम बाबा !

नूनूबच्चा : (प्रवेश करैत) अयँ गै सुगिया ! आइ पानि भरऽ नहि जेबही ? देख तँ हमसब इसकूलसँ कखन ने अयलहुँ, पनपियाइ करब से एक ठोप पानि कतहु नहि छै आ तों अइठाँ मौज कऽ रहल छें ?

सुगिया : मौज करै छिकी नूनू बच्चा ? देखिऔ मखना बेराम पड़ि गेल ऐछ । आइ अठारह दिन भऽ गेलै ।

नूनूबच्चा : तँ लऽ जाही ने अस्पताल !

सुगिया : बौआ ! अस्पतालो लऽ गेल रहिऐ, डाकदर बाबू एक गो पुर्जा लिखि कऽ देलखिन । मुँहझौँसा कम्पोटर बाबू एक गो सीसीमे ललका पानि लऽकऽ दैत छल गऽ । कोनो फैदा नइँ केलकै ओ ललका पानि ।

नूनूबच्चा : भर्ती करा दहीक ।

सुगिया : मखनाक बाप कते खेखनिआ केलकै जे भर्त्ती कऽ लू औ डाकदर बाबू ! मुदा गरीबक खातिर जगहे ने खाली रहै छै, औ बौआ !

नूनूबच्चा : तँ ताहि ले' हमसब की करबौ ? ताहि दुआरें हमरासभक मुँहमे टाट लागल रहय ?

सुगिया : टाट लागओ अहाँक मुद्दैक मुँहमे । कनेक मखनाक बाप बजारसँ अबै छै कि दौगले हम चल अबै छी, अहाँ चलू । असगरे साँझ भरली केना कऽ छोड़ि दियौ ?

नूनूबच्चा : आ सासु जे छौ बुढ़िया, से कतऽ गेलौ ?

सुगिया : बुढ़िया ? बुढ़ियाकें मुइना तँ चारि मास भऽ गेलै ? ऊहें बुढ़िया तँ लच्छमी छलै गऽ, ओ मरलै कि घरमे ढनमनी लागि गेलै ।

नूनूबच्चा : अयँ गै सुगिया ! सासु मरि गेलौ से हमसब कहाँ बुझलियौ ?

सुगिया : बड़का बेटाक ओइ ठिन गेलै आ की भेलै की ने से ने जानि, ओही ठिन चटपट मरि गेलै ।

नूनूबच्चा : तैयो हमसब बुझलियौ नहि ?

सुगिया : मालिक ! अहाँ आउर भेली बड़का लोक । गरीब-गुरबाकें खोपड़ीमे कखनी की होइ छै से की जानऽ गेलिऐ ? अहाँ आउरके अइसँ कोन मतलब ?

नूनूबच्चा : अच्छा-अच्छा, जइसँ मतलब अछि से कर जल्दी, चल, कमसँ कम दू घैल पानि ताबत दऽ आ गय जे पनिपिआइ भऽ जाय ।

सुगिया : मालिक ! हम दौगल पानि भरने अबै छी, ताले अहाँ मखना लग पाँच मिनट बैठिऔ तऽ ।

नूनूबच्चा : हमरा अपने फुटबौल खेलाय ले' जयबामे अबेर भऽ रहल अछि ।

सुगिया : तेँ तँ कहै छिकी बौआ, अहाँ पाँच मिनट बैठू, हम कुकुरक पैरेँ जाइ छिकी आ बिलाइक पैरेँ चल अबै छिकी ।

नूनूबच्चा : बड़ भेलीह अछि पाँच मिनटबाली ! साफ-साफ बाज जे हमराबुतेँ पानि भरल नहि होयत तँ हम अपन दोसर इन्तिजाम कऽ लेब ।

सुगिया : से कोना कहब मालिक ? अहीँ सभक दाना खाकऽ गुजर करै छी । के एहन बेधरमी होयत जे अहाँ आउरक सेवा नइ करत ?

नूनूबच्चा : तैपर तँ एतेक बात बना रहल छेँ !

सुतगिया : बात नइँ बनबै छी बौआ ! अपन दुखड़ा सुनाबऽ लगली ।

नूनूबच्चा : तँ दुखड़ा सुनाबऽ ले' हमहीँ भेटलियौ ? भिनसरोमे पानि देबामे अबेर कऽ देलेँ से इसकूल जयबामे 'लेट' भऽ गेल ! आब एखन भूखेँ पेटमे बिलाड़ि कूदैत अछि तँ तोँ अपना बेटाक खबासी करऽ कहै छेँ ! हम साफ-साफ कहने जाइ छियौ जे दस मिनटक अन्दर पानि दऽ दे, ने तँ दोसर इन्तिजाम कऽ लेल जेतै । **(चल जाइत अछि)**

मखना : **(करोट फेरबाक चेष्टा करैत)** माय गै ! बड़ पियास लागल गऽ ।

सुगिया : एखने साँझ पड़लैए बौआ ! साँझ भरली पानि केना पीबेँ ?

मखना : माय गै ! भूखेँ बाजियो ने होइअऽ ।

सुगिया : केना बाजल जेतौ बेटा ! आइ अठारह दिन भेलौ, पानि छोड़िकऽ आर किच्छो अधार नइँ छौ तँ केना बाजल जेतौ ? डाकदर कहने रहौक बेदाना, समतोला, गुलकोच खाय ले', मुदा गरीब लोक कहाँसँ आनत ?

मखना : **(उकासी करैत कुहरैत)** माय गै ! समतोला तँ इसकूलपर सरोसत्ती पूजामे देखने रहिऐ, गुलकोच केहन होइ छै ?

सुगिया : हमहूँ तऽ नामे सुनने छिऐ बौआ रे ! आइ तोहर बाबू बजार गेलौ गऽ, आइ तोरा ले' गुलकोच, समतोला सब नेने औतौ । आइ खा लिहेँ । **(माथपर हाथ फेरैत)** बौआ रे ! हम डिबिया नेस दै छियौ आ दौगकऽ नूनूबच्चाकेँ दू घैला पानि दऽ अबै छिऐ आ तोरा बाबूकेँ सेहो देखने अयबै । **(सलाइ तकैत अछि । सलाइकेँ डोला कऽ देखैत अछि, मुदा डिबियामे धरबासँ पहिने मिझा जाइत छैक । सलाइकेँ उठाकऽ पटकि दैत छैक)** मारे बढ़नी धऽकऽ ! एकरो आइए सठऽ के छलै गऽ । **(मखनाक माथपर फेर हाथ फेरैत)** बौआ ! हम गोइठा नेने जाइत छी, ओन्नीसँ आगिओ नेने अयबो ।

(कहैत बिदा भऽ जाइत अछि ।)

मखना : गै माय ! गै नइँ जो गै ! गै ! हमरा डर होयत गै !

(मखना चिचिआइत रहैत अछि, सुगिया चल जाइत अछि, परदा खसैत अछि)

दोसर दृश्य

(स्थान- रास्ता, पचकौड़ी ठेहुन तक धोती, फाँड़ बान्हल, माथपर अंगपोछा बन्हने, कान्हपर डोरिया गंजी रखने, चूनसँ सौँसे देह चुनेटल, पसेनासँ नहायल प्रवेश करैत अछि)

पचकौड़ी : (स्वगत) अढ़ाय टका भरि दिनुक बोनि भेल । आठ अनाक सतुआ नोन लऽकऽ अजुका दिन कटली । एगो रुपैया कातिकऽ राखि लेलक जे काल्हिखिन फेनो काज कऽ दिऐ गऽ । बाँचल एक गो रुपैया । **(गंजीकेँ कान्हपरसँ उतारिकऽ जेबीमेसँ टकही नोट बाहर कऽ ओकरा देखैत अछि)** आइ एक गो रुपैया समतोला नेमो, बेदाना, गुलकोच आ घरक खर्ची सब किच्छो चाही । की लियऽ की नइँ ? **(किछु काल सोचबाक नाट्य करैत अछि)** दू दू आने समतोला, दू गो समतोला लऽ ली, एक गो अखनी खायत आ एक गो काल्हिखिन । बाँचल बारह आना ढेउआ । अइसँ अपनासब ले' खेसाड़ी लऽलू कि मखना ले' गुलकोच ? मखनाकेँ अठारह दिन भऽ गेलै, आइ गुलकोचे कीनि लै छी । **(किछु दूर आगू बढ़ैत अछि, फेर ठमकि जाइत अछि)** मुदा मखनाक माइओकेँ तँ आइ हरी बाबू ओइठिन जाइके पलखति नहिएँ भेटल हेतै । ओ बेचारी बाट तकैत हैत । बिना कुच्छो-खयने-पीने ओहो दिन-राति मखनाक सेवा कऽ सकतै ? अपनो जँ कुच्छो खायब नइँ तँ काल्हिखिन फेनो चूनक बोरा उठा सकब ? नइँ-नइँ, आइ मखना ले' एक गो समतोले लऽ लै छिऐ। काल्हिखिन तँ साढ़े तीन गो रुपैया भेटत । बरू काल्हिए मखना ले' गुलकोच आ वेदाना दुनू नेने जयबै ।

(सोचैत चलि दैत अछि । परदा उठैत अछि आ सुगिया डाँड़पर धैल नेने चल जाइत देखि पड़ैत अछि। छड़ी घुमबैत हरिवंश बाबू प्रवेश करैत छथि।)

हरीबाबू : अय गै सुगिया ! तोरा काज करऽमे मोन नहि लगैत छौ तँ साफ जबाब किऐक ने दऽ दैत छेँ ?

सुगिया : मालिक ! मखना बड़ जोर बेराम भऽ गेल ऐछ । भरलीसाँझ बिन साँझ देने, असगरे नेन्नाकेँ छोड़िकऽ पानि भरऽ दौगलि अयलौँहेँ । की करू ?

हरीबाबू : करबें की ? काज छोड़ि दे । काज करौनिहारे भेटनिहार नहि, काज केनिहारक कोन कम्मी छैक ? भोरमे नूनूबच्चाकें स्कूल जयबामे देरी भऽ गेलनि । एखने मास्टर भेटल छलाह अछि । कहैत छलाह जे गार्जियनसभ अपने नेना-भुटकाकें देखथिन नहि आ सब छार-भार मास्टर सभक कपारपर थोपने रहथिन । की जबाब दितियनि हुनका ? ई सब तोरे चलतें भेल की ने ?

सुगिया : मालिक ! ई तँ ने हमरा चलते भेल गऽ ने अहाँक चलते । भगवानक मर्जी जेहन । मखना बेराम नइँ पड़ैत तँ कथी ले' हमरा देरी होइत ?

हरीबाबू : बड़ भगवानबाली भेलेहें ! अनका धीया-पूता छैके ने ! कनेक दुक्खित पड़लौक की नहि, एक टा लाथ भेटि गेलौक । बच्चा बेराम भऽ गेल, भगवानक मर्जी, ई सब हमरा ओतऽ नहि चलतौ । बेरपर काज करक होउक तँ कर, ने तँ साफ-साफ जबाब दऽ दे । आ तोहर नबाब साहेब कहाँ गेलथुन, लीडर साहेब ?

सुगिया : आइ छौड़ाकें अठारह दिन भऽ गेलै । किच्छो कण्ठक तर नहि गेलैए । डाकदर बाबू कहलखिन समतोला नेमो, बेदाना गुलकोँच देबऽ तें मखनाक बाप आइ बजार चल गेलै जे कतौ काज भेटि गेल तँ नगदी ढेउआ भेटत । ओहीसँ समतोला गुलकोँच किनने अयबै ।

हरीबाबू : हँऽ हँऽ, लीडर साहेबक बेटाकें बिनु समतोलें, बिनु गुलकोचें काज कोना चलतनि ? माय करय कुटान-पिसान, बेटाक नाम दुर्गादत्त ।

सुगिया : मालिक ! अपन बच्चासँ कुकुरोकें परेम होइ छै ।

हरिबाबू : जो जो, घैल राखि दे आङनमे, हम अपन पानि भरबा लेब । बड़ प्रेम छौक बेटासँ तँ ओकरे ओगरने रह गऽ । चारि बजे आयल नूनूबच्चा स्कूलसँ **(घड़ी देखैत)** आ छौ बाजि रहल अछि, एखन धरि जलखै नहि कयलक अछि । हरामजादी नहिंतन !

सुगिया : मालिक ! बौआकें बेरहटमे कनी देरी भऽ गेलनि से अहाँकें एतेक मम्मत लगैत ऐछ आ हमरा मखनाकें तँ आइ अठारह दिन भऽ गेलै । जेहने अहाँ नूनूबच्चाक बाप छियनि तेहने तँ हमहूँ मखनाक माय छियै । अपना-अपना बच्चाक वास्ते सबकें एक्के रंग दरेग होइ छै ।

नूनूबच्चा : **(प्रवेश करैत)** बाबू औ ! हम जखन एकरा बजबऽ गेलिऐ तँ पहिने ई अपन पोथा पसारलक । आ जखन कहलिऐ जे पानि दऽ आ गऽ तँ कहलक की....

हरीबाबू : की कहलक ?

नूनूबच्चा : अहाँ हमरा बेटा लग बैसू आ हम पानि दऽ अबैत छी ।

हरीबाबू : एकरा सबहक ठेसी बढ़ल जाइ छैक । अयँ गै सुगिया ! हमर नूनूबच्चा तोरा बेटाक ओगरबाही करथुन गै ?

सुगिया : मालिक ! गरीबोक बच्चाकेँ भगवाने बनबैत छथिन । ओकरो देहमे एहने माँउस, एहने हड्डी, एहने लेहू होइ छै मालिक ! साँझ भरली असगरेमे केना छोड़ितिऐ, तेँ पाँच मिनट बैसऽ कहलियनि तँ कोनो इज्जतिमे बट्टा नहि लगा देलियनि, कोनो अन्याय नहि कैली मालिक !

हरीबाबू : बड़ अयलीह अछि न्याय करऽबाली ! लीडरक बहु होयबाक सब दाबी एखने हम घोसाड़ि देब । मुँह लागल बजनाइ ! **(एतबा कहैत छड़ीक हूर सुगियाक पेटमे भोँकि दैत छथिन । ओ कूदि उठैत अछि । काँख तरक घैल खसि पड़ैत छैक आ भटाक दऽ फूटि जाइत छैक ।)**

[परदा खसैत अछि ।]

तेसर दृश्य

(स्थान- रास्ता । पचकौड़ी अंगपोछामे बान्हल मोटरीकेँ कान्हपर लटकौने हाथमे समतोला नेने प्रवेश करैत अछि । दूरमे ब्रह्मस्थान देखि पड़ैत छैक ।)

पचकौड़ी : **(स्वगत)** आइ हमर सूगा ई नेमो देखिते खुशीसँ नाचि उठत । कतेक खेखनियाँ केलिऐ जे दू आनामे दऽ दे से नङटा नेमोवला तीन-तीन आनासँ कम नहि देलक । जाह नङटे ! ई मेहनतिक पाइमेसँ एको पाइ जँ अडण्ड नेने हैबह तँ गलि जेतह पूजी धरि । हमरासभक कमाइ की कोनो बाबू-भैयाक कमाइ थीक जे कनी एन्नी-ओन्नी कैली कि बटुआ गरम ? **(नेपथ्य दिस दूरमे नजरि दैत)** हे ब्रह्मबाबा ! **(झुकि प्रणाम करैत)** हमरा नेन्नाकेँ छोड़ा दियऽ हे ब्रह्मबाबा ! तँ हम जानक बदला जान देब । भोरे आङनसँ बहराइक इच्छा नइ होइ छल गऽ । ओहन बेराम नेन्नाकेँ छोड़िकऽ कोन बापकेँ जाइक मोन हेतैक, मुदा कयल की जाय, दोसर उपाइए की छल ? भरि दिन छलौं गऽ काज करैत आ मन छल गऽ लटकल गामपर । भूखेँ बच्चा लहालोट होइत हैत । आँखि लागल हेतै दूरे दिस ।

(हाथक समतोला दिस देखैत तेजीसँ जाइत अछि । पर्दा उठैत छैक । खाटपर पड़ल मखना अन्हारेमे जोरसँ कुहरि उठैत अछि । ओही अन्हारमे पचकौड़ीक प्रवेश ।)

पचकौड़ी : गै मखना माय, मखना माय छें गै ! देख, आइ मखना ले' समतोला नेमो नेने एलिअइ गऽ । जल्दीसँ डिबिया नेस ले । हम ताले मखनाकें नेमो खिया दै छिऐ आ तों फटसनी रोटी तरकारी कऽ ले । दिनमे थोड़े सतुए खाकऽ दिन कटली गऽ । धर ई चिक्कस, पियाजु, नून मिरचाइ आ भाँटा **(कोनो उत्तर नहि भेटैत छैक । दू डेग आगाँ बढ़ि)** घरमे अन्हार किऐ छै ? कहाँ गेलै ई मौगी ? **(जोरसँ)** गै मखना माय !

ठकाइ : **(प्रवेश करैत)** की यौ कमती ! आइ कहाँ चल गेल छली गऽ ?

पचकौड़ी : आइ कनी बजार दिस चल गेलिऐ नगदी पाइक जोगाड़मे । देखिऔ ने जे मखनाक धाह उतरिते ने छै । डाकदर कहलखिन समतोला नेमो, गुलकोंच, बेदाना आर दइ ले' । घरमे खर्ची नइँ, क्यो रीन-पैच देनिहार नइँ ।

ठकाइ : ई मुखिया जे छैथ हरिवंशबाबू..... **(तमाकू बाहर कऽ चुनबऽ लगैत अछि ।)**

पचकौड़ी : हँऽ हँऽ ।

ठकाइ : राच्छस छैथ राच्छस ।

पचकौड़ी : की भेलै गऽ से ? कोनो लया बात ?

ठकाइ : अहाकें पत्तो नइँ ।

पचकौड़ी : हम तँ अन्हरोखे घरसँ बहरैली से मुनहारि साँझमे गाममे पैर रखलौं गऽ । की भेलैयऽ ?

ठकाइ : **(हाथक तमाकू बँटैत)** सुगिया कहाँ गेल ?

पचकौड़ी : अङनामे तँ नइँ देखै छिऐ । कहू केहन मूरुख ई जनाना ऐछ जे घरमे बेराम नेन्ना आ तकरा छोड़िकऽ साँझ-भरली कहाँ झिलहेरि खेलाय गेल गऽ ?

ठकाइ : महज हम तँ देखिलिऐ गऽ हरीबाबूक दलानपर ठाढ़ छल गऽ आ ऊ छड़ीसँ पीटैत छलखिन हें ।

पचकौड़ी : की कहली ? पीटै छलखिनहें ? किऐ ? हुनकर की बिगाड़लकनि ?

ठकाइ : तें तँ हम दौगल अयली जे अहाँ गामपर छी कि नइँ से देखी । सब बात तँ हमरा आउर फड़िछा कऽ नइँ बुझलिअइ गऽ ।

पचकौड़ी : गरीबकें सतेबामे भगवानोकें नीक लगै छनि तखनी मनुक्खक कोन बात ? **(कुहरबाक शब्द होइत छैक । पचकौड़ी ठकाइसँ सलाइ माङिकऽ डिबिया लेसैत अछि । मखनाक लग जाइत अछि)** की भेलौ बौआ ! किऐ कुहरै छें ? भूख लगलौ गऽ ? देख, तोरा ले' समतोला नेमो नेने अयलिऔ गऽ ।

मखना : (निष्प्रभ आँखिएँ निहारिकऽ तकैत) पा...नि...

पचकौड़ी : (घबराइत) पानि पिबें बौआ ! थम्ह, हे देलियौ पानि (पानि ताकऽ लगैत अछि, मुदा झरकलहा कोहामे पानि नहि भेटैत छैक । ठकाइक हाथ कऽ लोटा दैत छैक) कनी कलपरसँ टटका पानि आनि दिय तऽ (ठकाइ लोटालऽ चल जाइत अछि । मखनाक मूड़ी गेड़ुआपरसँ गुड़ुकि जाइत छैक)

पचकौड़ी : बौआ ! माय कहा गेलौ ? मक्खन ? नेमो खेबें बौआ ? (हाथ-पैर-नाक छूबैत छैक । सब ठरल छैक) अँय ! हाथ-पैर ठरल किऐ छै ? (समटिकऽ कोराकऽ लऽ लैत छैक ।)

ठकाइ : (पानि लऽ कऽ प्रवेश करैत) सुगिया अखनी तक नइँ आयलि गऽ ? कलपरसँ हरीबाबूक गरजनाइ सुनि पड़ै छल ।

पचकौड़ी : (बुकौर लागल स्वरसँ) औ ठकाइ मड़र ! औ ठकाइ मड़र ! ई छौँड़ा तँ बजिते ने ऐछ !

ठकाइ : (घबड़ाकऽ डिबियासँ देखैत) हाथ-पयर हेमाल लगै छै । (नाड़ी देखैत, दीर्घ श्वास लैत, मूड़ी डोलबैत) हे भगवान ! कमती ! आब नइँ रहल । (दुनू गोटे उठाकऽ नीचाँमे रखैत छैक)

सुगिया : (बरबराइत प्रवेश करैत अछि) कलियुगमे भगवानो आन्हर भऽ जाइत छैथ । ने तँ दुनिआँमे एहन अन्हेर होइत ? कहऽ ले' गरीबक राज छियै आ गरीबकें देखनिहार क्यो ने ! (अकस्मात् दृष्टि मखनापर पड़ैत छैक । छाती पीटैत जोर-जोरसँ कानऽ लगैत अछि । परदा खसैत छैक)

चारिम दृश्य

(स्थान- हरिवंश बाबू मुखियाक दलान । हरीबाबू चौकीपर बैसल छथि । धरणीधर आ जयकान्त प्रवेश करैत छथि । चिरंजीव आ फोचाइ एक भाग ठाढ़ छथि ।)

नूनूबच्चा : (धरणीधरक हाथ पकड़ैत) इह ! अहाँ सब तँ देरीसँ अयलहुँ । असलका तमासा हुसि गेल । (बापक दिस ताकि सब दिस तकैत) आइ 'लीडर' साहेबक श्रीमतीजीकें बाबू एक्के छड़ीमे सिट्टी-पिट्टी गुम कऽ देलथिन । घैल खसलैक भटाक्... (खिखियाकऽ हँसि उठैत अछि)

हरीबाबू : (नूनूकें डँटैत) की खिखिआइत छी ?

धरणीधर : की भेल छलै मुखिया जी !

हरीबाबू : अरे, ई सुगिया अछि ने, वैह हमर पानि भरैत अछि । ओकर बाप-पितामह तँ सब दिन हमरे बहिया रहल ।

जयकान्त : हँऽ हँऽ, से तँ सब देखिते रहलैक अछि ।

हरीबाबू : सुगिया गामक बेटी थिक । बसल अछि, बड़ बेस । बापक सब सम्पत्तिक मालिकीनी वैह भेलि तँ बापक कर्जो तँ ओकरे चुकाबऽ पड़तैक ?

चिरंजीव : से तँ उचिते । जैह सम्पत्तिक अधिकारी, सैह विपत्तियोक अधिकारी होइत छैक ।

हरीबाबू : हम सुगियाक घरवालाकेँ कहलिऐक जे तोँ आन ठाम जे बोनि करबह से हमरे ओहिठाम करह ।

चिरंजीव : तँ आर की ?

हरीबाबू : मासमे बीस दिन तँ काज पड़िते अछि ।

चिरंजीव : बल्कि बाइसो चौबीसो दिन ।

हरीबाबू : जँ सेरो भरिक रोज कटौने गेल तँ बीस सेरक मासिक सधैत गेलैक । एहि तरहेँ एक दिन ओतैक जहिया निकर्ज भऽ जायत ।

चिरंजीव : ठीके, बुन्देँ-बुन्देँ भरय तलाब ।

हरीबाबू : नहिं, जँ बाबू से नहि पसिन्न होउक तँ हमरे पुरखाक देल घराड़ी थिकौ । कहौ सुगियाकेँ, कर्जमे केबाला कऽ देत । हम अपना घर, तोँ अपना घर ।

चिरंजीव : तखन ?

हरीबाबू : तखन की ? अपन नगदी कमाइ ले' बजार दिस घसकि जाइत अछि ।

जयकान्त : आइ की सब भेलैक मुखिया जी !

हरीबाबू : किच्छु ने, भिनसरोमे ततेक अबेरकऽ पानि दऽ गेल जे नूनूबच्चाकेँ स्कूल जयबामे लेट भऽ गेलैक । साँझमे स्कूलसँ घूरिक अयलाह अछि तँ पानि बिना पनिपिआइ बन्द ।

जयकान्त : तखन ?

हरीबाबू : पठौलियनि जे देखियौक, पानि देत की नहि ? आ ई जँ गेला तँ ओ हरामजादी कहैत छनि जे अहाँ हमरा बेटाक सिरमामे बैसू तँ हम पानि दऽ अबैत छी ।

धरणीधर : मखनाक सिरमामे किएक बैसऽ कहलकै ?

चिरंजीव : यैह तँ अस्सल बात छैक ।

हरीबाबू : कहैत छै मखना दु:खित अछि ।

धरणीधर : कहैत छेक कि वास्तवमे छैक ।

फोचाइ : बेराम की रहतै ? समैया बोखार-उखार लागल हेतै ।

नूनूबच्चा : मखना खटोलीपर पड़ल छलैक ।

धरणीधर : एकर माने, ओ दुक्खित अवश्य छैक, तखन तँ ओकर कहब कोनो अनर्गल नहि छलैक ।

चिरंजीव : अनर्गल कोना ने भेलैक ? मुखियाजी कोनो हरही-सुरही लोक तँ नहि थिकाह । तखन हिनका बच्चाकेँ ओगरबाही करऽ कहनि ? छोट लोकक सेखी थिकैक की नहि ?

जयकान्त : आजुक भारतमे एक गामक मुखिया जँ ऐना छोट लोक पैघ लोकक विचार करय तखन तँ ग्रामराज्य भेल कि किछु बाँकी रहल ?

धरणीधर : एक तँ केहनो पैघ अपराध कयलो उत्तर स्त्रीगणर हाथ उठायब नीक लोकक काज नहिएँ थिकैक, सेहो जे गामक मुखिया अछि । आ ई तँ कोनो अपराध नहि भेलैक । मनुक्खे मनुक्खक रक्षा करैत छैक ।

हरीबाबू : बड़ ओकालति करैत छहक तोरालोकनि ! की किछु घूस भेटलह अछि ?

धरणीधर : मुखियाजी ! घूस लेबाक आ देबाक अभ्यास अहाँसन लोककेँ होइत छैक जे निर्वाचनमे हजारो रुपैया एही घूसक भरोसेँ बूकैत अछि । हमसब तँ सामान्य लोक छी, अहाँसबसँ प्रयोजन पड़लापर किछु घूस देबहि पड़त । घूस लेबाक संयोग हमरासबकेँ कतऽ भेटत ? मुदा एकान्तमे जतऽ एक आत्मा आ दोसरपरमात्मा रहैत छथिन, अहाँ अपने छातीपर हाथ राखिकऽ विचार करब तँ बूझि पड़त जे ई काज अहाँ नीक कयलहुँ की बेजाय ।

(दूरसँ कनबाक ध्वनि सुनि पड़ैत छैक)

जयकान्त : अयँ ! ई के कनैत अछि ?

नूनूबच्चा : तऽ बहि ! जेना क्यो मरि गेल होइक तहिना अलच्छ जकाँ कनैत अछि ।

(सहसा हाथमे समतोला नेने पचकौड़ी कामति प्रवेश करेत अछि, विक्षिप्त जकाँ)

पचकौड़ी : बाबू ! ई समतोला नेमो थिकै समतोला नेमो.... बड़का लोकक धीया-पूता ई नेमो खाइत छैक । हम आइ बड़ मेहनतिसँ ई नेमो अपना सूगा ले' उप्पर कयने छली गऽ, सोचने छली जे हमर बौआ ई देखि कऽ खुशीसँ नाचि उठत, महज ओ बड़का लोकक बच्चाक बराबरी कोना करितय ? सुगबा उड़ि गेल । आइ हम पानिसँ सबकेँ डूबा दैत छिकी । अहाँ नूनूबच्चाक अँतरी जलखै ले' ऐठै छलनि ने ? अङनामे पानि नहि छल गऽ । लाउ जल्दी घैला, आइ अपना नोरसँ अहाँकेँ, अहाँ बाल-बच्चाकेँ, अहाँक घर-दुआरकेँ, सबकेँ डुबा दैत छिकी औ मालिक ! अरौ बाप रौ बाप ! **(कहैत नूनू बच्चाकेँ पकड़ि बिनु सोहल समतोला मुँहमे ठूसि दैत छनि । सबकेँ ठकमूड़ी लागल रहि जाइत छैक । नूनूबच्चा आँउ-आँउ करैत रहैत अछि । धरणीधर आ जयकान्त पचकौड़ीकेँ पकड़ि कऽ घिचने लऽ जाय चाहैत छथि । फोचाइ आ चिरंजीव फाँड़ बान्हऽ लगैत छथि । परदा खसैत अछि ।)**

पाँचम दृश्य

(स्थान- रास्ता, दूरमे ब्रह्मस्थान देखि पड़ैछ । कान्हपर कोदारि नेने पचकौड़ी कमती प्रवेश करैत अछि)

पचकौड़ी : **(स्वगत)** आइ एहि ब्रह्मकेँ कोड़िकऽ धारमे भसा देबनि । जखनी हिनकरो बड़केक बात सुनबाक पलखति छनि, गरीबहाक सुनैबला कोइ ने, तँ हिनकरो रहबाक कोन अधिकार छनि ? आइ हिनकर रेख सहित मेटा देब । **(कानि उठैत अछि)** हिनकरो गोहरौली जे हे बरहम बाबा, जानकेँ बदलामे जान देब, हमरा बेदराकेँ आराम कऽ दियऽ, महज अइ माँटिक गोलकेँ आँखि नइँ, कान नइँ, हिनकरो कोन हक छनि जे सबहक पूजा लैथ ?

(पाछाँ-पाछाँ सुगिया आ आगाँ-आगाँ ठकाइ दौड़ल प्रवेश करैत अछि)

ठकाइ : कमती, कमती ! बात मानू ! अइमे केकरो दोख नइँ, अपन करम के दोख । मखना अहाँक नहि छऽल हेँ । जँ अहाँक रहैत तँ अहीँक लग रहैत । रिनियाँ छल रिनियाँ । अपन रीन सधौलक आ चल गेल । कपारक लिखलहा, अहाँकेँ बुढ़ौतीक लाठी छीन लेलक । अइमे बरहम बाबा की करितैथ ?

सुगिया : **(पैर पकड़ैत)** हम निहोरा करै छिऐ, पैर पकड़ै छिऐ, घूरि चलौ अङना । एनाही तँ मुखिया चाहै छै जे पीस कऽ पी जाइ आ तैपर जँ बरहम बाबाकेँ कोड़तै' तँ गामक एको गो कारकौआ एकरा पच्छमे नइँ बजतै । तखनी अइ गाँवसँ उजैड़ जाय पड़तै ।

पचकौड़ी : अइ गामसँ उजैड़ जायब ? हम अइ गाममे बसल कहाँ छिकी ? के कहत जे हम अइ गाममे बसल छिकी ? हम्मर तँ दुनियेँ उजैड़ गेल । हमरा आब अइ वस्तीकेँ के कहय, अइ दुनिओंसँ कोनो मतलब नइँ । **(कानि उठैत अछि)** हम काल्हिखिन जँ बजार नइँ जइती तँ हमर सूगा नइँ उड़ितय । मखनाक माय अनकर बेटाक करेजा ठंढा करऽ चल गेल आ हमर सोना एक चूरू पानि ले' अहुरिया काइट कऽ मरि गेल । जो गै मखनाक माय, हरी बाबूक करेज ठंढा करैत रहून ।

ठकाइ : कमती ! छातीकेँ पाथर करू, धैरज धऽ कऽ रहू । एहू बेचारीक कोन दोख ? ई हो तँ छाती बज्जर कऽ कऽ गेल हैत । ई की जानऽ गेल जे जाले हम घूरब ताले अपना सिरपर भगवान बज्जर मारि देता ।

पचकौड़ी : हैत कोनो दोसर जनीजाति जे एना असगर बेराम बेटाकेँ छोड़ि कऽ जायत ? हैत एहन दोसर मुखिया जे बिना कसूरेँ जनीजातिपर हाथ उठाओत ?

(धरणीधर एवं जयकान्तक प्रवेश)

सुगिया : **(धरणीधरकेँ आगाँसँ घेड़ैत)** धरनी बौआ औ धरनी बौआ ! अहाँ अइ मनसाकेँ कने बुझबिऔ । ई जाइ छै बरहम बाबाकेँ कोड़ि कऽ फेकै लेल ।

पचकौड़ी : ई बरहम कहाँसँ अयला ? ई माँटि के ढेरी छिका । बरहम रहितैथ तँ हमरो मिनती सुनने रहितैथ ।

धरणीधर : कमती ! विपत्तिमे धैर्य राखब तँ पुरुषक लक्षणे थिकैक । हमसब बुझैत छी जे अहाँक संग अन्याय भेल अछि ।

पचकौड़ी : अन्याय नइँ कहू औ बाबू ! घोर अन्याय ! महा अन्याय !

जयकान्त : सेहो गामक मुखिया द्वारा ।

पचकौड़ी : नइँ औ बाबू ! हम से नइँ मानब । अहाँसब मिलिकऽ ई अन्याय केली गऽ । जकरा पुस्तपुस्तैनसँ गरीबक सोनित पीबैक लुतुक छै, तेकरा गामक मुखिया बनबैत गेली ।

धरणीधर : ठीक कहै छी कमती । जाधरि टाकासँ बोट बिकाइत रहतैक ताधरि कोनो अधिकार रुपैएबलाक हाथमे रहतैक ।

जयकान्त : मुदा कमती ! एखन जे मोनक तामस अहाँ माँटिक ब्रह्मपर झाड़ऽ जाइत छी से ठीक नहि । कारण, भारतक जनता धर्मान्ध अछि । एखनो ओकरा एहि माँटिक ब्रह्मपर जतेक श्रद्धा ओ विश्वास छैक ततेक जनता जर्नादनपर नहि ।

धरणीधर : वास्तवमे गरीबेक सेवा भगवानक असल सेवा थिकनि, यैह गान्धीजीक जीवन-दर्शन थिकनि। एही आधारपर ओ ग्रामराज्यमे रामराज्यक स्वप्न देखैत छलाह, मुदा एखनो भारतमे 'धनकेँ बाजय घाँटी'बला बात छैक। अहाँ घबड़ाउ नहि, सब ठीक भऽ जयतैक।

पचकौड़ी : सब ठीक भऽ जाय, अहाँ ठीक भऽ जाइ, सोँसे समाज ठीक भऽ जाय, सौंसे देश ठीक भऽ जाय, ई दुनियाँ किऐक ने ठीक भऽ जाय, महज हमर ई फूटल कपार तँ नइँ ठीक हैत। हमर सोना जे हमरासँ छिना गेल, ओकरा घुरा कऽ देबैबला अइ दुनियामे क्यो ने ऐछ।

धरणीधर : देखू कमती ! होइत छैक वैह जे भगवानक इच्छा रहैत छनि। तखन ओकर कारण किछु एहन भऽ जाइत छैक जे मोहान्ध प्राणी ओही कारणकेँ दोषी बूझि लैत अछि। मुदा, आन एकर उपाय छैके ने, केवल धैर्य, केवल धैर्य, तेँ चित्तकेँ स्थिर करू। आब समय बहुत बदलि गेलैक अछि। अहाँ एक दिन गामक लोककेँ एकट्ठा करू। हमसब वचन दैत छी जे अहाँक दिससँ हमसब जीजान लगा देब।

पचकौड़ी : हम बुझैत छिऐ जे मुखियाजी हमरा पर किऐ बिगड़ल छैथ।

धरणीधर : किऐक ?

पचकौड़ी : मुखिया-चुनावमे हम हुनकरा भोट नइँ देलियनि।

जयकान्त : मुदा हरि बाबूकेँ एकर पता कोना लगलनि जे के हुनका बोट देलकनि आ के नहि देलकनि ?

ठकाइ : मालिक ! बड़का लोकक जाल कत्ते दूर धरि पसरल रहै छै से तँ अहाँ आउर बुझिते छिऐ। ई कमती जे ऐछ से बेचारा हिरदयकेँ बड़ा साफ आदमी ऐछ। कैक गोड़ेकेँ ई कहलकै जे जइ अन्यायसँ महात्मा गान्धीजी समाजकेँ बचबै लेल ग्राम-पंचायत बनबऽ चाहलनि, फेर ओहेन आदमीकेँ भोट दऽकऽ हमरा आउर अन्याय नइँ बेसाहब। क्यो जाकऽ कहने हेतनि। बस, ओही दिनसँ हरी बाबू कमतीसँ बिगड़ल रहै छथिन। बरोबरि ताकमे लागल रहै छलखिन जे कखनी गऽर पायब जे एकरा चित्त कऽ देब।

जयकान्त : ओ, एहि द्वारेँ नूनूबच्चा कहैत छलैक लीडर साहेबक श्रीमतीजी !

धरणीधर : ई कोन गऽर भेटलनि हरी बाबूकेँ ? हम तँ बुझैत छी जे एहि बेर ओ एकदम कुगरमे पकड़ा गेलाह अछि। कमती ! अहाँ गामक लोककेँ बैसाउ, फेर देखब जे लोक कोना हुनकर एहि करनीपर थूकैत छनि।

जयकान्त : कमती ! आब अहाँ घूरि जाउ । ब्रह्मके कोड़लासँ तँ भरि गामक लोक अनेरे अहाँसँ बिगड़ि जायत ।

पचकौड़ी : से तँ ठीके कहै छी बाबू ! बेस... (सब चल जाइत अछि)

छठम दृश्य

(एक भागसँ फोचाइ आ दोसर भागसँ ठकाइक प्रवेश)

फोचाइ : की हौ ठकाइ ! सुनलहककहनि जे ई पचकौड़ी कमती कोदाइर लऽकऽ बरहम बाबाक थानकेँ कोड़ै लेल गेल छलै गऽ ?

ठकाइ : हौ जी भाइ फोचाइ ! जकरापर बीतै छै सेहे महिरम बूझै छै । देखहक जे गोड़ साते धीया-पूता सुगियाकेँ भगवान देलखिन, महज देखै ले' एक गो मखने बँचल छलइ । जेकरा एक्के गो बेटा रहै छै से अइ पीरकेँ बुझतै, तूँ की जानऽ गेलहक ? आब तँ बेचारा केँ 'रहा न कुल कोइ रोबन हारा' तेकरे पइर भेलै । ओक्कर माथा नइँ खराब होइ तँ कक्कर होइ ?

फोचाइ : माथा खराबक नामपर तऽ क्यो केकरो घरमे आइग नइँ लगा देतै ! भगवानकेँ जे इच्छा भेलैन से केलखिन, क्यो ओकरा माइर तँ नइँ देलकै जे बाबा माथा खराब भऽ गेलै ।

ठकाइ : एना तँ भ्गवानक इच्छा सबसँ बढ़ि कऽ, महज एकरा जरे एक गो खास बात तँ भइए गेलै । तूँही कनी सोचहक जे बेराम बेटा लग साँझ भरली पाँच मिनिट ठड़ा होइ ले' मुखियाजीक बेटाकेँ कहबे केलकनि तँ मुखियाजीक इज्जतिमे कोनो बट्टा नहिँ लाइग गेलनि आ अही अपराधमे ओकरा माइर बैसलखिन । सुगिया गामक धी-बेटी छिकै कि नइँ ?

फोचाइ : तऽ तोहर मतलब ऐहे जे मुखियाजी दोखी छैथ । रहौथ । महज डिहवार तऽ सौंसे गौंआँके छथिन, डिहबारके जे कोड़त तेकर घर-घराड़ी गौआँ कोड़ि कऽ फेकि देतै । ऊ आन गामसँ आबिकऽ अइ गाममे बसि गेल ऐछ, ऊ गामक इज्जति की बुझतै ?

ठकाइ : कमती एहन अनबूझ लोक नइँ ऐछ ।

फोचाइ : अनबूझ रहैत तऽ मुखियाक भोटमे लीडरी करऽ केना जाइत ?

ठकाइ : ई तँ अपन-अपन बिचार छिऐ । ककरो एकपर सर्धा तँ ककरो दोसरपर ।

फोचाइ : तऽ कमतीकेँ हरीबाबूपर सर्धा नइँ भेलै तऽ ऊ मुखिया भेलखिन की बाँकी रहलखिन ?

ठकाइ : तँ तेकर माने ई कहाँ होइ छै जे जेकरा चाहथिन तेकरा पीस देथिन ।

फोचाइ : ऊ तऽ हरीबाबू छलैथ जे दरबज्जा चैढ़कऽ कमती हुनका बेटाकेँ मुँहमे समतोला नेमो कोइँच देलकै तैयो नइँ किच्छो बजलखिन । आन रहितै तऽ मारै जुत्ताकेँ पीठीक खाल खीच लितै ।

ठकाइ : पैरमे जूत्ता पेन्हबाक तँ सेहन्ते हेतऽ तखनी मुँहसँ ई जूत्ता केना निकैल रहलऽहे ?

फोचाइ : ई जूत्ता निकलै छै डिहबारकेँ कोइड़कऽ फेकैबलाके पीठपर टूटै लेल । एमरी देखै छिऐ कोन मर्द कमतीकेँ बचबै छै ?

ठकाइ : जाह–जाह, पोसा कुकुर जकती भूकैत रहऽ ।

(मुँह बनबैत, नाक फरकबैत फोचाइ चल जाइत अछि । ठकाइ दर्शक दिस तकैत रहैत अछि । परदा खसैत अछि ।)

(स्थान- ग्राम-कचहरी । हरिवंश बाबू, धरीणधर, जयकान्त, चिरंजीव, फोचाइ, पचकौड़ी, सब बैसल । सुगिया ठाढ़ि अछि । गौआँसब चारू भाग ठाढ़ अछि ।)

फोचाइ : रे भाइसब ! जे जाइ ठिन छेँ ओही ठिन बैस जो । **(कहैत कान्ह पकड़ि बैसबऽ लगैत अछि । नूनूबच्चा फानिकऽ मुखियाजीक उच्चासनपर बैसि जाइत अछि)**

चिरंजीव : **(ठाढ़ भऽ)** अहाँलोकनिकेँ बूझल होयत जे आइ एहि न्यायालयमे किऐक उपस्थित भेल छी ?

फोचाइ : जी सरकार ! पचकौड़ी कमती जे करनी केलकहनि से केकरा नइँ बूझल छै । एकर निसाफ चाही ।

धरणीधर : **(ठाढ़ भऽ)** हमरासबकेँ नहि बूझल अछि जे पचकौड़ी कतऽ की कयलक अछि । हम सरपंचसँ आग्रह करबनि जे ओ एहिपर प्रकाश देथि ।

चिरंजीव : **(ठाढ़ भऽ)** प्रकाशे प्रकाश अछि । कमती डिहबारकेँ कोड़िकऽ फेकऽ जाइत छल । समाजकेँ अधिकार छैक जे ओकरासँ जबाब तलब करैक ।

धरणीधर : हम पूछऽ चाहैत छी जे डिहबारक माने की ? हिनकर पूजा हमसब किऐक करैत छियनि ?

हरीबाबू : डिहबार माने ग्रामदेवता, ब्रह्म, आर की ? हमरासभक रक्षक थिकाह, तेँ पूजा करैत छियनि ।

धरणीधर : देवता थिकाह, रक्षक थिकाह । देवता आकाशसँ टपकैत नहि छथिन । अपन चरित्रक बलें, अपना आचरणसँ जे समाजक मार्ग-दर्शन करैत रहलाह, सभक कल्याणकें अपन कल्याण मानलनि, एहने लोक जे समाजमे होइत रहलाह अछि सैह डिहवारक रूपमे आइ धरि पूजित होइत छथि । ब्रह्मस्थान माने न्यायालय । एहिठाम आबि दूधकें दूध आ पानिकें पानि कयनिहार जे असली मुखिया होइत छलाह सैह डिहवार बनि आइ धरि पूजा पाबि रहल छथि ।

जयकान्त : किन्तु आजुक मुखिया ककरोसँ नेहोरा कऽकऽ, ककरो टाका-पाइ दऽकऽ, ककरोपर धाख जमाकऽ आ ककरोसँ जोर-जबर्दस्ती कऽकऽ बोट लैत छथि आ तखन मुखिया बनैत छथि ।

धरणीधर : एही बोटक खातिर आइ हरिवंश बाबू समाजक धार्मिक भावनाकें खोचाड़ि कऽ पचकौड़ी कमतीक प्रति अन्याय करबापर तुलल छथि । समाजलोकनि ! एहन नकली मुखियासँ समाजक नव निर्माण करबाक आशा छोड़ि दियऽ । आइ हमरासभकें असली मुखिया चाही जे अगिला पीढ़ीक हेतु एहि ब्रह्मबाबा जकाँ समाजक व्यक्ति-व्यक्तिक श्रद्धा-पात्र भऽ सकथि । ई ग्राम-कचहरी नवका ब्रह्मस्थान हो ।

सब : हँऽ हँऽ, हमरासबकें असली मुखिया चाही ।

(हरीबाबू चकुआइत छथि । ठकाइ फोचाइ दिस ताकिकऽ मोछ फेर लैत अछि । चिरंजीव विकृत मुद्रा बनौने तकैत रहैत छथि । धरणीधर कमती दिस आ जयकान्त सुगिया दिस प्रसन्न मुद्रामे देखैत रहैत छथि । परदा खसैत अछि ।)

[रचनाकाल 1957 ई.]



मलरवि

पात्र परिचय

डोमन : पिण्डश्याम, 20–25 वर्ष वयस, ठेठी धोती, चरखाना अंगपोछा, कंठी

लखन : गोर, 20–22 वर्ष वयस, गोल गला गंजी, पैजामा

मंगल : पिण्डश्याम, तिलक़ल केश, खुटिआयल दाढ़ी, पैघ मोछ

पुरोहित : गोर, साँची धोती, मैल सन कुर्त्ता, तौनी, चानन ठोप, झोरामे राखल कपड़ामे लेपटायल पोथी, कुश, घंटी, अर्घा, पंचपात्र

काली : प्रौढ़, देहाती वेशभूषा 55–60 वर्ष वयस

पंडितजी : कुर्त्ता तौनी, पाग, चन्दन तिलकित भाल, छड़ी

घुरना : 35–40 वर्ष वयस ठेठी धोती, गोल गला गंजी, मैल अंगपोछा

हकरतिहार : नेना, युवक, तरुण, किशोर, बूढ़, सभक कान्ह पर अंगपोछा, हाथमे गिलास अथवा बाटी ।

पहिल दृश्य

[स्थान- रास्ता, एक दिस सँ डोमन दोसर दिस सँ लखनक प्रवेश]

डोमन : रौ मीता, चल, चल, चल...

लखन : कत्तऽ चलू रौ ! कतउ कोनो भोज छिऐ की जे एना अगुतायल छेँ ?

डोमन : आहि रौ ब्बा... रौ काली कक्काक ओइ ठिन सत्तलरायनक पूजा छिऐ से नइँ बूझल छौ ?

लखन : कथी के पूजा छिऐ ? के करतै पूजा ?

डोमन : काली कक्का के भतीजा मंगला ।

लखन : मंगल जे भोंटमे जितलइ गऽ तेकरे खुसीमे ? बुझलिऔ, महज अखनीए जा कऽ की करबेँ गऽ ? घड़ी-घंट बाजऽ दही ।

डोमन : नइँ रौ, कहाँदुन मंगल पुरहित के कत्थाके अरथो कहे ला कहलकै गऽ सेहो सुनबइ ।

लखन : तखनी चल, महज ए गो बात...

डोमन : की ?

लखन : परसादीमे मोहनभोग, ऊहे, दूधमे केरा आ चिन्नी मिला के मैथ के जे बनबै छै ।

डोमन : सीतल परसाद कही ने ।

लखन : कहूँ सीतल परसाद कहै छै, कहूँ घोरा परसाद आ कहूँ मोहन भोग । महज ओइ ला तऽ कोनो बाटी खाहे गिलास लऽ के ने चलबेँ ? हम आब अङना नइँ जेबउ, तू ही हमरो गिलास आ कि बाटी दऽ दे ।

(लखन जाइत अछि, दूरसँ कीर्तन होयबाक मन्द स्वर सुनि पड़ैत छै, डोमन अकानि कऽ सुनैत अछि । लखन वामा तरहत्थीपर चून-तमाकू आ दहिना हाथमे एक टा बाटी, एक टा गिलास लेने अबैत अछि ।)

लखन : मीता, की ई गिलास आ बाटी अपना हाथ कऽ ले आ की ई तमाकुले चुना । **(कीर्तनक शब्द स्पष्ट होअऽ लगैत छै)**

रामक अहाँ परम प्रिय हनुमन, हमर समाद सुनयबनि हे,
कहबनि हमर दुखक सब घटना, कहि, मन प्रभुक मनयबनि हे ।

डोमन : **(लखनक हाथसँ तमाकू लैत अपन बगुलीसँ चुनौटी बाहर करैत अछि ।)**

लखन : हाँ हाँ, सूझइ नइँ छौ चून देले छै से ?

[परदा उठैत छैक । छोटकी चौकी पर पिठार, सिन्दूर लागल कलसीपर पल्लव, ताहि पर सराइ, पीअर वस्त्र, फूल चानन माला चढ़ाओल चौकीक चारूकोन पर दीप-जरैत, धूपसँ गमगमाइत वातावरण, एक कोहामे सुक्खा प्रसाद, एक बाल्टीमे घोरा प्रसाद, चङेरीमे चूड़ा, छाँछीमे दही, दू हत्था केरा राखल छैक । एक कात काली कल जोड़ने, मंगल पूजाक आसन पर, पुरोहित दोसर कात एक आसन पर, भजनियाँ मण्डली एक कात, हकार पुरनिहार सब दोसर कात बैसल देखि पड़ैत अछि । भजन चलि रहल छै लखन आ डोमन भजनियाँ मण्डलीमे जा कऽ बैसैत अछि–]

डोमन : रघुपति राघव राजा राम.... (**सब गोटे**) हमर समाद सुनयबनि हे

लखन : पतीत पावन सीताराम... (**सब गोटे**) हमर समाद सुनयबनि हे

(**सम्मिलित स्वरमे**) रामक अहाँ परम प्रिय हनुमन....

पुरोहित : आब भजन बन्द करू। (**मंगलसँ**) जल लऽ पढ़ह

इदं भरि तौला सुक्खा परसादं भगवते श्री सत्तरनारायनाय नमः

मंगल : इदं भरि तौला सुक्खा परसादं भगवते सिरीसत्तलरायनाय नमहँऽ

पुरोहित : इदं बाल्टीभरि मोहनभोगं भगवते श्री सत्तनरायनाय नमः

मंगल : इदं बाल्टीभरि मोहनभोगं सिरी सत्तनारायण नमहँऽ ।

पुरोहित : इदं चूड़ा दही सहितं रम्भाफलं भगवत्ते श्री सत्त नरायनाय नमः ।

मंगल : इदं चूरा दही सहितं रंभा फलं सिरी सत्तलरायनाय नमहँऽ ।

पुरोहित : होअह यजमान, आब आरती लेसह। (**आरती लेसल जाइछ, मंगल आरती लऽ प्रदक्षिणा करैत अछि**)

पुरोहित : जानी कानी जपापानी ब्रह्म हत्या समानीच

तानी तानी प्रनस्यन्ती पर दच्छिन पऽदे पऽदे ।

(**यजमान संग पढ़ैत चारि बेर चारू कात घूमि जाइत अछि**)

काली : पुरहित, कनी कत्था के अरथ सेहो कहले जेबइ ।

पुरोहित : बेस, तऽ सुनू, त्वमेव माता चपिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्चसखा त्वमेव त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव । भगवानकेँ भक्त कहै छनि– अहीं माता छी माने जनम दै छी, चपिता त्वमेव माने कंठ चापि दै छी या ने मारि दै छी, अहीं बन्धु माने हीत-अपेक्षित छी आ चसखा माने बीड़ी, सिकरेट, ताड़ी, दारू पर मनकेँ चसका दै छी । अहीं विद्या छी, अही धन दौलतछी, अहीं सब किछु देव हे भगवान ।

काली : हाय रे हमरा आउर के पुरहित, केहन निम्मन कऽ बुझा देलैथ ।

पुरोहित : आगाँ सुनू– जयन्ती मंगला काली वज्र काली कपालिनी दुर्गा क्षमा सिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोस्तुते । अर्थात् मंगल के जे जीत भेलनि से विरोधी पर बज्जर खसलै कालीक पालन केनिहारि साच्छात दुर्गा छथिन, हिनका सिवा बैरी के सोधि कऽ स्वाहा के कऽ सकितय तेँ नमो कहि कऽ इस्तुति करै छी ।

डोमन : हमरा आउर के पुरहित खाली पंडीत नइँ ने, विदवान छथीन विदवान ।

मंगल : पुरहित, आब केत्ते बाँकी ऐछ ? हाली हाली करिती, भूखो लागल ऐछ ।

पुरोहित : भऽ गेल, आब दच्छिना करू, चरनामृत लिअऽ, पाँच गोट ब्राह्मणकेँ अपने हाथेँ परसादी दऽकऽ अपनो परसादी पाबि लिअऽ ।

मंगल : महज पाँच गोड़े बराहमन छैथ कहाँ ?

पुरोहित : अरे पाँच गोटे नहि छथि तँ पाँच बाकुट सुक्खा हमरे गमछा पर आ पाँच ओड़िका मोहनभोग हमरे लोटामे दऽ दिऔ ।

काली : पुरहीत, लबका पतरा लउले छी ? तनी एमरी के समय साल केहन हेतइ से कहिती ।

पुरोहित : नवका पतड़ा रहत किए ने ? (**जल्दी-जल्दी पन्ना पलटैत**) हौ काली राउत, एहि साल तँ बड़ भारी ग्रह लिखै छह पतड़ामे

काली : से की औ पुरहीत ।

पुरोहित : देखह, कार्तिकमे जे गरुड़ पुरान सुनने रहऽ तकर प्रत्यक्ष फल भेटि गेलह जे भातिज माने मंगल एहन भारी दंगलमे सबकेँ पछाड़ि भोट जीति गेलह ।

काली : से तँ साँचे ।

पुरोहित : ओहिमे लिखल छै जे रवि दिन जे क्यो दूध बेचैत छथि वा आधा ब्राह्मणकेँ बिना दान कयने खाइ छथि से सात जन्म अपुत्रे भऽ मरैत छथि । देखह शास्त्रमे साफ लिखल छै– ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणोमृता...

काली : पुरहीत, अहाँ देखइ छिकी जे जहिया सँ ऊ सुनौली, हमरा आउर ताही दिन सँ आधा दूध अहाँ के भेज दइ छी । अहू साल की लिखै छै ?

पुरोहित : एहि साल वृहस्पति नहि हेतह । महाभारत मे भेल रहैक । जेना मलमास होइ छै तहिना मलरवि । आइ सकराँइत थिकै, काल्हि सँ नबका साल शुरू आजुक वृहस्पति सँ मलरवि लागू ।

मंगल : मल रवि होइ छइ तऽ आर की होइ छै पुरहीत ?

पुरोहित : शास्त्रमे लिखै छै– मधुब्बाता रितायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माघ्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्त मुतोषसो... माने आममे मधुआ लागय, समुद्र सँ सेन्धा नोन बहराय आकाश सँ देवता सभक मूत धरती पर खसय ।

काली : पुरहीत, एना पहिले कहिओ भेलो छै ?

पुरोहित	:	कहलियह नहि जे तकरे बाद महाभारत भेल रहै । अच्छा आब दच्छिना लाबह चरनामृत बाँटह आ परसाद उठाबह ।

(परदा खसैत अछि)

दोसर दृश्य

[स्थान रास्ता, मंच पर झलफल अन्हार । आगाँ आगाँ पण्डितजी पाछाँ घुरना खबास, कमलक मोटा पर उपर सँ एक भाग लोटा दोसर भाग एक जोड़ खराम लटकल तकरा माथ पर रखने]

पण्डितजी	:	**(खबासक संग प्रवेश करैत)** रौ घुरना, साँझ पड़ि गेलैक । आगाँ बड़का पाँतर छैक । बाट सुनै छिऐ बड़ मारूख छैक । कतहु एही गाममे राति बिता ली सैह उचित ।
घुरना	:	**(नेपथ्य दिस आङुर देखबैत)** सरकार, ओन्नऽ देखइ छियइ एगो झमटगर गाछ आ ओहीठिन कोनो इसकूल तिसकूल बुझाइयऽ । एगो पानीके कल सेहो, चलू ओही ठिन राइत बिता लेब । **(एक दिस सँ प्रस्थान करैत छथि, परदा उठैत अछि स्कूलक घर देखि पड़ैछ)**
पण्डितजी	:	घुरना, मोटा फोल, कम्मल ओछा, ता हमरा लोटा आ खराम दऽ दे हम कलपरसँ हाथ पैर धोने अबैत छी । **(घुरना खराम लोटा दऽ कम्मल ओछबैछ, पण्डितजी लोटा भरि पानि लेने घुरैत बजैत छथि– (स्वगत)** बूझि पड़ैत अछि एहि वस्तीक लोक माल-जाल खूब पोसने अछि । अपने थोड़े दूध मङा ली आ सैह पीबि ली । घुरना लै चूड़ा गूड़ छैके, खा लेत **(प्रकट)** रौ घुरना !
घुरना	:	जी सरकार !
पण्डितजी	:	ई लोटा आ कैञ्चा लऽ ले आ टोल पर सँ सेर भरि दूध लऽ आन । तोँ चूड़ा गूड़ खा लिहेँ आ हम दूधे पीबि राति काटि लेब ।
घुरना	:	**(लोटा आ पाइ लऽ आगाँ बढ़ैत)** किएक ने, भरिबाट मोटा उघैत-उघैत घेंट टेढ भेल हमर से हम चुड़ेठल जाइ आ ई बरु दूधे पीबिकऽ कहुना राति काटि लेता । जेना दूध पीबामे बड़ तकलीफ होइ छै । बेस हमहू दिनुका पझायल दूध लऽ अनै छी, चूड़ामे थोड़े छाल्हिए औसि देबै । **(घुरना चल जाइत अछि ।)** पण्डितजी झोरामे सँ गंगाजलक शीशी बाहर कऽ सिक्त करैत ओम् नमः शिवाय जोर-जोरसँ पाठ करऽ लगैत छथि ।

घुरना : **(किछु कालक बाद लोटा डोलबैत प्रवेश कऽ)** सरकार, दूध देबऽ कहलिऐ तऽ मार मार कऽ छूटल ।

पण्डितजी : से किए ?

घुरना : कहलक जे बलू आइ मलरैव दिन हिनकराहाथे दूध बेचि कऽ के निपुत्तर होत ।

पण्डितजी : ई मलरवि की होइ छै रओ ।

घुरना : मर, सास्तर-पुरान पढ़ली सरकार अपने, पुछै छिकी हमरा ? हम तऽ कहलिऐ बलू आइ बेरस्पैत छिऐ ।

पण्डितजी : खौ ताहि के ? ई कोन लोकक बस्ती थिकै ?

घुरना : ऊहे साठि बरख बला आउर के ।

पण्डितजी : चल तँ हम अपने चलै छी ।

घुरना : हँऽ सरकार, अइ ठिन तऽ आब अन्हारो भऽ गेल, पहिले तऽ से सोचबो ने कइली । **(हाँइ हाँइ कम्मल समेटि मोटा बन्हैत अछि, परदा खसैत अछि)**

तेसर दृश्य

[स्थान रास्ता, पण्डितजी घुरनाक संग प्रवेश करैत]

पण्डितजी : की रौ घुरना घुरिते रहबेँ कि जगह पर पहुँचबो करबेँ ?

घुरना : **(नेपथ्य दिस इशारा करैत)** हे वैह सरकार, उँचका दूरा जे देखै छिऐ, ओही ठिन हमरा पर मार मार कऽ छूटल छल गऽ । **(दूनूक प्रस्थान, परदा उठैत अछि, कालीक दलान देखि पड़ैछ जाहि ठाम काली, मंगल, डोमन, लखन गप्प करैत-)**

डोमन : ऊ नङटवा जे आयल छल गऽ दूध कीने ला, ऊ मानबे ने करै छल गऽ जे आइ मलरैव छिअइ । हम बड़ी जोर सऽ हुरपेटली तऽ भागल ।

लखन : ऊ हमरो ओइ ठिन गेल छल गऽ ।

काली : की कहलही ।

लखन : कहलिऐ मखानक पातसँ मूँह पोइछ कऽ आ गऽ, कहलकै जे आइ मल रैव दिन हिनकरा दूध देबनि, **(घुरनाक संग पण्डित जी प्रवेश करैत छथि)**

मंगल : परनाम पन्डीजी, कहाँ रहै छिकी ?

पण्डितजी : निकेँ रहह, हम पछवारि गाम रहै छी ।

काली : एन्नऽ कहाँ चलली गऽ ?

पण्डितजी : जयबाक अछि परिक्रमा मे जनकपुर । एहि गाममे साँझ पड़ि गेल तँ ब्रह्मक थान तर स्कूल पर बिलमि गेलहुँ । एकरा लोटा लऽकऽ दूध कीनि आनऽ कहलिऐ.....

लखन : **(बात लोकैत)** आइ मलरैव कऽ दूध के देत ?

पण्डितजी : ई मलरवि की होइ छै से हम नहि बुझलिऐ ।

डोमन : अपने पन्डीजी छी आ तखनी अहीं पुछै छिकी ।

लखन : औ पण्डीजी, अपने आउर के पतरामे उचरलहेँ जे जेना महाभारथमे एगारह गो गरह एकट्ठा भेलै आ रैव बेरस्पति के छापि लेलकै तऽ ओतना भारी लड़ाइ भेलै ।

मंगल : मलरैव कऽ दूध बेच के अपन पित्तर के के नरक पठाउत ?

पण्डितजी : ई अंटसंट बात तोरा सबकेँ के कहलकह अछि ?

काली : पुरहीत कहलनि गऽ ।

पण्डितजी : बजावह तँ पुरोहितकेँ ।

काली : हौ डोमन, तनी बोला लबहुन तऽ **(डोमन जोरसँ हाक पाड़ैत अछि– पुरहीत छिकी यौऽऽऽ)**

काली : एही ठिन सऽ डिंड़िआय लगलऽ कि दौगिकऽ जेबऽ । **(पण्डितजीसँ)** ताले बैठू पण्डितजी **(नेपथ्य सँ ध्वनि अबैछ)** के थिकेँ रौऽऽऽ, यैह अबै छी । **(पुरोहित प्रवेश करैत)**

पुरोहित : की थिकौ जे एना साँझे पहर देबऽ लगलेँ ?

डोमन : अबियौ पुरहीत, ए गो पन्डीजी एलखिन गऽ, ऊ बलू कहै छथीन जे मलरैव के मादे ई अंटसंट के कहि देलखुनहेँ । आइ ऊ अहाँ केँ पोंपरड़ा उठउता ।

पुरोहित : कोन मर्द माइक दूध पीने अछि जे कर्मकाण्ड धुरन्धर पुरोहिताचार्य पण्डित श्री गुणेश्वर झा कें पोंपरड़ा उठा सकैत छनि । हम सुकरातीक बड़द जकाँ काँड़ी लऽकऽ बकाइन पिया देबनि, हूरा हूरीक सूगर जकाँ से हुरपेटबनि जे चें चें करऽ लगताह । हम कोदो दऽकऽ नहि ने पढ़ने छी । (**पण्डितजी दिस ताकि**) नमस्कार, नमस्कार, एह् कते दिन पर भेट भेल । तों एमहर कोना ?

पण्डितजी : (**अपरिचित रहलाक कारणें अकचकाइत**) नमस्कार, परन्तु महानुभाव, हम अपने कें चिन्हलहुँ नहि ।

पुरोहित : संगे संग कर्म कुटलहुँ ओतेक दिन, आइ तों हमरा चिन्हबो ने कयलह । विद्यार्थीओ जीवन मे तँ बिनु कूटल सिलौट रहह । स्मरण छह, गुरुजी सन सुधंग लोक सेहो तोहर भुसकौलपनीपर एके कनैठीसँ कान लाल कऽ देलथुन आ तों कानऽ लगलाह ।

पण्डितजी : (**आगाँ बढ़ि दर्शकसँ**) ई तँ असाधारण धूर्त्त लोक बुझाइत अछि । हमरा आइ पहिले भेट थीक । (**पुरोहित सँ**) धूर्त्तराज महोदय, ई मलरवि की थिकै ?

पुरोहित : जखन गुरुजी सन विद्वान लोक तोरा नहि बुझा सकलथुन तखन हमर साध्य थीक ? सुनह जनकोपनिषदमे लिखल छैक जर्नादनं जनानन्दं जानकी वल्लभं जयम्' तों तँ जनकोपनिषदक नामो ने सुनने होयबहक, पढ़बाक कोन कथा । ओ देवाक्षर अथवा मिथिलाक्षरमे तँ छैक नहि, छै भूताक्षरमे

पण्डितजी : ई भूताक्षर कोन पिशाच सँ अहाँ सिखलहुँ ?

पुरोहित : असलमे ओहि अक्षरक नाम थिकै मूत्राक्षर, धीरे धीरे भूताक्षर लोक कहऽ लगलै । ओहिमे सँ एकेटा अक्षर हम लिखि दैत छियह, पढ़ि लैह तँ हम बुझियह ।

लखन : हँऽ पुरहीत, अखनीएँ जाँइच लिऔन, हम बलू पिढ़िया आनि दै छी (**एकटा तख्ता आ माँटिक ढेप आनि कऽ दैत छनि । पुरोहित सर्पाकार टेढ़ कऽ एकटा डाँड़ि पाड़ि कऽ देखबैत-**)

पुरोहित : कहह ई कोन अक्षर भेलै ?

पण्डितजी : ई कोनो अक्षर नहि भेलैक ।

पुरोहित : काली, मंगल, डोमन, लखन, तोँहू सब देखहक आ सुनैत जाह । मिथिलामे पड़लै बड़का अकाल । ऋषि–मुनि आबि कऽ जनक महाराजकेँ कहलथिन जे अपने जँ हऽर जोति दिऐ तँ अकाल दूर भऽ जायत । प्रजावत्सल जनक जी महाराज गछि लेलथिन । अढ़ाइए आँतर भेलनि कि बड़दमूतऽ लगलै ता सिराउरसँ जानकी जी उखड़ि गेलथिन, जनक जी हऽ कहि कऽ बड़दकेँ ठाढ़ होअऽ कहलथिन आ हुलसि कऽ जानकी जीकेँ उठा लेलथिन । बड़द जे मुतने रहै ताहि चेन्ह केँ कहलथिन बड़दमुत्ताहऽ । देखैत जाहक भेलै ने बड़दमुत्ता हऽ ?

सब : हँऽ पुरहीत, ई तऽ हमरो आउर पैढ़ लैबै ।

काली : पंडीजी, हमरा आउरके पुरहीत बड़ी विदवान छैथ । अहाँ हारि गेली से हारि गेली, महज बेराहमन छी, अभियागत भेली, सत्तलरायनके पूजा छल गऽ, दही के छाँछी तऽ पुरहीत लऽ गेला, महज मोहनभोग परसादी कुच्छो बँचल ऐछ । हाथ पैर धोलू आ ओही जऽरे दू मुट्ठी चूड़ा मिलाके भोजन कऽ लू, हमरा पुन्न होत आ अहाँ के आराम **(ला रे लखन पाइन आ पत्ता)**

घुरना : भगमान भगमाने छथि, हमरो कुइछ पऽरि लगबे करत ।

(परदा खसैत अछि)

[रचनाकाल 1961 ई.]



Scanned by CamScanner

घरैया लूरि

पात्र-परिचय

विसुनदेव	:	अधवयसू युवक, ठेहुन धरि धोती, गंजी देहाती ।
विसेस्सर	:	अधवयसू युवक, बावरी परसँ तेल चुमैत, हाफ सर्ट, जूता ।
सुकनी	:	(विष्णुदेवक स्त्री) हाथमे लहठी नाक परसँ सिंउथ धरि सिन्दूर ।
मनचन	:	पैंसठि वर्षक बूढ़, ठट्ठा धोती, कान्ह पर अंगपोछा, हाथमे पेना ।
धनिञा	:	विसेस्सरक बहीन, तेरह-चौदह वयस, ब्लाउज, साड़ी, टिकुली, पाटी ।
महेन्द्रबाबू	:	अधवयसू युवक, उज्जर धोती, उज्जर तौनी, श्रीखण्डक ठोप ।
गोविन्द मिस्त्री	:	बीस-बाइसक वंयस, पट्टी छटौने, गर्दनिमे कारी तागक कंठी ।
झिंगूर चमार	:	तीस-बत्तीसक वयस, कौपीन आ फाटल मैल अंगपोछा ।
सैनी ठठेरी	:	तीस-बत्तीसक वयस, गंजी, रुच्छकेश, भड़कदार मोछ ।
		एक अबोध नेना-माटिमे लेटाएल, केश छिड़िआएल ।
उपकरण	:	बटुआ, पैना, कुट्टी काटक हाँसू, लोटा, पीढ़ी, थारी, भोजनक समान, कागत, कजरओटा, गहनाक पोटरी, चौकी, सूटकेश, कपड़ाक मोटा, ढोलक, झालि, पटिआ, एक मुट्ठीनार, एक नूड़ी बाँसक पात, मालक डोरी आदि ।

पहिल दृश्य

(स्थान- गामक चौपाड़ि, समय सन्ध्या, मंचपर धूमिल प्रकाश, बटुआक मुँह फोलैत विसुनदेवक प्रवेश)

बटुओ आइ मुहेँ बबैत अछि । एक चुटकी एहिमे तमाकू नहि । भिनसरसँ साँझ धरि खटैत-खटैत पीठक रीढ़ टूटि जाइत अछि आ ई पेट छूटल गोनू झाक ढाकी भऽ गेल । **(दूनू हाथकेँ डाँड़ पर राखि पीठक रीढ़ सोझ करैत)** बूझि पड़ैत अछि जे भगवानो आब कनहा नछत्तर जकाँ एके दिस बरिसऽ जनै छथि । नेनामे माय बाप चाहलक जे बाबू भैयाक नेना-भुटका जकाँ हमरो विसुनमा लिखत-पढ़त तऽ कतहु हाकिम भऽ जायत ।

लोक तऽ बुझैत छैक जे पढ़ब-गुनब सन सुभितगर काज कोनो नहि । ने रौदमे टटाउ, ने बरखामे भीजू, ने माटिमे लेटाउ, ने कपारक पसेना एँड़ी पर दऽ चुआउ । कागत पिलसिम लिअऽ । इसकूल जाउ, पढ़ू-लिखू, चल आउ । आङनमे रोआव झाड़ू सभसँ कने बेसी कऽ नीक निकुत खाउ आ ललबबुआ बनल ढहनाइत रहू । मुदा ई तऽ ककरो बूझले नहि जे मास्टर सभ यमराजक पित्ती होइ छथि । एक बेरि आँखि गुड़ारलन्हि कि हुक्का जेकाँ पेटक पानि गुड़गुड़ा उठैत छल । **(कनपट्टी पर चटकनसँ मारैत)** आरओ तोरी नाङड़िमे, मच्छड़े सभकेँ असल सोराज भेटल छैक । साँझेसँ सारंगी गोङिआबऽ लगैत अछि ।

(तमाकू चुनबैत विसेस्सरक प्रवेश) की रौ यरवा । अपनहि मुँहमे अपने थापड़ किएक मारैत छेँ ?

विसुनदेव : हओ विसेस्सर भैया ! ई मङलीक माय, माने तोरे जे भाबहु छह, से अछि नबाबक बेटी । टोला परोसामे जतऽ कतहु बुलतह-चुलतह, जकरा ओइठाँ जे चीज देखतह, लत्ता-कपड़ा, गहना-गुरिया, से सब कहत जे बेटी लै कीनि लाबह । रौ बहि, तोँ जे मौजे तेलीक देखाउस करबेँ, तोँ जे चाहबेँ जे मिट्ठू मिस्त्रीक बहु जकाँ नुआ-फट्टा सीटब से कोना जुटतउ, तोँ जे सिंगार-पटार करबेँ से छजतउ ? हम भरि दिन रौदमे टटाइ छी तँ तेरह गंडी सेरसँ चारि सेर पबइ छी । दुनू साँझ पेट भरि जाउक तँ बूझ एक लाख । एह, तोरा तमाकू चुनबैत देखलिअह तँ पेटमे दम आयल । देखह ने, हमर बटुआ कमला कातक दड़ारि जकाँ मुह बओने अछि । कखनहु कऽ एक चुटकी तमाकुलो अकाबरी सोन बुझाइत अछि । तोरा हाथक तमाकुल खयनो बहुत दिन भऽ गेल छल ।

विसेस्सर : आङनमे कथी लेल गरजइ छलेँ हेँ ?

विसुनदेव : हओ विसेस्सर भाइ ! जनीजातिक दुआरेँ नाक दम ठेकल अछि । तोँ बहुत दिनसँ कलकत्तामे रहइ छह । एमरीदा हमरा सङ नेने चलह । गाममे आब ने जीबइ छी ने मरइ छी, हुकुर-हुकुर करइ छी !

विसेस्सर : लऽ जाइ ले की ? तोँ की कोनो हमरा कनहा पर चढ़िकेँ जेबेँ जे हमरा भारी लागत ? अपन पाइ, अपन टिकट । हूँ, कलकत्ता जयबाक किराया, मास दू मासमे जेँ नोकरी भेटतउ तेँ ततेक दिन धरि रहबाक खर्च, से सब जुटा ले तखन चल, मुदा ई बात कह जे तोँ नोकरी कोन करबेँ ?

विसुनदेव : जे भेटि जयतैक ।

विसेस्सर : कोनो चटिआकेँ खानगी पढ़ा सकबिही ?

विसुनदेव : तोँहू हमरा सङ ठट्ठा करैत छह । सङे-सङ तँ दूनू गोटे इसकूलमे पढ़ैत रही । जोड़ घटाव धरि तोँ पढ़लह आ अढ़ैया हुट्ठा धरि हम पढ़लहुँ । अपन नाँओ-गाँओ कोनहुना लिखि लैत छी ।

विसेस्सर : प्रेसमे पोथी छापल हेतउ, मोटर चला सकबिही; मधुर बनबऽ अबैत छउ; आमलेट, कटलेट, चौप, पोलाव, ई सभ बना सकैत छेँ ?

विसुनदेव : पोथी छापऽ अबितिय, मोटरक डरेबरी करऽ जनितहुँ तँ दरभंगे मधुबनीमे किएक ने रहितहुँ ? मधुर जे बनबऽ आओत से की हम हलुआइ छी ।

विसेस्सर : भनसियाक काज हेतौ ?

विसुनदेव : ई काज कोनो भारी त नहि भेलै, मुदा हम अछोप भऽकऽ ई काज कोना करब ?

विसेस्सर : अछोप-तछोप आब धेले छइ ?

विसुनदेव : से तँ महात्मा गान्धीजीक किरपासँ सभ मेटा गेलइ, मुदा अपन इमान धरम तँ संगे रहत ।

विसेस्सर : रओ इमान धरम लऽकऽ चलनिहार लोकक निर्वाह शहर बजारमे नहि होइ छइ । मुदा चलबासँ पहिने नीक जकाँ सोचि ले ।

(दूरसँ सोर करबाक ध्वनि– हौ विसेस्सर भैया छऽ हौ, हौ भानस भऽ गेलऽ हौ)

विसेस्सर : अच्छा इयार ! एखन जो, हमर भानस भऽ गेलौ, जाइ छी खाइले । हम सोचैत छिऔक जे तोरा की करक चाहिअउ, तोँहू नीक जकाँ सोचि ले । **(दूनू दुनू दिशि चल जाइत अछि ।)**

[परदा खसैत अछि]

दोसर दृश्य

(स्थान- विसुनदेवक आङन, ओकर स्त्री छोटका नेना पर बिगड़ल थापड़सँ पीठ पर मारि रहल छैक । परदा उठैत अछि ।)

सुकनी : ई टिकजरुआ पेरि कऽ छोड़ि देलक, आइ हम तोहर सराध करइ छी । **(दू चाट आरो मारैत छैक, विसुनदेवक प्रवेश)**

विसुनदेव : दे चारि लात ऊपरसँ आरो, थापड़सँ ई की बुझतउ ? जावत जीवइ छउ तावत सेहन्ता पूर कऽ ले । **(नेनाकेँ उठा लैत अछि)**

सुकनी : साँझ जे आङनसँ बहरयलह से पहिल पहर राति बिता देलह । घरक कोन चिन्ता, कोन फिकिर ? हम एकसरिए एहि टिकजरुआ सभक सराध करैत रहू । एनामे कोना भानस होइत ? भात रहैत तँ एकटा बातो जे चढ़ा देलिअइ आ अपने हुच्ची-फुच्ची काजो कयलहुँ । रोटी पकाउ माने चुल्हीमे पैसल रहू, तइ परसँ नङो-चङो । एकरा सभकेँ छोड़िकऽ केना तरकारीक बनोबस करितउँ ? गिरहतबला बाड़ीसँ चारि छिमी केरा केओ आनऽवला नहि ।

विसुनदेव : गै ! सोझे सोझे कह जे तरकारी-तीमन नहि किछु कैलेँ, छुच्छे रोटी रखने छेँ । ला, सैह खा' लैत छी । थम्ह दूरापरसँ दू गो मेरचाइ तोड़ने अबइ छी ।

सुकनी : पहिने ई कहऽ जे साँझसँ कोन पहाड़ ढाहैत छलाहे ?

विसुनदेव : दिन भरि जे देह तोड़ि कऽ काज करै छी ताहिसँ सन्तोख नहि होइ छउ जे साँझोमे हमरासँ पहाड़ ढहाबऽ चाहै छेँ ?

सुकनी : हँ, हँ तोँ दिन भरि काज करैत देह तोड़ैत छह आ हम महरानी जकाँ घरमे बैसल पलंग तोड़इ छी, भोरे गेलउँ गिरहतक ओइठाँ बोनि लाबऽ तँ कहलनि जे दुपहरमे अबिहेँ आ दुपहरमे कहलनि धान बहार करऽ बला केओ नहि अछि, एखन जो साँझखन अबिहेँ आ साँझमे गेलहुँ तँ कहलनि जे खेसाड़ी नेने जो । कतबो कहलिअनि जे मकइ, मड़ुआ, बदाम जे किछु हो से दिअऽ तँ कहलनि जे खेसाड़ीमे जहर फेँटल छै ?

विसुनदेव : गै ई नहि बुझइ छिही जे धन्न ओ गिरहत जे एहन अकालिओमे खटबइ छथि आ चारि सेर खेसाड़िओ दैत छथि । आन कोनो गिरहत घूरिकऽ तकितो छइ ?

सुकनी : ताहि दुआरेँ कहइ छिअऽ जे जा परदेश । एतेक गामक लोक सभ कलकत्ता, कानपुर, मोरंग, दिनाजपुर, लालमुनि, जलपाइगोड़ी जाइत अछि, मुदा तोरा जी टिकबे ने करतऽ तँ जयबऽ केना ।

विसुनदेव : गै सैह कहऽ गेल छलिअइ विसेस्सर भैयाकेँ । एमीरदा दोस हमरो अपना सङे नेने चल कलकत्ता ।

सुकनी : (प्रसन्न होइत) की कहलकह ?

विसुनदेव : कहलक जे तोरा जोगर काज कलकत्तामे नहि भेटतऽ ।

सुकनी : जयबाक मन नहि तऽ तोरा जोगर काजे नहि भेटतऽ, एते सेठ साहुकार रहइ छइ, ककरो ओइठिन कोनो काज धऽ लिहऽ ।

विसुनदेव : कोनो काज माने कोन काज ।

सुकनी : सिपहिगिरी, दरमानी, मोटा उघैक काज, लोक कहइ छइ जे बड़का लोक सभ ठेलागाड़ी पर धीआ-पूताकेँ साँझ भिनसर टहलाबय ले नोकर रखइ छइ, सैह कतहु धऽ लिहऽ ।

विसुन्देव : मुदा कलकत्ता जाइ ले दस-बारह किरेआ चाही, फेर जा धरि नोकरी नहि भेटत ता धरि ले खयबाक खर्चा चाही । नोकरी ककरो फाँड़मे तऽ नहि रहइ छइ जे जइते लप्प दऽ धऽ लेब ।

सुकनी : माने पच्चीस गो रुपैया चाहिअऽ ।

विसुनदेव : आ तोँ जे चारिगो धीआ-पूताकेँ लऽकऽ रहबेँ से हावा पीबिकऽ ? तोरा सभ ले दू मासक पेट-खर्चा चाही ।

सुकनी : भुइदान बला जमीन भरना धऽ लैह ?

विसुनदेव : भुइदान बला जमीन के लेतउ ?

सुकनी : हमरा थोड़े गहना गुरिआ अछि से बन्धक धऽ लैह ।

दू कट्ठा खेत आ गहना मालिककेँ दहुन आ औंठा छाप बना दहुन । कहिहौनि जे सूदिमे खेत जोतू आ हम एक सालक बाद सधा देब ।

विसुनदेव : बेस, देखही, काल्हि की होइ छइ । (**विसुनदेव मेरचाइ तोड़ऽ जाइत अछि आ सुकनी थारीमे रोटी परसैत अछि ।**)

(परदा खसैत अछि)

तेसर दृश्य

(स्थान- विसेस्सरक आङन ओकर बाप पीढ़ी पर बैसल आ दोसरो पीढ़ी लागल छैक, लोटामे पानि राखल छैक ।)

मनचन : गै धनिञा ? विसेस्सरकेँ सोर करही । कतऽ चल जाइत अछि ? जाबत माय जीबैत छलै ताबत कतहु नहि जाइत छल आ एहि बेर बरख दिन पर गाम आयल अछि तँ एको छन जी आङनमे टिकिते ने छैक । (**धनिञा नेपथ्य दिस मुह कऽ सोर करैत छैक, विसेस्सर भैया छऽ हओ, हओ विसेस्सर भैया**) । विसेस्सर (**प्रवेश करैत**) एह, आबिये तँ रहल छी, जहाँ एक रत्ती देरी भेल की आकाश फाड़ऽ लगैत छेँ ।

मनचन : छोट सन नेना छैक, एकसरे भानस भात ऐँठ थारी सभ काज करऽ पड़ैत छैक । तोँहूँ तँ पनिपिआइ नहि कयने छलह । कलकत्तासँ जे भोकना बिलाइ भेल अबैत छह से बिनु खयने पीने ? आ गाम अबैत देरी सुखा कऽ टीड़ीरीरी भऽ जाइत छह से एही दुआरेँ किने । ने बेर पर खाइत छह ने पनिपिआइ करैत छह ।

विसेस्सर : तोँ की कहऽ चाहैत छह ?

मनचन : इएह जे बेर पर खाह-पिबह तखन अपन जे मन हुअऽ से करह । हओ ! ई जे दस कट्ठा धरती आ दू टा मालजाल खुट्टा पर अछि से एही देहक परसादेँ किने । ताहि देहक धेआन सतत रखबाक चाही ।

विसेस्सर : कतहु घूमऽ फिरऽ कहाँ गेल छलहुँ हेँ । कनेक चौपाड़ि दिशि गेलहुँ तँ विसुनदेव भेटि गेल । ओएह अपन दुखनामा सुनबऽ लागल । लङौटिया संगी थीक, कोना नहि सुनितिऐक ?

मनचन : की सब कहैत छलह ?

विसेस्सर : कहैत छल जे हमरो अपना सङ नेने चलह ।

मनचन : तोँ की कहलहक ?

विसेस्सर : की कहितिऐक, पुछलिऐक जे तोँ कोन काज कऽ सकैत छह ?

मनचन	:	सुनह ! हमरा लोकनिक बापदादा मूर्ख नहि छलाह । पहिने सभ काजक हेतु सभ जाति फराक-फराक भार उठौने रहैत छलैक । सभक काज बाँटल, छलैक । घर-घर लोक अपन-अपन धन्धा करैत छल, जाहि परसादेँ परिवारक पालन पोषण होइत छलैक आ संगहि समाज सेवा एक तरहेँ भऽ जाइत छलैक । एकके दोसरसँ विरोधक अवसरे बड़ थोड़ भेटैत छलैक ।
विसेस्सर	:	आ अपन घरैया लूरि सिखबामे ने खर्च ने तरद्दूत, ने स्कूल ने कओलेज ।
मनचन	:	देखहक मटरू मिस्त्रीकेँ ओ कमार थिक । बापदादा जिनगी भरि हऽर पालो, हाँसू खुरपी बनबैत रहलैक । अपने मटरू मिस्त्री लोहा लक्कड़क काज बढ़ौलक । एहन चक्कू सरोता, गुप्ती, छड़ी केओ बनबऽ जनैत अछि ? आ आब ओकर बेटो से सिजिल केर पलंग, चौकी, टेबुल, कुर्सी बनबैत छैक जे हजार नफ्फा मारैत अछि ।
विसेस्सर	:	ओ खटरू मिस्त्रीक बेटा गोविन्द जे रहैक, से की करैत छैक ?
मनचन	:	मटरू मिस्त्री अपना बेटाकेँ अपन घरैया लूरि सिखौलक तेँ फुफुआइत अछि आ खटरू अपना बेटाकेँ इसकूल पठौलक तेँ फिफिआइत रहल जिनगी भरि ।
विसेस्सर	:	से की ?
मनचन	:	ओ छौंड़ा आठम किलासमे पढ़ैत रहैक । ओकरा मामक घरे लग अंग्रेजीक इसकूल रहैक । एक बरख माम खर्च देलकइ ।
विसेस्सर	:	पढ़िते छैक छौंड़ा ?
मनचन	:	एक बरखक बाद सरकार दिनसँ पनरह टाका मासी भेटऽ लगलैक, तखन इलबाइसमे सब फूकऽ लगलैक । परीच्छामे फेल भऽ गेलैक । बस सरकारी टाका बन्न भऽ गेलैक तखन जे छौंड़ा पड़ेलैक से खटरू मरि गेल तँ सराधमे अयलैक । आब ने बसिला चलबऽ अबैत छैक ने रुखान, गिरहतो सभ छुटि गेलैक ।
विसेस्सर	:	मुदा बाप जे पढ़बय पठौलकइ से तँ कोनो अधलाह नहि कैलकइ ।
मनचन	:	हम कहाँ कहैत छिअह जे अधलाह केलकइ, मुदा अपन घरैया लूरि सिखौने रहितैक तँ आइ रने-वने बौआय नहि ने पड़ितैक ! हम जे तोरा थोड़ेक पढ़ौलिअऽ तँ सङे-सङ सेवो टहल सिखौलिअह किने । आइ

तँ तकरे परसादेँ दस टाका कमाइत छह । हम जे पैंसठि बरखक वयस बितौलहुँ अछि तँ एही सेवा टहलक परसादेँ । कोनो बाबू भैयाक मुँहमे दाँत जनमतनि जे कहता मनचनक जीवन ए छीया छैक ?

विसेस्सर : हँ, हमरा जे थोड़ेक पढ़ौलह सेहो काज दैत अछि । हमर बङ्गाली बाबू अफिससँ अबै छैक तँ अपने पनिपिआइ करैत रहइ छइ आ हमरा हिन्दीक एखबार पढ़ि कऽ सुनाबऽ कहैत अछि । मुदा हम जे मालिस करैत छिऐक ताहिसँ हमरापर बड़ खुसी रहैत अछि ।

मनचन : तेँ कहैत छिअह जे थोड़ेक लिखि-पढ़ि लेबाक चाही सभकेँ । मुदा अपन जे खानदानी लूरि अछि तकरा छोड़क नहि चाही । गनेसर ताँतीकेँ देखहक ओ अपन बापक अरजल करघा एखन धरि चलबैत अछि तँ ताहिसँ गुजर करैत अछि आ तोहर ई जे विसुनदेवा छह से हकलिलो हकलिलो करैत रहैत छह । कतेक कहिअह, मौजे तेली अपन कोल्हुँ ठाढ़ कयने रहल तँ देखहक जे शुद्ध सरिसवक तेल ले बाबू भइया घरक टाड़ी एक पर दोसर ओकरा ओहिठाम बजरैत रहैत छनि आ वसन्ता तेली कोल्हु खसा कऽ कपड़ाक दोकान कयलक तँ किछु उधारीमे गेलइ ओ किछु मूस काटि देलकइ । आब ने कोल्हु ने दोकान, दाँत चिआरने अछि ।

विसेस्सर : हँ हओ बाबू ! एखबारमे पढ़ै छिअइ जे नेता सभ ग्रामोद्योग पर जोर दैत छथिन ।

मनचन : हओ, ई संस्कीर्त्तक नाम तँ आब पड़लैक अछि । पहिने लोक एकरा घरैया लूरि कहैत छलैक । भेड़िहर सभ भेड़ी पोसय आ कम्मल बूनय, कोइर सब अण्डी उपजाबय आ तकरे तेल बेचि कए निर्वाह करय ।

विसेस्सर : अण्डीक तेल की होइ लऽकऽ ।

मनचन : पहिने गोसाँइ घर आ भनसा घरमे मटिया तेल लोक नहि जाय दैक, कहै जे ई अशुद्ध होइत छैक । मटिया तेल छुबि कऽ एक लाख मोन माटिसँ हाथ मटिऐबाक चाही ।

विसेस्सर : अरे बाप रे बाप ! एक लाख मोन माटि कतऽ सँ आनत लोक ?

मनचन : आहि रे बताह ! धरती पर हाथ रगड़लक लाख-लाख मोन भऽ गेलैक ?

विसेस्सर : सरिपहुँ आइ काल्हि सभ बात बुड़िआयल जाइत छैक ।

मनचन : कोना नहि बुड़िएतैक, सब लिखि पढ़ि कऽ बाबू बनत आ कुर्सी तोड़त, कलम घसैत-घसैत करम घसा जाइत छैक आ देश दलिद्दरक दलिद्दर रहि जाइत अछि । देशक दलिद्राकें भगाबऽ लेल इसकूलमे घरैया लूरि सभकें जगह देल जाइक, किछु पोथी पतडा आ किछु ई सभ सिखबैक तँ अनेरे देशक दलिद्रा पार भऽ जाय । **(धनिञा उँघाइत अछि आ झुकैत झुकैत जोरसँ खसि पड़ैत अछि ।)**

विसेस्सर : देखह, हम सभ तेना गप्पमे लागि गेलहुँ जे खेनाइओ बिसरि गेलहुँ । ला गै धनिञा थारी ।

(धनिञा थारी अनैत अछि, दुनू बापूत खाय लगैत अछि)

(परदा खसैत अछि)

चारिम दृश्य

(स्थान- महेन्द्र बाबूक दरबज्जा ! चौकी पर पल्था मारि बैसल महेन्द्र बाबू उज्जर डोपटा ओढ़ने छथि; हाथमे सरोता सुपारी छन्हि; रहि-रहि कऽ सुपारी कतरि खा लैत छथि आ बामा हाथें दहिना तरबाकें रगड़ि लेल करैत छथि । नीचाँमे एकटा पटिया ओछाओल छनि ।)

(विसुनदेवक प्रवेश)

विसुनदेव : (झुकि कऽ) परनाम मालिक ।

महेन्द्र : की रओ विसुनदेवा ! कोमहर ऐलेहें ?

विसुनदेव : सरकार एकबेर कलकत्ता जाइक मन होइय ।

महेन्द्र : एहि अकालीमे तोरा कलकत्ता जयबाक सौख होइत छौक ?

विसुनदेव : सौख की हेतइ मालिक ! खगने लोक की ने करैत अछि । उपजा-बाड़ी देखिते छिअइ, अपनो पेट पहाड़ अछि आ बड़की ननकिरबी आब बिआहक जोगर भऽ गेलइ, कोना काज चलतइ ?

महेन्द्र : तँ ननकिरबीक विआहसँ कलकत्ताकें कोन सरोकार ? की कलकत्तेसँ वर अनबें ?

विसुनदेव : वर नइ मालिक ! दश टका कमेबइ तखन ने हेतइ ?

महेन्द्र : कलकत्तामे रुपैआ सड़कपर छिड़िआयल रहैत छैक ? जयबें आ समेटि कऽ लऽ अनबें ?

विसुनदेव : नइ मालिक ! कोनो नोकरी चाकरी करबइ, बरख दिन रहबइ, फेर चल एबइ ।

विसेस्सर : (प्रवेश कऽ) मालिक प्रणाम ।

महेन्द्र : कहऽ कुशल-क्षेम, कहिआ अयलह ?

विसेस्सर : इएह चारि पाँच दिन भेलइ मालिक । अपना ओइठाँ सभ नेना भुटका निकेँ छैक किने ?

महेन्द्र : जेहन भगवानक कृपा (**सुपारी कतरि खाइत छथि**) हओ विसेस्सर ? तोहर बाप बच्छा किनलक से हमर पैतालिस गोट टाका बाँकी रखलक । आब तीन मास भऽ गेल । पैंतालीस दुना नब्बे, नब्बे तिया नौ तिया सत्ताइस दूय सय सत्तरि पैसा सूदि भेल ।

विसेस्सर : हँ, मालिक नवका पैसाक हिसाबसँ दू रुपैआ एकारह आना एक नवका पैसा भेल ।

महेन्द्र : हओ ! हम नवका पैसा नहि देने रहिऐक ।

विसेस्सर : नवका बच्छा देने रहिऐक ने मालिक ! (सब हँसैत अछि)

महेन्द्र : बच्छा नवका रहैक, मुदा हम तोँ पुराने छी ।

विसेस्सर : सैह चुकता करऽ अयलहुँ । चारि रुपैआ साढ़े तीन आना सूदि भेल साढ़े तीन आनाक कोन हिसाब ? पैतालिस चारि उनचास रुपैआ भेल । हे लिअऽ– (**पाँच टा दशटकही बाहर कऽ दैत छनि**)

महेन्द्र : साढ़े तीन आनाक हिसाब कोना नहि ? तोहर बाप चारि सेर खेसाड़ीक बीया लऽ गेल छल । पाँच सेर कऽ विकाइत छलैक, दुनू मिला कऽ पूरे पचास टाका भेलह ।

विसेस्सर : बेस सरकार ! सैह सही, खाली गरीब पर नजरि रखने रहबैक ।

महेन्द्र : हओ, ककरा पर नजरि राखू ? हे देखह विसुनमाकेँ, ई कलकत्ता जाय चाहैत अछि । (**ओकरा दिस ताकि**) की रओ ? की थिकौ तोरा ?

विसुनदेव : ई गहना गुड़िया बन्हक रखबइ आ भुदइान वला जमीनमे सँ दू कट्ठा सेहो लेल जाइक आ पचास गो रुपैयाक बनोबस कऽ देल जाइक ।

महेन्द्र : देखह हओ विसेस्सर ! एखन जे ई पचास टाका लऽ कलकत्ता जायत तँ पचास दुना एक सय माने एक रुपैया नओ आना मासी, माने बारह डयोढ़े अइारह रुपैया बारह आना सूदि । सूदि जोड़ि कऽ पौने उनहत्तरि रुपैया । जँ ई एक बरखमे नहि सधा सकल तँ बहुक गहना गुड़िया बन्हक राखऽ आयल अछि, बहु मारि खापरिसँ चानि तोड़ि देतैक ।

विसेस्सर : अहाँ एकरा पचास गो रुपैआ सूदि पर दिऔक मालिक, हम एकरा दोसर जोगड़ धरा दैत छिऐक । हमरा विश्वास अछि जे साल भरिमे सधा देत, मुदा सूदिमे किछु खातिर करिऔक, पाइ दर पर दऽ दिऔक ।

महेन्द्र : आ जँ नहि सधा सकत तँ हम एकर की कऽ लेबैक ?

विसेस्सर : हमरा पर तँ विश्वास अछि मालिक, हम एकर जिम्मा लइ छी । मन अछि किने जे हम तीनू गोड़े इसकूलमे सङे-सङ पढ़ैत रही ।

महेन्द्र : बेस तोरा विश्वास पर हम दैत छिऐक, मुदा असुलो हम तोरसँ करबह । हँ, सूद पाइ दर नहि डेढ़ पाइ दर भेलैक । **(महेन्द्रबाबू विसेस्सरक हाथमे पचास टाका दैत छथिन आ विसुनदेवसँ एकटा कागत पर काजर लगाय अँगुठा छाप लऽ लैत छथिन ।)**

महेन्द्र : विसेस्सर ! बूझह जे ई रुपैआ हम तोरे देलिअह अछि । पाछू कोनो बात हो तऽ तँ जानह तोँ ।

विसेस्सर : मालिक ! मर्दक बात आ हाथीक दाँत ई दुनू बरोबरि, एक बेर मुहसँ बहार भेल से बहार भऽ गेल । **(दूनू प्रस्थान करैत अछि, परदा खसैत अछि आ दुनू गोटे प्रवेश करैत अछि)** ।

विसेस्सर : देखह रीन लऽकऽ कलकत्ता जयबह आ जँ कपार संग नहि देलकह तँ तोरा लेल ई पचास रुपैआ सधायब हिमालय पहाड़केँ नाँघब जकाँ कठिन भऽ जयतह तेँ हम कहैत छिअह से जँ करह तखन ई रुपैआ तोरा दिअऽ ने तँ मालिकके आपस कऽ दिअनि आ तोहर कागत फेरबा दिअऽ । बाजह, हम जे कहबह से करबह ?

विसुनदेव : **(गद्गद कण्ठसँ)** विसेस्सर भैया ! तोँ अपना जिम्मा पर हमरा ले रुपैया लेलह अछि जे आइ काल्हि सहोदरो ने करैत छइ, तखन हम तोहर बात नहि मानबह तँ ककर मानबइ ?

विसुनदेव : सुन इयार ? गाम पर रहि कऽ भने चारि सेर बोनि करैत छेँ से करैत रह । अइ रुपैआसँ एकटा करघा ठीक कर आ दोगा-दोगी समय बचा कऽ कपड़ा बुनबाक काज शुरू कर । ई अपन खानदानी लूरि थिकउ, एहिमे जे परता पड़तउ से आन धन्धामे नहि ।

विसुनदेव : **(किछु उदास होइत)** मुदा करघा पर ले सूत हम कहाँसँ आनब ? आ कपड़ा जे बूनब से कहाँ बेचब ?

विसेस्सर : एखन बाजारसँ बाङ आनल कर आ गामक गरीब मसोमात सभकेँ काटऽ दही । बादमे अपन भुइदान वाला जमीनमे बाङक खेती कर । बाङ सस्ता पड़तउ, सूत सस्ता पड़तउ, कपड़ा बाजारसँ दू पाइ आसान दामपर बेचबेँ तँ गामेमे छुहुक्का उड़ि जेतउ । अपन निर्वाह भेलउ आ संगहि समाजक दश गरीबकेँ बोनि भेटि जेतइ ।

विसुनदेव : विसेस्सर भाइ ! आइ तोँ हमर आँखि फोलि देलह । हम जिनगी भरि तोहर ई गुन नहि बिसरबह । **(विसुनदेव लपकि कऽ विसेस्सरकेँ भरि पाँज पकड़ि उठा लैत छैक ।**

(परदा खसैत अछि)

पाचम दृश्य

(ढोलक झालि पर गबैत मण्डली प्रवेश करैत अछि)

बूझि सूझि कऽ डेग उठाबह राखह ताहि सम्हारि रे
घर-घर अपन करय सब धन्धा, बैसय नहि मन मारि रे
शहरक चलती बढ़ले जाइछ सब अछि फिफिरी सान
भूखेँ घर-घर लोक मरय, लगइत अछि सुन्नमसान
धनिकक खुट्टा पर लक्ष्मी बान्हल नहि रहि सकतीह
छथिन गरीबक सिर पर अपने गान्धीसन भगवान
काटू चर्खा, पकड़ू करघा, ढेकी जाँत कोदारि रे
घर-घर अपन करय सब धन्धा, बैसय नहि मन मारि रे
मेहनतिया लोकक खातिर छै फूजल बारह बाट
लुरिगर सभकेँ लागय मनमे काजक फेर उचाट
करी अपन पुरखा जे कैलनि अपन-अपन व्यापार
लेपल-पोतल चमकि उठय छन भरिमे सभक ललाट
अपने घर-घर तकने फिरती लक्ष्मी फुजल दुआरि रे
घर-घर अपन करय सब धन्धा, बैसय नहि मन मारि रे

झिंगुर राम : विसेस्सर भैया ई ढोलक कतेकमे छह, एह ठनकइए जे ई ढोलक ।

विसेस्सर : चौदह टाकामे, तोहूँ तँ ढोलक बनौनिहारे थिकेँ, लाज नहि होइत छौक ?

झिंगुर राम : की हेतइ बना कऽ के कीनत, कहाँसँ कठरा आनब ?

विसेस्सर : (गोविन्द मिस्त्रीसँ) तोँ रने-बने फिफिआइत छह से आबहु अपन रुखान बसिला किएक नहि धरैत छह ? कठरा बना कऽ दहक झिंगुरकेँ । दू टकेँ लकड़ी, दू टाका बनाइ, चारि रुपैआमे कठरा तैआर, तहिना दू टाकामे चमड़ा एक टाकामे मसल्ला-तसल्ला, दू टाका बनाइ कुल मिला कऽ नओ दश टाकाकमे ढोलक तैयार । चौदह-पन्द्रहमे बेचह तँ चारि-पाँच टाका नफ्फा ।

सैनी ठठेरी : मुदा कीनत के ?

विसेस्सर : संसार बड़ी टा छैक, बनाकऽ देखहक तँ पता लगतह ।

सैनी ठठेरी : तखन हमहूँ झालि मजीरा ई सभ बनबैत छी ।

विसेस्सर : हँ, हौ ! जाहिआसँ लोक खन्दानी धन्धा छोड़ने गेल तहियासँ आरो दरिद्र भेल गेल ।

सैनी ठठेरी : अच्छा एमकी तोँ आबह कलकत्तासँ तँ देखिहऽ जे झिंगुर केर छारल ढोलक बजैत रहतह डिमिक डिम डिमिक डिम **(नाचि उठैत अछि)**

झिंगुर राम : आ सैनीक बनाओल झालि कहतइ झननन झन् झन झननन झन् झन...

सैनी ठठेरी : आ मजीरा कहतइ तागिन गिन्ना तागिन गिन्ना ।

(नाचऽ लगैत अछि । परदा खसैत अछि)

छठम दृश्य

(स्थान- मनचनक दलान । बैसल आ बाँसक कड़चीसँ पात तोड़ि रहल अछि) (विसेस्सरक प्रवेश)

विसेस्सर : बाबू ! देखह बच्छा ले पगहा नेने एलिअह अछि । **(ओकरा बाँसक पात तोड़ैत देखि)** आब एखन तोँ काज की करैत छह । दिन भरि जे सक लगलह से कमैलह, रातिओकेँ तँ आराम करह ।

मनचन : काज कोन करैत छी, बैसल-बैसल बाँसक पात तोड़ैत छी । तोरे लोकनि जे गबैत छलह चौपाड़ि पर से सुनैत-सुनैत मन मस्त छल । हाथ पैर बान्हि कऽ चुपचाप पड़ल रहब आराम नहि थिकैक । आराम भेटैत छै काज करबामे । अपना हाथेँ काज करह आ तकर फल भोगह तँ मोन खुसी रहतह; मस्त रहतह जे मसलंगपर ओठङल दिन कटनिहार बाबू भैयाकेँ कहियो नहि भेटि सकैत छनि । **(कनेक सतर्क होइत)** महेन्द्र बाबूक रुपैआ देलहुन ?

विसेस्सर : हँ, सैह देबऽ गेल छलियनि । पूरे पचास रुपैआ लेलनि ।

मनचन : पाँच रुपैआ सूदिमे ?

विसेस्सर : हँ, चारि रुपैआ साढ़े तीन आना सूदि । आ चारि सेर खेसाड़ी बीआ अनने रहुन ? तकरो दाम काटि लेलनि ।

मनचन : बेस, हम ओ बच्छा पंचानबेमे लेलहुँ आ एकसय चालिसमे बेचलहुँ तँ पैतालीस रुपैआ नफ्फा भेल ।

विसेस्सर : ओ रुपैआ हम विसुनदेवकें देआ देलिऐक ।

मनचन : विसुनदेवा की करत रुपैआ लऽकऽ ?

विसेस्सर : ओ तँ कहैत छल कलकत्ता चलब, मुदा हम ओकरा कहलिऐक जे अपन करघा दुरुस्त कर आ अपन बाप पुरखाक रोजगार फेरसँ आरम्भ कर ।

मनचन : खूब कहलहक ।

विसेस्सर : कहैत छल जे सूत कहाँसँ आनब ? हम कहलिऐक जे एखन तँ बाजारसँ वाङ कीनि कऽ गामक जनीजातिसँ सूत कटबा, मुदा बादमे भूदान वला जमीनमे बाङ उपजबिहें, बाङो सस्त पड़तौ आ कपड़ो ।

मनचन : बेस कहलहक । हौ ! गरीबक उपकार कयनिहारक उपकार भगवान अपने करैत छथिन ।

विसेस्सर : महेन्द्र बाबू रुपैआ ओकरा नहि दैत छलथिन तँ हमही दिआ देलिऐक ।

मनचन : बेस कयलह, लङौटिया थिकह । बाड़ीमे जे काउन भेल छलह तकर पूरी पका कऽ धनिञा रखने छह, से पनिपिआइ कऽ लैह । **(विसेस्सर जाइत अछि आ मनचन पगहाकें देखऽ लगैत अछि ।)**

(परदा खसैत अछि)

सातम दृश्य

(स्थान- रास्ता, पीठपर कपड़ाक मोटा लदने विसुनदेवक एक दिससँ प्रवेश, दोसर दिससँ हाथमे सूटकेश लेने, माथ पर लाल चरखाना अङपोछा, पयरमे मचमचाइत जुत्ता पहिरने विसेस्सरक प्रवेश)

विसुनदेवक : **(विसेस्सरकें देखि कऽ मोटा पटकैत आ लपकि ओकर घेँट पकड़ैत)** विसेस्सर भैया हौ विसेस्सर भैया ! आइ एक बरख नओ मास पर तों कलकत्तासँ घुरलह अछि । हमर तँ देह गाम पर छल आ मन छल कलकत्ताक गलीमे तोरा तकैत, बौआइत । कहह निके छलह किने ?

विसेस्सर : हँऽ बड़ बढ़िञा । गाम घरक कुशल छेम कहह ।

विसुनदेव : सभ निके अछि, झिंगुर जे ढोलक छालरक अछि से नइ पूछह, एहन निम्मन उतरलैक अछि जे मधबन्नी बाजारमे छुहुक्का उडि जाइ छइ । बीस गो सँ बेसी आइ धरि बेचलक हेँ । आ सैनीक बनाओल झालि जे झन-झनाइत अछि से परोपट्टामे सैनीक नाओ भऽ गेलइ-ए ।

विसेस्सर : इयार, तोँ एक जोड़ धोती पठा देने रहँइ ।

विसुनदेव : अपना खेतमे जे बाङ उपजल तकर पहिले जोड़ धोती खुब निम्मन उतरल तँ मनमे भेल जे ई धोती विसेस्सर भैया ले राखि लइ छी । तहिआसँ होइ छल जे तोँ कहिआ गाम अयबह । तोरे पर सुरता रहइ छल कि घूरन कलकत्ता जाय लागल तँ ओकर दाढ़ी पकड़लउँ जे बौआ ई हमर सनेस नेने जो । पसिन्न पड़लह ?

विसेस्सर : खूब पसिन्न पड़ल । तोँ बजारसँ कपड़ा बेचने आ, तँ साँझ खिन दुनू गोटे गप्प करब ।

विसुनदेव : नइ, नओ मासमे खरच बरच काटि कऽ तीन सयसँ कम नहि कमयने हेबइ । आइ केदन जेतनि बजार । चलह आब गामे पर, ई सुख छोड़ि कऽ केदन दौगल जेतनि **(विसेस्सरक हाथक सूटकेश लेबऽ लगैत छैक)**

विसेस्सर : दुर मर्दे ! तोरा अपने कपड़ाक मोटा छौक तँ तोँ की लेबऽ लगलेँ ?

विसुनदेव : हौ ! एतबा त आब पीठ पर नहि रहइ छइ तँ पैर पताइत रहैत अछि **(अपन मोटा पीठपर बान्हि, सूटकेश हाथमे लटकाय, दुनू प्रस्थान करैत अछि । परदा उठैत छैक, मनचन मंच पर कुट्टी कटैत दृष्टिगोचर होइत अछि । दुनूक प्रवेश । विसेस्सर बापकेँ गोड़ लगैत अछि ।)**

मनचन : निकेँ रहह निकेँ रहह, कहऽ बौआ कुसल छेम । खूब निकेँ छह किने; घूरन एखन नहि ऐलौक ?

विसेस्सर : हम जेबइ तँ ओ औतइ । **(सूटकेश फोलैत अछि ।)**

विसुनदेव : बाहर करह कलकत्ताक सनेस-बाड़ी, देखिअ, कलकतिआ तमाकू केहन होइत छैक ।

(मनचन तमाकू बाहर कऽ चुनबय लगैत अछि)

विसेस्सर : इयार ! तोहर धोती जे हमर बंगाली बाबू देखलकउ तँ ओकरा विश्वासे ने होइक जे करघा पर एहन मेँही धोती बूनल जा सकैत छैक। ओकरा तँ चकविदोड़ लागि गेलै । हम ओहि धोतीकेँ ग्रामोद्योग प्रदर्शनीमे रखलिअह ।

विसुनदेव : अपने पहिरलह नहि ?

विसेस्सर : ओहि प्रदर्शनीमे ओहि धोती पर एकसय टाका तोरा इनाम भेटलह । आ धोती हमर बंगाली बाबू पचास रुपैआमे कीनि लेलक ।

विसुनदेव : **(ताल ठोकि कुदैत)** पौ बारह ।

(सैनी आ झिंगुरक प्रवेश)

विसेस्सर : **(डेढ़ सय रुपैआ बाहर करैत)** लैह अपन इनाम ।

विसुनदेव : ई इनाम हमर कोना भेल ? ई तोहर भेलह । हम तँ तोरे पहिरबा ले पठौने छलिअऽ ।

(मनचन तमाकू झाड़ि सभकेँ एक-एक चुटकी बँटैत अछि)

विसेस्सर : ले इयरवा ई रुपैआ आ मालिकक रीनचुकता कऽ दहुन ।

विसुनदेव : हम मालिकक रुपैआ रखने छिअनि, सूदि सहित जोड़ि कऽ, सभ काल्हिए दऽ देबनि ।

विसेस्सर : मुदा रुपैआ तोरे लेबऽ पड़तौक ?

विसुनदेव : ई रुपैआ हम कोना छुबइ ? ई तँ तोहर थिकह ।

विसेस्सर : अच्छा तँ धोती हमर छल तेँ पचास रुपैआ हमर आ बूनल तोहर छलउ तेँ इनाम तोहर । नहि तँ हमहीं मङली लेल दैत छिअउ जे गहना गढ़ा दिहैक ।

सैनी ठठेरी : विसेस्सर भैया ! झिंगुर केर ढोलक चकै के चमधुम-चकै के चकधुम **(नाचऽ लगैत अछि)**

झिंगुर राम : आ सैनीक झालि झनन झन् झनन झन् झन् ।

(झिंगुर सैनी आ विसुनदेव हाथ पकड़ि नाचऽ लगैत अछि । मनचन मुसकुराइत अछि, विसेस्सर देखैत रहैत अछि । परदा खसैत अछि ।)

[रचनाकाल 1962 ई.]



ननदिओकेँ ननदि

पात्र-परिचय

पण्डितजी : वयस 50-55, धोती, कुरता, डोपटा पाग, त्रिपुण्ड चानन ।

मुसना : वयस 35-40, नोकरक वेश-भूषामे ।

प्रथम बटुक : दूनू 13-14 वर्षक धोती-कुरतामे ।

दोसर बटुक : दूनू 13-14 वर्षक धोती-कुरतामे ।

डिप्टी : वयस 57-58 पैंट-कोट, चश्मा पहिरने ।

मास्टर साहेब : वयस 50-55, धोती-कुरता ।

तीन व्यक्ति : ग्रामीण वेशभूषामे

किछु दर्शक

चेयरमैन : प्रौढ़, धोती-कुरता वण्डी मे ।

पहिल दृश्य

[नेपथ्यमे ढोल पिपही सोहरक स्वर बाजि रहल अछि । बीच-बीचमे महिला सभक सम्मिलित कंठ स्वरमे 'सिंह पर एक कमल राजित ताहि ऊपर भगवती' गीतक पद सेहो सुनि पड़ैत अछि । परदा उठला पर मंच पर एक चौकी पर भकड़ार त्रिपुण्ड ओ चौअन्नी नाप सँ सिन्दूरक ठोप, बाँहि, छाती, पेट सब पर विभूति लगौने, उघाड़े देह पण्डित जी आबि कऽ बैसल आ गम्भीर दृष्टिसँ दर्शक, मंच ओ नेपथ्यक निरीक्षण करैत हाक दैत छथिन]

पण्डितजी : मुसना ! रौ मुसनाऽऽऽ ! मुसना छेँ रौऽऽऽ !

मुसना : **(फाँड़ बन्हने, माथमे अंगपोछाक मुरेठा बन्हने, दूनू हाथमे सनैत चिक्कस लगौने प्रवेश कऽ)** हम कोनो बहीर छिकी जे एना गद्दह करे लगली ? हम कोनो बैठल छी ? देखै छी की नै, पाहुन आउर के पनपिआइ कराउल जेतनि से कचौड़ी बनतै ताही से चिक्कस सनै छिकी ।

पण्डितजी : खाली पाहुने सभक घूड़ धूआँमे सब लागल रहबे तँ मड़बा परक ओरिआन कखन होयतैक ? चैतक मास थिकै, दिन तबैत छैक । बरुआ नेना छैक, पित्त आँट भऽ जतैयत से सोचनिहार क्यो नहि ? तोरा हाथ लागल छौक तँ तोँ जो । गुलगुल कहाँ छथुन ? हुनके पठा दहुन । **(मुसनाकेँ कड़ा आँखि सँ नीचाँ उपर देखैत छथिन ।)**

मुसना : अउ पंडीजी ! हमरा दिस बनबिलाड़ नाँहति किए तकै छिकी ?

पण्डितजी : मुसना केँ तँ बनबिलाड़ेक भ्रम भऽ सकैत छैक !

मुसना : गुलगुल बौआ गेलखिन गोहालसँ दूध लाबेला । ई पाहुन आउर जे सात बेर कऽ चाह ढकोसै छथिन से बिन दूधे केना हेतइ ?

पण्डितजी : मनटुन कहाँ छथुन ? हुनके पठा दहुन ।

मुसना : ऊ चौधरीजी, पाठकजी, ओझाजी, आउरकेँ झाड़ा फिराबेला ले गेल छथिन ।

पण्डितजी : आइ हमरा गुरुजीसँ फज्जति सुनब लिखल अछि । ओ बूझैत होयताह जे माँड़ब परक सबटा ओरिआन करैत होयताह आ एमहर आँगनसँ एकटा कौआ पर्यन्त नहि बहराइत छैक । **(मुसना जाय लगैत अछि तँ मुसनासँ)** रौ मुसना ! हाथमे चिकसे लागल छौक किने, गूह नहि ने ?

मुसना : हमरा तऽ अहाँके बोल सुन-सुन के कुच्छो ने फुराइ अऽ ।

पण्डितजी : तोरा फुरयबाक कोनो प्रयोजन नहि छौक । हाथ झाड़ि ले आ आङनमे रङलाहा धोती सब सुखाइत होयतैक से पहिने दऽ जो आ गुरुआइनि केँ हमर नाम कहि कऽ एकटा नवका चङेरामे चानन चनरौटा, सात आठ जोड़ जनौ, डँड़ाडोरि, कुश ई सब आनि कऽ हमरा दऽ दे । **(मुसना जाय लगैत अछि तँ पुनः)** हँ, कुम्हार बरुका सब दऽ गेल होयतैक सेहो लऽ लिहें आ ओहि मे देबाक हेतु आरब चाउर आ गोटा सुपारी सेहो देबऽ कहिहौन ।

मुसना : अहाँ तऽ एतना सामान फरमा देली गऽ जे रस्ते मे हमरा यादो भुला जायत ।

पण्डितजी : जो रे भुसकौलहा । चानन चनरौटा, जनौ, डँड़ाडोरि, लत्ता कपडा, बरुआ, आरब चाउर, कुश एतबो मोन नहि रहतौ ?

(मुसना चल जाइत अछि ।)

पण्डितजी : **(स्वगत)** गुरुजी बालकक द्विरागमन करबा कऽ हमरा घोर घाटामे दऽ देलनि । केहन बढ़िञा अवारित द्वार छल, गुरुआइनि लग चुलहो पाछाँ चल जाइत छलहुँ आ भाग्य योगेँ डाढ़ीसँ छाल्ही धरि परि लागि जाइत छल । आब तँ मुँह मे टाटी लागल आ आङनमे टाट, पैरो देब से खखसैत रहू ड्योढ़ीक टाट लग ।

(मुसना आङनसँ चङेरामे किछु सामान आनिकऽ राखि कऽ चल जाइत अछि । पण्डितजी लाल पीअर धोतीकेँ कोंचिया-कोंचिया गेंठिया रहल छथि । दू टा बटुक काँख तर पोथी दबने अबैत अछि आ पैर छूबि प्रणाम कऽ एक कात ठाढ़ भऽ जाइत अछि ।)

पण्डितजी : सब विद्यार्थीकेँ एतहि बजौने अबहक ।

एक बटुक : आइ पाठशाला पर नहि जयबै गुरुजी !

पण्डितजी : सब दिन पाठशाला पर जाइते छी । आइ एहीठाम तोरा सबकेँ पढ़ाइओ देबह आ उपनयनक ओरिआन-पात सेहो करैत रहब ।

दोसर बटुक : हम सबकेँ बजौने अबै छिऐ । **(दौड़ल जाइत अछि)**

प्रथम बटुक : **(काँख तर सँ पोथी बाहर करैत)** गुरुजी आइ हम हितोपदेश पढ़ब ।

पण्डितजी : पाँती बाचह ।

बटुक : **(कनेक काल मुँह कोंचियाबऽ लगैत अछि)** ऐ मे कोनादन लिखल छै ।

पण्डितजी : कोनादन की छैक ?

बटुक : (हाथसँ इशारा दैत) गुरुजी ! श्रीमे तँ एना होइत छैक आ अइ मे (ह्रस्व उकार जेना लिखल जाइत छैक तेना (हाथ घुमा कऽ इशारा करैत) एना मात्रा लागल छैक ।

पण्डितजी : तखन ओ श्रु भेलैक । तखन की छैक ?

बटुक : तखन छै तो

पण्डितजी : ओऽऽऽ ! श्रुतो हितोपदेशोऽयं ।

बटुक : **(प्रसन्न होइत)** जी, श्रुतो हितोपदेशोयम् ।

पण्डितजी : पाटवं संस्कृतोक्तिषु । **(तावत चारि पाँच टा बटुक आबि ओही बटुक लग बैसि जाइत अछि । मुसना प्रवेश कऽ)**

मुसना : पण्डितजी ! बूढ़ा मालिक कहलैनि ऐछ जे कुच्छो जरजलखै कऽ के एनुक्का काम करै ला । फेनो कखनी फुरसत होत कखनी ने । **(तावत दू टा बटुक हकमैत अबैत अछि आ संगहि)**

दूनू बटुक : गुरुजी ! गुरुजी ! इसकूल पर डिप्टी साहेब आबि गेलखिन हें से माट साहेब लत्ते-पत्ते दौगले आब कहलनि हें ।

पण्डितजी : **(चकित, विस्मित, भयकम्पित भावसँ सम्पूर्ण दर्शक दिस ताकि ।)** अयँ डिप्टी !! ओहो अभगला आइए बथायल छल ? बाप रे ! राक्षस अछि ई डिप्टिया । आइ अनुपस्थित पौलक अछि, आइ नाकक सूत पानि पिआ कऽ छोड़त । **(मुसना सँ)** हे रौ मुसना ! ई दूनू चङेरा गुरुआइनिकेँ सुनझा दहुन गऽ । हमरा तँ आइ यमदूत पहुँचि गेल अछि । **(छात्र सब सँ)** तोँ सब चलैत चलह पाठशाला पर । **(कान्ह पर तौनी लऽ विदा भऽ जाइत छथि । परदा खसैत छैक)**

(पुनः मंच पर छात्र सभक संग पण्डितजी झटकल जाइत दृष्टिगोचर होइत छथि । एक दिस प्रवेश कऽ पुनः दोसर दिस चल जाइत छथि । नेपथ्य मे ढोल पिपहीक मद्धिम स्वर गुंजित होइत रहैत अछि ।)

दोसर दृश्य

[स्थान- प्राथमिक पाठशाला । दस बारहटा छात्र एक दिस बेंच पर बैसल अछि । सोझाँमे कुर्सी आ टेबुल लागल छैक । पैजामा, शेरवानी आ टर्की टोपी पहिरने डिप्टी साहेब नाकक टुरनी पर सँ चश्माकेँ उपर खीचि कोनो मोटका रजिस्टरक पन्ना उनटा रहल छथि । चश्मा घुसुकि कऽ नाकक टुरनी पर चल अबैत छनि आ बारंबार ओकरा उपर कऽ ठेलैत पढ़बामे व्यस्त सन प्रतीत होइत छथि । मास्टर साहेब डिप्टीक कात मे टेबुल लग ठाढ़ छथि । आगाँ आगाँ पण्डित जी आ पाछाँ पाछाँ छात्र सब प्रवेश कऽ मंचक एक कातमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि ।]

डिप्टी : **(चश्माकेँ पुनः उपर ठेलैत)** क्या पण्डित जी ! ऐसे ही पाठशाला चलती है ?... न शिक्षक का पता न लड़कों का ?

पण्डितजी : डिप्टी साहेब ! ओना तँ भगवान साक्षी छथि, मुदा ई मास्टर साहेब आ ई विद्यार्थी लोकनि सेहो साक्षी छथि जे हम कहियो ने अनुपस्थित होइत छी ।

डिप्टी : सो तो आज देखने से ही पता चल गया ।

पण्डितजी : जी नहि, आइ तँ संयोगवश हमरा गुरुजीक बालकक उपनयन थिकनि तेँ परिस्थिति विशेषवश पाठशाला पर नहि आबि ओहीठाम छात्रो सबकेँ बैसाकऽ पढ़बितो छलियनि आ उपनयनक ओरिआन सेहो ।

डिप्टी : पण्डितजी ! मेरी आँखों में धूल झोंकने की कोशिश मत करें । एक साथ दो ठो काम कैसे हो सकता है ? **(कहिकऽ सब दिस तकैत चश्माकेँ नाक पर उपर ठेलैत प्रश्न सूचक मूड़ी डोलबैत रहैत अछि । डिप्टीक भाव-भंगिमा देखि छौंड़ा सबकेँ हँसी लागऽ लगैत छैक तकरा बलपूर्वक दबयबाक चेष्टा करैत अछि, परन्तु एक आधक मुँहसँ हँसीक मन्द ध्वनि बाहर भऽ जाइत छैक ।)**

पण्डितजी : डिप्टी साहेब ! पढ़ौनी होइत छैक मुँहसँ आ काज होइत छैक हाथ सँ । तेँ एक बेर मे दू काज कोनो भुसकौलो लोक कऽ सकैत अछि । **(डिप्टी पण्डितजीक बातकेँ अनसुनल सन करैत विद्यार्थी सभक गतिविधि केँ देखैत आँखि गुड़ारि कऽ तकैत अछि । सब छौड़ा स्तब्ध भऽ जाइत अछि ।)**

डिप्टी : **(एकटा छात्रकेँ लग बजा)** तुमलोग घर से आ रहे हो न ?

छात्र : जी नै, हम सब बूढ़ा गुरुजीक दलान पर छलौंहेँ ।

डिप्टी : तुमलोग वहाँ क्या करते थे और पंडित जी क्या करते थे ?

दोसर छात्र : हम सब पढ़ै छलौंहेँ आ गुरुजी ललका धोती कोंचिअबैत छलथिनहेँ ।

डिप्टी : रास्ते में पण्डितजी यही कहने के लिए सिखाते आये हैं ?

प्रथम छात्र : से की हम फूसि कहैत छी ?

डिप्टी : डिप्टी फूस ? फूस क्या ? फूस माने ? **(सब छात्र खिलखिला उठैछ)**

छात्र : फूस नै फूसि माने झूठ ।

डिप्टी : **(छात्र सबसँ)** सच-सच बोलो, घर पर से कौन-कौन आया है ?

छात्र सब : हमसब बूढ़ा गुरुजीक दलान परसँ अयलौंहेँ ।

डिप्टी : क्या पण्डितजी । यही डिसीप्लीन सिखलाते हैं ? लाइये अपनामोलाहिजा बही । **(पण्डितजी भीतर चल जाइत छथि)**

डिप्टी : **(छात्र सबसँ)** तुमलोग घर जाओ, सबको छुट्टी । **(छात्र सब पंक्तिबद्ध भऽ एक दिस चल जाइत अछि ।)**

डिप्टी : पण्डितजी ! आपको इस गाँव में आये हुए कितने दिन हुए ?

पण्डितजी : हम जिनगीमे एहीठाम नौकरी शुरू कयलहुँ आ आइ धरि एहीठाम छी।

डिप्टी : इसीलिए आप समाजिकता निभाने में लगे रहते हैं और पाठशाला खाली रह जाती है। इस बार आपकी बदली करबा देते हैं। आपके यहाँ रहने से पाठशाला नहीं चल सकती है।

पण्डितजी : हजूर ! अहाँकेँ ब्रह्महत्या करबाक हो तँ दोसर बात, अन्यथा हम अपराधी नहि छी। महत्त्व काजक छैक– स्थानक नहि। काज तँ हम करिते छलहुँ, नहि एहि ठाम, ओहिठाम।

डिप्टी : इसीलिए तो कहता हूँ, स्थान का कोई महत्त्व नहीं है। आपको किसी स्थान पर भेज दें इससे क्या फर्क पड़ता है ?

पण्डितजी : अपने जँ अकृपा रखबैक तँ हमरा सभक निर्वाह होयत ?

डिप्टी : ईमानदारी से काम नहीं करने वाले का निर्वाह कैसे होगा ?

मास्टर साहेब : **(पण्डितजीक हाथ दाबि आगाँ बढ़ि)** पण्डितजी ! ई डिप्टी अछि बड़का लहरचुट्ट, जाधरि किछु सुंघयबैक नहि, मानत नहि, जँ मोलाहिजा बहीमे किछु अलट बिलट लिखि देलक तँ अनेरे झंझटमे पड़ि जायब।

पण्डितजी : मास्टर साहेब ! हमरा तँ गाय, महीस किछु नहि पन्हाबऽ अबैत अछि। अँही थनमे हाथ दिऔनि। देबैक हम पाँच टाका धरि।

मास्टर : **(डिप्टी समीप जाय)** हुजूर गलती तो इनसे हो ही गयी है, मगर बहुत सज्जन आदमी हैं। इस बार माफ कर दिया जाय। इनसे जो बन पड़ेगा खिदमत में हाजिर कर देंगे।

डिप्टी : इस गोल-मटोल बात पर मुझे एतमाद नहीं है।

पण्डितजी : हजूर हम पण्डित आदमी, गरीब शिक्षक, अपनेक सेवा कथी लऽकऽ करब ? बाल बच्चाकेँ आशीर्वाद दैत छी आ जखने हाथ पर आबि जायत, दू टाका लऽकऽ उपस्थित भऽ जायब।

डिप्टी : **(चश्मा केँ जोर सँ उपर ठेलैत)** क्या कहा ? दो रुपये ?

मास्टर : हुजूर, इनके कहने से क्या होगा ? पाँच रुपये देने पड़ेंगे।

डिप्टी : सो भी चैत की कड़ारी हींग ले उधारी ?

पण्डितजी : अस्तु पाँचो टाका रहल, मुदा एखन तँ हाथ खली अछि । अपने सँ बाहर होयब से हमरा सब कें बनत ? अपने विश्वास राखू । जखने हाथ पर आबि जायत, हम दौड़ले सेवामे उपस्थित भऽ जायब ।

(डिप्टी मोलाहिजा बही पर किछु लिखऽ लगैत अछि, परदा खसैत अछि)

तेसर दृश्य

[तीन चारि व्यक्ति सजने-धजने झटकल चल जा रहज अछि । दोसर दिस सँ पण्डित जीक प्रवेश]

पण्डितजी : बड़ तैयारी देखैत छिऐक । की बात छैक ?

एक व्यक्ति : पण्डितजी, आइ तारापट्टी मिडिल स्कूल पर एतेक पैघ समारोह भऽ रहल छै से अहाँके खबरि नहि ?

पण्डितजी : की सब होयतैक ?

दोसर व्यक्ति : कतेक धूम-धड़ाका, नाच-तमाशा होमऽवला छैक । हमरा सबकें होइत छल जे अहाँ आगाँ गेल होयब ।

पण्डितजी : अहाँ लोकनि जँ पाँच मिनट बिलमी तँ हम दौड़ि कऽ अंगा पहिरि आबी । अरे, एक गोटाकें अपालन लागि गेल छैक– सैह प्रायश्चित्तक व्यवस्था पत्र लिखाबऽ आयल छल । दक्षिणवारि टोलक मुनि बाबू सँ प्रायश्चित्त कदम्ब नामक पोथी अपने छलियनि । काज भऽ गेला उत्तर माङि कऽ आनल वस्तु तुरन्त आपस कऽ दी से हमर सिद्धांत अछि ।

तेसर व्यक्ति : बहुत सुन्दर सिद्धांत अछि ।

चारिम : अपना समाजक लोक मे ई भारी आपत्ति छैक जे कोनो वस्तु माङि कऽलऽ जायत तँ बिनु मङने.... ।

पहिल : मङने नहि, जा कऽ बिनु अनने दोसर प्रकार नहि ।

दोसर : आ जँ सोह पर सँ उतरि गेल तँ दाबियो राखत ।

पण्डितजी : हम दौड़ले आबि रहल छी **(चल जाइत छथि)**

तेसर : अयँ औ भजार । इसकूल पर आइ के सब अबैत छथि ?

दोसर : चेयरमैन साहेब मुख्य अतिथि रहथिन । हुनके हाथें नेना सबकें पुरस्कार देल जयतैक । तखन आनो आनो हाकिम हुकमान आ तनिका सभक लगुआ भगुआ संग रहबे करथिन ।

पहिल : इसकुलिया चटिया सब खेल-कूद, नाच-गान से सब करतै । नेता सब भाखन करथिन । जे सब फस्ट, सेकेण्ड करतै तकरा सबकेँ चेयरमैन साहेब 'प्राइज' देथिन ।

(पण्डितजी कुर्त्ता, तौनी, पाग पहिरने, हाथमे छड़ी लेने प्रवेश करैत छथि ।)

दोसर : पण्डितजी केँ आइ भोरे भोरे यात्रा बनि गेल छलनि तेँ डेगमे बेस फुर्ती आबि गेल छनि ।

पण्डितजी : की यात्रा बनत ? पतिया लिखाइ मात्र अढ़ाय टाका भेल अछि आ डिप्टीया केँ पाँच टाका गछने छिऐक से कय मास भऽ गेलैक । मोने मोन कन्हुआइत होयत । अच्छा चलै चलू ।

(सभक प्रस्थान)

चारिम दृश्य

[परदा उठैत अछि । स्थान मिडिल स्कूलक प्रांगण । फूल-पत्तीसँ सजाओल छैक । बीचमे कुर्सी पर चेयरमैन तथा किछु कोट-पैंट-धारी सज्जनक संग डिप्टी साहेब सेहो बैसल दृष्टिगोचर होइत छथि । लाउडस्पीकर लागल छैक । श्रोतागण सम्मुखमे बैसल छथि । तीन टा बालक वा बालिका समवेत स्वरमे गाबऽ लगैत अछि ।]

स्वागत गान

कतय सँ आनब नव उपकरण, करब जेहि सँ अतिथिक सत्कार ।
स्वागतक साधन नहि किछु आन छाड़िकय हृदयक मृदु उद्गार ।।
जरय ई छोट-छीन सन दीप जकर द्युति हृदय कुहरमे पैसि ।
पसारय अग-जग मे आलोक हरय अज्ञानक निविड़ अन्हार ।।
तर्क-जल आनि, विवेकक माँटि सानि कय कयल जकर निर्माण ।
बुद्धिहिक देल बाँटि कय टेम जाहि मे भरलहुँ स्नेह अपार ।।
विदुर घर गेल छला श्रीकृष्ण साग सँ कयल विदुर सम्मान ।
एतय सागहुक न भेल उपाय कामना केवल कयल उधार ।।
जानकी जन्म-भूमिमे आबि कयल जन-जनकेँ आइ सनाथ ।
सुसज्जित शब्दक शुचि-डाली मे अनलहुँ भावनाक उपहार ।
करब जेहि सँ अतिथिक सत्कार ।।

(दर्शक सब थपड़ी बजबैत अछि आ थपड़ी बजबिते पण्डितजी चारू संगीक संग प्रवेश करैत छथि ।)

डिप्टी : **(ठाढ भऽ)** मैं चेयरमैन साहब से आरजू करूँगा कि बच्चों को अपना दुआ देंगे । **(बैसि जाइत छथि)**

पण्डितजी : **(लग जा कऽ उल्लसित होइत)** हजूर ओ जे पाँच टाका गछने रही से आइ भगवती आधाक जोगाड़ धरा देलनि आ संयोग सँ अपनहुँ सँ भेट भऽ गेल । जयबा काल ओतबा लऽ लेल जाय ।

(डिप्टी चुप्पे कुर्सी सँ उठिकऽ बाहर चल जाइत अछि)

पण्डितजी : आहि रे बा, हुजूर उठि गेलथिन !

चेयरमैन : **(पण्डितजीकेँ लग सोर करैत)** की थिक पण्डितजी अहाँकेँ ? एमहर आउ ।

पण्डितजी : **(चेयरमैनक कुर्सी लग जा)** सरकार ई आपसी गप्प थिकै, एकदम खानगी ।

चेयरमैन : सैह खानगी कनेक हमहूँ बुझियैक । आ की हमरो सँ खानगी ?

पण्डितजी : **(सकपकाइत)**, नहि नहि अपने सन-सन महान लोकसँ कोन खानगी । परंच अपने एहि बातकेँ अपने धरि राखल जाय । हम जाहि पाठशालामे छी से हमरा गुरुजीक गाम मे छनि ।

चेयरमैन : अच्छा, अच्छा !

पण्डितजी : से एक दिन गुरुजीक बालकक उपनयन छलनि, तेँ हम सब छात्रकेँ हुनका दलाने पर बैसा कऽ पढ़बितो छलिऐक आ एमहर मड़वा परक वस्तु जातकेँ सरिअबितो छलहुँ ।

चेयरमैन : अच्छा, अच्छा, तखन ?

पण्डितजी : दैव संयोग कहल जाय अथवा कपारक दोख जे ओही दिन डिप्टी साहेब पाठशाला पर पहुँचि गेलाह । हमर एतबा अपराध अवश्य छल जे स्थान पर नहि छलहुँ । हँ, कर्मच्युत नहि छलहुँ से जानथि बाबा बैद्यनाथ, मुदा ई छप्पन छूरी चमकाबऽ लगलाह । तखन इसकूलक मास्टर साहेब एहि बगदल देवताकेँ पाँच टाका कबुलाकऽ देलथिन ।

चेयरमैन : तखन ?

पण्डितजी : हम सब गरीब शिक्षक, हाथ पर छल नहि । आब तँ पाँच छओ मास भऽ रहल छैक । आइ भगवतीक दया सँ एकटा पतिया कटैनिहार आबि गेल । तेँ सोचल जे ई अढ़ाय टाका दइए दिऐनि । खगल लोकक हाथ पर पाइ नहिने अँटकै छै ।

चेयरमैन : एतेक दिनक बाद देब अयलिऐनि सेहो अधे तेँ ओ बिगड़ि गेलाह अछि । **(मनी बैग सँ पँचटकही बहार कऽ दैत)** हे लिअऽ पूरा कऽदऽ अबिऔनि ।

पण्डितजी : अपने.... **(हिचकिचाइत छथि)**

चेयरमैन : कोनो क्षति नहि, भगवती सम्पूर्ण जोगाड़ धरा देलनि । लिअऽ आ दौड़ि कऽदऽ अबिऔनि । **(पण्डितजी पँचटकही लऽ बहराइत छथि । परदा खसैत अछि ।)**

पाँचम दृश्य

डिप्टी : **(प्रवेश कऽ)** यह आदमी है कि घनचक्कर, आज बेमौके बुरी तरह फँसाने लगा ।

पण्डितजी : **(प्रवेश कऽ)** हजूर, अहाँ कनेके लै हमरा पर अविश्वास कयल । हे लेल जाय पूरा पूरी पाँचो टाका । चेयरमैन साहेब पूरा कऽ देलनि ।

डिप्टी : या अल्ला इस पण्डित ने मेरा गला घोंट दिया । चेयरमैन मेरा हाकिम है और....

पण्डितजी : अयँ, अपनहुँ केँ हाकिम ? तेँ कहैत छैक ननदियो केँ ननदि ।

(डिप्टी माथा हाथ दऽ बैसि जाइत अछि । पण्डितजी विस्मित भेल सब दिस तकैत रहैत छथि । परदा खसि पड़ैत अछि ।)

[रचनाकाल 1964 ई.]



वाड़चान्स

पात्र-परिचय

बिजलीकान्त : पचीस वर्षक नवयुवक, पैंट-बुश्शर्ट, आँखिपर सोनहुला चश्मा

मधुकान्त : बिजलीकान्तक पिता, वयस 55-60, खेतिहरक वेशभूषा

निरसू : मधुकान्तक संङिता, वयस 55-60, ग्रामीण खेतिहरक परिधानमे

ठिठरा : नोकर, वयस 40-45, मैल धोती, गोलगला आ माथमे मुरेठा

ओझाजी : मधुकान्तक जमाय, वयस 35-36, पैंट-बुश्शर्टमे, सुदर्शन युवक

पानिक बारिक एकटा छौंड़ा किछु हकरतिहार

प्रथम दृश्य

[समय– प्रातः काल, स्थान– शयनकक्ष, देवाल पर अयना, स्नो-पाउडर, सेफ्टी रेजर, तेल आदि एक टेबुल पर राखल, कातमे एक रैक पर पोथी आदि । बिजलीकान्त तौनी ओढ़ि सूतल छथि । नेपथ्यसँ ध्वनि अबैत छैक–)

बौआ कहैत छलाह जे रिजल्ट बहरायत से दरिभंगा जायब । आब अबेर होइत छनि, केओ उठा दहुन । बौआ ! औ बौआ ! बिजलीकान्त ! उठू-उठू !

(बिजलीकान्त धड़फड़ा कऽ आँखि मिड़ैत उठैत छथि आ जल्दी-जल्दी दाढ़ी बनबऽ लगैत छथि । फेर स्नो लगबैत छथि, केश थकड़ैत छथि, सूट पहिरैत छथि, आ प्रत्येक बेर अयनामे मुँह देखैत छथि) (पिता मधुकान्तक प्रवेश होइत छनि) ।

मधुकान्त : बौआ ! तैयार भऽ गेलहुँ ?

बिजलीकान्त : हँऽ ।

मधुकान्त : आइ कोन दिन थिकैक ?

बिजलीकान्त : शुक्र ।

मधुकान्त : रवि कऽ पान, सोम कऽ दर्पण, मंगल कऽ किछु धनियाँ चर्वण, बुध कऽ गूड़, वृहस्पति राइ, शुक्र कहय जे दही सोहाइ । हँऽ यात्रा लय आइ दही चाही । रौ ठिठरा ! ठिठराऽऽऽऽ !

नेपथ्यसँ ध्वनि : यैह अयलहुँ मालिक ।

ठिठरा : **(प्रवेश कऽ)** बिजली बौआ पनपिआइ करथिन से कने पानि लाबऽ गेल छलियैक ।

मुधकान्त : आङनमे पुछहुन जे दही छनि की नहि ? **(कनेक सोचि)** ओह, दही कतऽसँ औतनि ? जो दिलचन साहुक दोकानसँ पाव भरि दही आनि दहुन ।

ठिठरा : मालिक, दिलचन साहुक ओइठिन तँ गोपाल दही रहै छै, सजबी दही कहाँ पाबी ?

मधुकान्त : हँऽ, रौ से तँ ठीक कहै छें, अच्छा जो विधि पुराबऽ लय, एक पाइक आनि दहुन ।

ठिठरा : मालिक, एक पाइक दही मङबै तँ दिलचनमा पाइ लऽ लेत आ कपार पर दहीक ठोप कऽकऽ विदा कऽ देत ।

मधुकान्त : अच्छा जो दू पाइक लऽ लिहें ।

(ठिठरा जाइत अछि)

बिजलीकान्त : बाबू ! रिजल्ट किनबै से दस टा टाका दियऽ ने ।

(पिता टाका लाबऽ आङन जाइत छथिन)

बिजलीकान्त : पाँच टाका तँ हलुअइयाक बाँकिये छैक । ओ तँ रच्छ अछि जे बाबूसँ टर्मिनलक फीस तीस टाका, इमतिहानक फीस पैंतालिस टाका, फेर परीक्षाक फीस साठि टाका आ एकजामिनेशन फीस एक सय सोझ कऽ लैत रहलियनि, ने तँ घूरि कऽ दरिभंगा गेनाइ मोसकिल होइत ।

(पिता अबैत छथिन आ एकटा पुरान लत्तामे बान्हल गेठरीकें फोलिकऽ कागतमे लेपटाओल नोटकें उघाड़ैत बहार करैत छथिन आ एकटा दसटकिया दैत कहैत छथिन)

मधुकान्त : बौआ ! जाउ, भरि पेट पनपिआइ कऽ लियऽ, टाका सरिया कऽ राखि लियऽ आ साइकिलसँ चल जाउ ।

(बिजलीकान्त जाइत छथि ।)

मधुकान्त : हे सत्यनारायण भगवान ! जँ बौआ पास करता तँ सुनता पूजा करब ।

(परदा खसैत अछि ।)

दोसर दृश्य

(स्थान– गामक बाट, मधुकान्त राय धोतीकेँ माथमे बन्हने ताहि पर एकटा दतमनि खोँसने, कान पर जनउकेँ भिँड़िया कऽ चढ़ौने, दहिना हाथमे लोटा । एक भागसँ प्रवेश करैत छथि आ दोसर भागसँ माथमे अङपोछा बन्हने, काँख तऽर छिट्टा आ दहिना हाथमे खुरपी लेने निरसू प्रवेश करैत छथि ।)

निरसू : की औ सङिता ! आइ स्नानमे अबेर देखैत छी ?

मधुकान्त : हँऽ, आइ बौआक रिजल्ट बहरयतनि । फैनलमे तँ नम्मर नीक छलनि, मुदा एकटा डकूबा मास्टर बाइलौजीमे नम्मर काटि लेलकनि से कनिये लेल चुकि गेलाह । हमर बौआ तँ चन्सगरमे फस्टे नम्बर छथि । ई पास कऽ लेता तँ डाकदरी पढ़ऽ लेल मीडीकलमे नाँ लिखौता ।

निरसू : डाकदरी पढ़ता ?

मधुकान्त : हँऽ हँऽ तेँ ने बाइलौजी रखने छथि । डाकदरीमे सभसँ पहिने 'वाइ' बिगड़बकेँ दबाइ सिखबै छै, तेँ मैटरीकोमे बौआकेँ बाइलोजियेमे फेल कऽ देने रहनि तँ सफलमेंटरीमे पास कयलनि आ कौलेजोमे सैह भऽ गेलनि । आइ सफलमेन्टरीयेक रिजल्ट बहरयतै ।

निरसू : हँऽ तऽ आइ-काल्हि बूझू जे कलहा चीज खाइत-खाइत बहुतो लोकक बाइ बिगड़लो रहैत छैक । हमरा अपनो पेट गुम्म कयने रहैत अछि आ आङनमे तँ बुझू जे पेट फूलि कऽ डम्फा भेल रहैत छनि ।

मधुकान्त : सङिता ! आबऽ दिऔक फगुआ, तँ दुनू गोटे ओही डम्फा पर खूब फगुआ गायब ।

निरसू : हँऽ औ सङिता । बुझू जे बेटा डाकदरी पढ़ैत छथि तँ किए ने फगुआ सूझत ? हम सभ तँ मलार गाबि रहल छी ।

मधुकान्त : से किएक ?

निरसू : मर तँ देखै नहि छी छिट्टा-खुरपी ? बुझू जे एकटा चरबाह ताकब से नहि भेटत । हटौलहुँ गाय-महींस, मुदा बिनु बड़द तँ निर्वाहे नहि । जाइ छी ओही दुनू महादेवक लेल किछु घास-पातक जोगाड़मे । बुझू जे अहूँकेँ अबेर भेल, जाउ डूब दियऽगऽ ।

मधुकान्त : तऽ, भगवान सेहो सम्पुटमे लहालोट होइत होयताह ।

(मधुकान्त जाइत छथि)

निरसू : बेटा बाइलौजी पढ़ै छथिन तकर अपना तँ एतेक गुमान छनि, आ बेटाकेँ बाइलौजीमे वाइ ढील भऽ रहल छनि । डाकदरी सुसके होइतै तँ ढोढ़ाइ-मङनू सभ डाकदरे भऽ जाइत । किदन कहलकै जे चरऽ गेला तँ चोथने अयला । **(जाइत छथि)**

तेसर दृश्य

(स्थान– मधुकान्त रायक दलान । एक टा चौकी, ताहि पर मैल-पुरान दरी ओछाओल । अङपोछासँ गोठ बन्हने बैसल मधुकान्त राय तमाकू चुना रहल छथि । तन्द्रा होइत छनि, पहिने एक-आध बेर झुकैत छथि । पुनः सम्हरि कऽ तमाकूकेँ तरहत्थीसँ मलि कऽ दहिना हाथ पर कऽ लैत छथि आ वामा तरहत्थीकेँ जोरसँ नाकमे रगड़ि लैत छथि । सुरसुरी लगबाक कारणेँ गड़गड़ा उठैत छथि । तावत छिक्काक सम्भावनासे बुझि पड़ैत छनि । किछु काल छिक्काक मुखमुद्रा बनबैत छथि, तावत साइकिलक घंटी सुनि पड़ैत छनि तेँ आँखि निड़ारैत छथि कि तड़ाक-तड़ाक छिक्का दू बेर भऽ जाइत छनि । तावत बिजलीकान्त वामा हाथमे एकबारकेँ मचोड़ने प्रवेश करैत छथि ।)

मधुकान्त : **(देखिते देरी प्रफुल्लित मुखमुद्रा बनबैत)** की बौआ ! आबि गेलहुँ ? रिजल्ट की भेल ?

बिजलीकान्त : भऽ गेलै वाइचान्स । अपना तँ एहन अन्दाज नहि छल । **(बिधुआयल मुँहेँ जाइत छथि)**

मधुकान्त : हाय रे सत्यनारायण भगवान ! हुनकर महिमा अपरम्पार छनि । आब कोनो परवाहि नै, फैनलमे बौआ पास नहि भेलाह से नीक भेलनि । ओ तँ भगवानक चक्र थिकनि, छुच्छे पास तँ सभ होइत अछि आ बौआक भागमे तँ वाइचान्स लिखल छलनि । **(हाक दैत)** रौ ठिठरा ! कनी सङिताकेँ बजौने अबहुन । दौड़िकऽ जो, बौआकेँ वाइचान्स भेलनिहेँ ।

(ठिठरा अबैत अछि आ जाय लगैत अछि । तावत माथपर भरि छिट्टा घास लेने निरसूक प्रवेश)

ठिठरा : हे लियऽ गिरहत, ऊ मालिक तँ अपने चल अयला ।

मधुकान्त : आबह सङिता, हम तोरे बजबऽ लेल ठिठराकेँ पठबैत छलियैक । बौआ रिजल्ट तँ लऽकऽ अयलाह, हुनका वाइचान्स भेलनिहेँ आब तोँ सभ आशीर्वाद दहुन जे डाकदरी पार लागि जाइन, तखन होइत रहथु रोग-व्याधि गौआँकेँ आ कि नहि ?

ठिठरा : गिरहत ! बौआ डाकदर भऽ जेथिन तखन भरि गाममे मरकी ढूकि ने जाउक, लगे मोछ परोसहिँ छूरा । सभ बौएसँ दवाइ लेतनि ।

मधुकान्त : तोँ जल्दी-जल्दी थड़िसँ खरिहान धरि आ कोनटासँ दलान धरि सौँसे खरड़ि ले ।

निरसू : बुझू जे की कोनो भोज भात करब ?

मधुकान्त : सत्यनारायण भगवानकेँ सुनता पूजा कबुला कयने छलियनि । तेँ तँ अहाकेँ तकैत छलहुँ । कोना की होयतैक ।

निरसू : हेतै की ? एक मोन दूध मङा लियऽ, दस सेर चिन्नी, दू घौड़ केरा, एक सेर किसमिस, दू सेर छोहारा । बुझू जे चारि सेर नारिकेर, पाव भरि दछिनी, एक बोतल गुलाबजल । एहीसँ मोहनभोग भऽ जायत आ सुक्खा परसाद आध मोन गहूमकेँ पीसि कऽ पाँच सेर घिउ आ दस सेर चिन्नी मिला दियौ । दू ढोली पान, आध सेर सुपारी, एक कनमा लौङ, एक डिब्बा जरदा, आधा पा खयर, पाव भरि कोनो अन्नसँ एक बरूकी चून मङबा लियऽ । पान-परसाद लऽकऽ पूजा कऽ लियऽ ।

मधुकान्त : आन चीजतँ सस्त की महग, बजारमे भेटितो छैक, मुदा ई चिन्नी कतऽ सँ आनब ?

निरसू : लाउ टाका, हम आनि दैत छी । बुझू जे दू टके सेर जते लेब तते हम गामक मुखियेक ओहि ठामसँ उप्पर कऽ देब । हँ, एकटा चीज आरो-भगवान लेल पाँच हाथक वस्त्रो चाही, आ एहन खुशीक दिनमे तँ उचित थिक जे नहि बेसी तँ एक खण्ड धोती आ एकटा अङपोछा अपनो लेल आ पुरोहितोक लेल अवश्य सँ अवश्य लऽ लियऽ ।

मधुकान्त : सङिता ! अहाँ तँ तेहन विस्तारय-तारय कयने जाइ छी जे...

निरसू : आहि रे ब्बा ! बुझू जे एहन भागो तँ अहींकेँ भेल अछि जे बेटाकेँ वाइचान्स भेल अछि । एहि परोपट्टामे तँ केओ डाकदरीक पढ़ाइ पढ़ब छोड़ू सुननहु नहि अछि ।

मधुकान्त : कने बजारक काज जँ कऽ दितहुँ सङिता तँ बड़ गुन मानितहुँ ।

निरसू : बुझू जे बजारक काज कही तँ एही ठाम एखने बजारि दी । **(हँसैत छथि)**

मधुकान्त : **(गम्भीर बनल)** अच्छा से तँ बजारक दिन जखन औतैक तखन । आबऽ दियौक जूड़शीतल तखन फड़िछा लेब । एखन कीनऽ-बेसाहऽमे कने मद्दति करू । हम अपने दूधक जोगाड़मे जाइ छी आ ठिठराकेँ कने पठबैत छियेक जे ओझाकेँ खबरि कोना कऽ ने देबनि ।

निरसू : अच्छा हम खा-पी कऽ चल अबैत छी। अहाँ टाका ओरिया कऽ रखने रहू। (जाइत छथि)

मधुकान्त : ठिठरा, रौ ठिठराऽऽऽ ! (ठिठराक प्रवेश)

मधुकान्त : खड़रल भेलौ ?

ठिठरा : कोनटा खाली बाँकी छै।

मधुकान्त : दूर नङ्टा जल्दी कर। हे कने लपकि कऽ चल जो उतरवारि गाम आ ओझाकेँ कहिहौंन जे भगवानक पूजा छैक से अवस्स सँ अवस्स भरियो रातुक खातिर आबथु। हम जाइछी दूधक इंतिजाममे टोल दिस। सङिताकेँ ओम्हरे टको दऽ देबनि।

ठिठरा : बेस गिरहत।

(ठिठरा एक दिस आ मधुकान्त राय दोसर दिस चल जाइत छथि।)

चारिम दृश्य

(स्थान– मधुकान्त रायक आङन। पूजाक सभ ओरियान। छोटकी चौकी पर माँजल लोटा, ताहि पर सराइ, ताहि पर एकटा पीयर अङपोछा, फूल आदि। डबल कोहामे मोहन भोग, एक कोहामे पान आ एक कोहामे सुक्खा प्रसाद राखल। मधुकान्त राय आ पुरोहित निरसू दुनू पीयर धोती पहिरने, कान्ह पर ललका अङपोछा। नेपथ्यसँ घड़ी घंटा आ शंखक ध्वनि सूनि पड़ैत छैक। स्वर सुनाइ दैत छैक– एतावद्द्रव्य मूल्यक हिरण्यमग्नि दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे।

(एक व्यक्ति आरतीक सराइ लऽकऽ हँकार पुरनिहार सभकेँ देखा रहल अछि।)

निरसू : **(दक्षिणा लैत प्रसन्न मुद्रामे)** बोल श्री सत्यनारायण भगवान की जय। होउ सङिता आब पान-प्रसाद बाँटू।

ओझाजी : पान-प्रसाद बँटबासँ पहिने कनेक बिजली बाबूकेँ सभसँ आशीर्वाद लऽ लेबऽ कहल जाइनि।

पानक बारिक : (दर्शकसँ) अगुतायब नहि केओ। पान-प्रसाद लऽ लेब तखने कोनो गोटा जायब।

(मधुकान्त राय मोहनभोग आ निरसू सुक्खा प्रसादक कोहा उठबैत छथि।)

मधुकान्त : रौ ठिठरा ! बौआ कतऽ कोनमे नुकायल छथि । कनेक सोर करहुन ।
(मधुकान्त नेपथ्य दिस मुँह कऽ प्रतीक्षा करैत छथिन । बिजलीकान्त मुँह बिधुऔने अबैत छथि, आँखि मीड़ि रहल छथि ।)

ओझाजी : की औ ! एना मुँह किएक बिधुऔने छी ? अहींकेँ लऽकऽ ई उधब-बाधब आ अहीं मुँह नुकौने छी से किएक ?

बिजलीकान्त : ओझाजी औ !.... हमरा तँ बाइचान्स....

ओझाजी : बाइचान्स की ? क्रौस तँ ने लागि गेल ?

बिजलीकान्त : हूँ, रिजल्टमे हमरनामे नहि अछि ।

ओझाजी : तखन ई धूम-धड़ाम कथीक ?

बिजलीकान्त : से तँ बाबू जानथि ।

मधुकान्त : की होइत छनि ओझा ?

ओझाजी : ई वाइचान्स फेल भऽ गेलथिन ।

मधुकान्त : फेल ? **(हाथसँ कोहा खसि पड़ैत छनि, मोहनभोग हेड़ा जाइत छनि । बैसल धीया-पुता सभ हाँइ-हाँइ सुरकऽ लगैत अछि ।)**

निरसू : सुक्खा प्रसादक एक डबल फक्का फाँकि लैत छथि । पानक बारीक पाँच-सात खिल्ली पान लऽकऽ मुँहमे ठूसि सरियबैत अछि ।

पानक बारीक : बोल दे श्री सत्यनारायण भगवान की जय ।

निरसू : जय ! बूझू जे... **(ता मुँहक सुक्खा प्रसाद उड़ऽ लगैत छनि । पानवला हबर-हबर पान चिबबऽ लगैत अछि । धीया-पुता हाथ उनटा कऽ चटैत अछि ।)**

एकटा छौड़ा : ई तँ वाइचान्स थोड़ेक परसाद हाथ लागि गेल । ने तँ...

(परदा खसैत अछि ।)

[मिथिला मिहिर 14 मार्च 1965 ई.]



दिशाबोध

पात्र-परिचय

सुन्दर : नवयुवक, वयस 30-32, पैंट-शर्टमे

मालती : नवयुवती, वयस 25 गृहिणी नूआ पहिरने

नूनू : ग्रामीण नवयुवक वयस 30-32, धोती-कुर्त्ता, कान्ह पर अङपोछा

वृद्ध : वयस 70क लगपास, ग्रामीण वेशभूषामे

छौंड़ा : 12-13 वर्षक

पुरो दृश्य

(स्थान- सड़क। दूरपर लाउडस्पीकरपर गीतक कोनो कड़ी स्वरमे कानमे अबैत, नेपथ्यमे साइकिलक घंटी, मोटरक हॉर्न आदिक स्वर बीच-बीचमे सुनाइ पड़ैत। मंचपर अरुणाभ प्रकाश। परदा उठैत अछि आ फुलपेन्ट, बुशसर्ट पहिरने, आँखिपर चश्मा, हाथमे बिनु जरैत सिगरेट लेने सुन्दर नामक एक युवक प्रवेश करैत अछि।)

सुन्दर : इह, चंठ अछि ई बड़ा बाबू। अपनो काज लङटबा हमरे माथपर थोपि देत आ अपने टंडैली करैत घुरत। भरि दिन खटा कऽ प्राण लेबापर वृत्त। डाँड़-पीठ एकट्ठा भऽ गेल। एक कप चाहो पीब तकर पलखति नहि भेल। दुइओ टाका बाइली आबि जाय तँ लङटबेकेँ ताहिमे शेयर अवश्य चाही। कोनो जिन्न पोसने अछि कि पिशाच ? कतेको एकान्तमे दुइओ टाका ककरो आबि जाइक कि ओकरा तुरन्त खबरि लागि जाइत छैक।

(बामाहाथेँ फुलपेन्टक बामा जेबीपर थपकी दैत सलाइ वाहर करैत अछि आ दहिना हाथक सिगरेट ठोर तर दबबैत सलाइ पजारबाक हेतु काठीकेँ घसैत अछि, काठी जल्दी नहि पजरैत छैक। (दर्शक दिस ताकि) –

इह् जमाना बड़ बैमान भऽ गेल । यैह सलाइ पहिने होइत छलैक । आब तँ बैमनमा सभ एके कातमे मसाला दैत छैक । सलाइमे आधा काठी रहबे करत ताबत मसाला खतम । **(काठीकेँ घसैत अछि, मुदा नहि पजरैत छैक तँ खिसिया कऽ सलाइकेँ दर्शक दिस फेकि घड़ी दिस आँखि उठा झटकल चल जाइत अछि । परदा उठैत छैक ।)**

पहिल दृश्य

(शहरक एक टा सिकस्त कोठली, देबालपर दू-तीन टा अभिनेत्रीक फोटो लटकल । सोझाँमे टेबुलपर एकटा टाइमपीस घड़ी, तकरा कातमे एक टा कुर्सी, कोठलीक एक भागमे मसहरी लागल एक टा चौकी देखि पड़ैत छैक । पृष्ठ-भूमिमे धूआँ सन देखि पड़ैत छैक । एक टा नवयवुती मालती हाथमे केटली लेने देखि पड़ैत छैक । केटलीकेँ टेबुलपर रखैत, आँचरसँ दुनू हाथेँ दुनू आँखि मलैत–)

मालती : ई जरलाही दाइ केहन तीतल जारनि उठाकऽ लऽ अनलक जे आँखि फुटि गेल । ई समङडाही लगीचवला देकानसँ आनि कऽ फेकि गेल अछि । ई बैमनमा जारनिकेँ पान जकाँ भरि दिन पानिसँ भिजबैत रहैत छैक कि की करैत छैक से ने जानि । कनेक चारि डेग आगू जाय पड़ितैक तेँ ई धोछिया एकरे दोकानसँ आनिकऽ राखि देलक अछि । लिखल-पढ़ल लोक ढहनायल फिरैत छैक एक बजाबय सत्रह आबय, मुदा दाइ-मजुरनी तकनो ने भेटत, तेँ डरेँ किछु कहितो ने छिऐक । **(फेर आँचरसँ आँखिकेँ पोछि लैत अछि, ताबत नेपथ्यसँ आवाज अबैत छैक– चिट्ठी.... आ एक टा लिफाफ खसि पड़ैत छैक । युवती उठाकऽ उपरका पता पढ़ि टेबुलपर राखि दैत छैक । पुनः बाजऽ लगैत अछि-)**

मालती : हिनकर कोन दोख, ई तँ गैसक चुल्हा कीनऽ लेल छटपट करैत छथि, मुदा हम रोकैत छियनि । दू सालसँ उपजाबाड़ी एक चुटकी नहि भेलैक अछि । तीन बरखसँ नौकरी करैत छथिन, मुदा माय-बापकेँ सेहन्ता होयतनि जे कहियो पचीस-पचास हाथकऽ देने होयथिन । **(घड़ी देखि)** आब तँ पाँचसँ उपर भऽ गेलैक, अबिते होइथिन, पनपिआइ तँ बना लेलहुँ, चाहोक पानि चढ़ाइए दैत छिऐक । **(केटली लऽ जाय लगैत अछि ता सुन्दर प्रवेश कऽ)**

सुन्दर : आइ फुर्ती करु, बड़ी फस्ट क्लास फिल्म लगलैक अछि । सबेर नहि जायब तँ टिकटो ने भेटत । **(जुत्ता बाहर कऽ चप्पल पहिरैत, कुर्त्ता बाहर कऽ चौकीपर रखैत अछि ।)**

मालती : (हाथमे लिफाफ दैत) अहाँ ताबत चिट्ठी पढ़ि लियऽ, हम चाहक पानि चढ़बैत पनिपिआइ लेने चल अबैत छी (**कहैत केटली लऽ चलत जाइ अछि। युवक लिफाफ फोलि पढ़ऽ लगैत अछि।**)

स्वस्ति श्री बौआके शुभ आशीर्वाद ! हम शरीरे कुशल छी। मनसँ कुशल होयबाक सम्भावना आब नहि बुझना जाइत अछि। अहाँक माय जे अस्वस्थ भेलीह से निके होयबाक नामे ने लैत छथि। अहाँके घरक परिस्थिति नीक जकाँ बूझल होयबाक चाही। परुकाँ सालक बाढ़ि आ एहि सालक रौदी घरके खुक्ख कऽ देलक। अहाँके तीन माससँ पत्र लिखि रहल छी, मुदा अहाँ कानमे तूर-तेल दऽ बैसल छी। हम जनैत छी जे शहरक खर्च बरंबोह भऽ गेल छैक। वस्तुजातक दाम आकाश ठेकि गेल छैक, तैयो जकरा घर परिवार छैक से सभके सम्हारिते चलैत अछि। पेटक हेतु अथवा खेतीबाड़ीक हेतु हम कहियो अहाँके किछु नहि लिखलहुँ। आङ-समाङक बात छैक। ओना घरमे अन्न रहैत तँ बेचिकऽ काज चला लितहुँ से तँ एहि बेर बेसाहे लागत। अहाँक माय बारंबार अपने चलऽ कहैत छथि, मुदा हम जांकऽ भार नहि बनऽ चाहैत छी। तत्काल 150/- रुपैयाक कोनो प्रबन्ध कऽ पठा दी से अनुरोध। इति शुभम्।

अहींक अभागल बाबूजी

(सुन्दर चिट्ठी पढ़िकऽ मचोड़ि कऽ टेबुलपर फेकि दैत छैक। ओम्हरसँ युवती एक हाथमे हलुआ आ आलूक भुजिया प्लेटमे आ दोसर हाथमे गिलासमे पानि लेने अबैत अछि आ टेबुलपर राखि दैत छैक)

सुन्दर : (**मालती दिसताकि**) – भानसक सभ ओरियान कऽ राखि लियऽ। सिनेमासँ घूरब तँ एक कात तरकारी आ दोसर दिस चटपट सोहारी बना लेब।

मालती : चिट्ठी के लिखलनि अछि ?

सुन्दर : की अहाँके होइत अछि जे कोनो छौड़ी लिखलक अछि ?

मालती : (**मुसकियाइत**)– से तँ अपने जानी। जँ ककरोसँ साटि-घाटि रखने होयब तँ लिखने होयत। हम तँ गरीबक बेटी छी। भुच्चड़ गाममे नैहर अछि। एतेक छकल-बकल की जानऽ गेलिऐक।

(सुन्दर प्लेट उठाकऽ जलपान करऽ लगैत अछि।)

मालती : कहलहुँ नहि ? गामसँ बाबू लिखलनि अछि ? मायक की हाल छनि ?

सुन्दर : अहाँ सब बात जानिकऽ अनठबैत छिऐक । बूढ़ाक लटाढम अहाँ नहि ने बुझबनि । आइ 29 तारीख थिकै, काल्हि रवि थिकैक, बूढ़ा ठिकियाकऽ तीर छोड़ैत छथिन से नहि देखैत छियनि । बुझैत छथिन– मास लगलापर चिट्ठी पहुँचतै' तँ लाथ करबाक अवसर नहि भेटतैक । **(मालती प्लेट खाली होइत देखि ऊठिकऽ चल जाइत अछि ।)**

सुन्दर : **(स्वगत)** कमसँ कम डेढ़ सय पठाउ । डेढ़ सय बड़ थोड़े भेलैक ? कुल मिलाकऽ साढ़े चारि सय तँ मास दिनपर उठबैत छी । एक सय सुखायले मकान भाड़ा लागि जाइत अछि । साठि रुपैया दूधवलाक भऽ जाइत छैक । तखन जँ डेढ़ सय गाम पठा दियौनि तँ अपने सभ हवा पीबि कऽ जीबू ?

(मालती हाथमे एक कप चाह लेने अबैत अछि । हाथ कऽ चाह दैत)

मालती : मायक हाल-समाचार नहि कहलहुँ ?

सुन्दर : अरे, ओकरे बिमारी-सिमारीक नाम पर तँ बूढ़ा झीटऽ चाहैत छथि । बेसी नहि, कमसँ कम डेढ़ सय । **(एतबा बजैत भहुँकेँ जोड़िकऽ ऊपर उठबैत आ ठोरकेँ कोँचिया कऽ विकृत मुखमुद्रा बना लैत अछि)** अच्छा, हम जाबत पैखानासँ अबैत छी ताबत अहाँ सिङार-पटारकऽकऽ तैयार भऽ जाउ । **(कहैत चल जाइत अछि ।)**

(मालती बुशसर्टकेँ हैंगरपर लटका दैत छैक, जुत्ताकेँ ब्रशसँ झाड़ि यथास्थान राखि दैत छैक । प्लेट आ गिलासकेँ नेपथ्य दिस राखि गिलासमे पानि आनि टेबुलपर छिच्चा दऽ हाथेसँ पोछि टेबुलकेँ एक कात कऽ दैत छैक ।

मालती : **(स्वगत)** बेटा भऽकऽ कहैत छथिन बूढ़ा झीटऽ चाहैत छथि । ने जानि माय कोना छथिन ? अपना देहेँ तँ हमरा बड़ सुख नहि । नीके खाउ, नीके पहिरू, नीके-नाँ रहू, मुदा आत्मा कँपैत रहैत अछि जे माय बापक रीन...।

सुन्दर : **(शौचालयसँ आबि तौलियासँ हाथ मुँह पोछैत, मालती दिस देखि)** आहि रे बा, अहाँ एखन धरि कपड़ो नहि बदललहुँ अछि ?

मालती : हम कपड़ा नहि बदलब ।

सुन्दर : एहिना चलब ?

मालती : हम नहि जायब । जकर माय दुःखित रहतैक; बापे सहायताक हेतु खेखनियाँ करतैक से अहाँ जकाँ फुर्रफाइँमे टाका बूकैत होयत ? ने हम जायब ने अहाँकेँ जाय देब ।

सुन्दर : **(बुशसर्ट पहिरैत जुत्ता दिस बढ़ैत)** अहाँ नहि जायब तँ नहि जाउ, हमरो नहि जाय देब से अहाँ हमर गार्जियन छी ?

मालती : हम अहाँक गार्जियन किए रहब, मुदा जे माय-बाप एतेक सिद्दति सहिकऽ पोसलनि-पाललनि, लिखौलनि-पढ़ौलनि, ताहि मायक वास्तेँ दवाइ ले' अहाँ कहैत छिऐक बूढ़ा झीटऽ चाहैत छथि आ सिनेमामे पाइ फेकऽ जाइत छी से उचित थिकैक ?

सुन्दर : उचित अनुचितक ज्ञान अहाँ करबऽ चललहुँ अछि ? अहाँकेँ चलबाक हो तँ चलू ने तँ बण्डा चललाह । **(जुत्ता पहिरबाक हेतु प्रस्तुत होइत अछि । मालती जुत्ता हाथ कऽ उठा लैत छैक; सुन्दर झूकलि पत्नीकेँ एक लात मारैत अछि । ओकरा हाथसँ जुत्ता खसि पड़ैत छैक; ओ जुत्ता पहिरि चल जाइत अछि । मालती उठबाक चेष्टा करैत रहैत अछि, परदा खसि पड़ैत छैक ।)**

दोसर दृश्य

(ग्राम्य जीवनक परिवेश । पृष्ठभूमिमे कड़चीक टाटपर लत्ती-फत्ती लतरल । मध्यवित्त परिवारिक दलान । एक कात जौड़खट्टापर सूतल एक वृद्ध । पृष्ठभूमिमे टनटन-टुनटुन घंटीक शब्द होइत छैक । एक कातमे एक टा खोप आ खुट्टा देखि पड़ैत छैक । चिड़ै-चुनमुन्नीक शब्दसँ अनुगुंजित वायुमण्डल । क्रमहि मंचपरसँ अन्हार कम भेल जाइत छैक आ प्रकाश पसरल जाइत छैक जाहिसँ प्रभात होयबाक अनुभव होइत छैक । बड़दक डोरी पकड़ने 26-27 वर्षक युवक प्रवेश करैत अछि । बड़दकेँ खोप लगक खुट्टामे बान्हि दैत छैक । भीतरसँ घास अनैत देखि बड़द जोरसँ मूड़ी हनैत छैक जाहिसँ ओकर गरदनिमे लटकल घंटी जोरसँ बाजऽ लगैत छैक । खाटपर पड़ल वृद्ध सुगबुगाइत अछि । युवक बड़दक पीठ ठोकि आगू बढ़ैत अछि । युवकक नाम थिकै नूनू ।)

नूनू : **(बड़द दिस संकेत करैत)** ई थिकाह हमर महादेव, विश्वम्भर, हिनके परिश्रमक बलपर ई फुटानी **(चुटकीसँ मोछ फेरि लैत अछि)** 'जे रहि जागत, तुअ शरणागत, लागत हर हे कलुष ने एक' हिनकर सेवासँ विमुख कोनो मूर्खे गृहस्थ सुखक कल्पना कऽ सकैत अछि । **(मुँह झपनहि वृद्धक कंठसँ ध्वनि क्रमशः मुखर होइत जाइत अछि)** सीताराम सीता-राम, दुर्गा, गंगा, जय बाबा बैद्यनाथ, काशी विश्वनाथ **(नूनू ध्वनिदिस साकांक्ष होइत फुर्त्तीसँ वृद्धक दिस बढ़ैत-)**

ई थिकाह हमर प्रजापति, हिनके साधनाक प्रतिफल थिक ई सम्पूर्ण सृष्टि **(वृद्धकेँ पैर पाँजर सभ जाँति दैति छनि । बूढ़ा खाटपर ऊठिकऽ बैसैत छथि, बटुआ फोलि तमाकू बाहर कऽ तरहत्थीपर रखैत चुनौटीसँ चून बाहर कऽ चुनबैत छथि । नूनू ताबत ऊठिकऽ बड़दक आगूमे देल घासके समेटिकऽ लग कऽ दैत छैक ।)**

बूढ़ा : रे नूनू ! आइ तँ दूधोक पार छौक । ई हो पोसियादार भारी बैमान छौक, रतुका दूधक गाभ बाहर कऽ दूध दऽ जाइत छौ, तेँ अपने जाकऽ भैस दूहि अनितेँ।

नूनू : बाबू हौ ! जेँ जमाना एहन बैमान भऽ गेलै तेँ देखैत ने छहक । ककरोदेहपर रोइयाँ होइ छै ? काल्हि मीता कहने रहय जे हऽर लेबाक होअह तँ भोरे समाद दिहऽ । पछबरिया डोँड़ामे पानि छैक । अगता खाउर लगाकऽ राखि देबऽ चाहै छिऐ । अइ सत्यानाशी बाढ़िकेर कोन ठेकान, कखन हुल सनी चल आओत । ओम्हरेसँ भैंसो दूहिकऽ पठा देबैक । **(प्रस्थान)**

(वृद्ध खाटपरसँ ऊठि, तमाकू झाड़ि, ठोर तर लऽ, अंगपोछासँ माथकेँ बान्हि बड़का कलगैयाँ लोटा लऽ फराठी ताकऽ लगैत अछि । चारू भाग ताकहेर कऽ नहि भेटलापर)

वृद्ध : रय नूनू ! रय हमर ठेङा के लऽ गेल ?

(एक टा बारह-तेरह वर्षक छौंड़ा- 'नूनू कयलनि एम्मे पास, मुदा छिलै छथि घरपर घास' -पढ़ैत एक भागसँ अबैत अछि, दोसर दिस चल जाइत अछि ।)

वृद्ध : **(कचकचाकऽ)** बेकारे एकरा एत्ते लिखौली-पढ़ौली । जखनी खेतिए-पथारी करैक छलै तखनी बेकारे ने घरोक आँटा गील कयलक । कतबो कहै छिऐ कहूँ नौकरी-चाकरी ताक, महज एकर मतिए मारि देने छै । घाघ के फकड़ा पढ़ऽ लागत- उत्तम खेती, मद्धिम वान, अधम चाकरी भीख निदान । कतबो कहै छिऐ एत्ते जेँ बाबू-भैया सब नोकरी करै छै से सब अबुरबाने छै ? एही टोलामे मङनू रायसँ मातवर तँ दोसर नइ ऐछ । दूरापर जोड़ा बड़द, खुट्टा पर दू गो भैंस, पाँच बीघा सोनवरिसा बाधक जमीन, दस-पाँच मन लगानी-भिड़ानी । ओकरो तँ एक्के गो बेटा छै, महज ऊहो तँ नौकरी करै छै । हमरा ई छौंड़ा सब किचकिचबैंत रहैतऐछ । **(ताबत खाटेपर पाँजर लग फराठी देखबामे आबि जाइत छैक । वृद्ध लोटा उठा बिदा भऽ जाइत अछि । परदा खसि पड़ैत छैक ।)**

तेसर दृश्य

(स्थान- सड़क, पृष्ठभूमिमे बाधवनक वातावरण, बड़दकेँ हँकबाक ध्वनि, बड़दक गरदनिक घंटीक शब्द सुनाइ पड़ैत छैक ।)

सुन्दर : **(प्रवेश करैत)** मूर्ख परिवारमे विवाह भेलापर हमरे जकाँ लोककेँ भोगऽ पड़ैत छैक । तेहनमूर्खक संग भऽ गेल जे अपनो कमायल खटायलपर शान्ति-पूर्वक जीवन यापन करब, से नहि भऽ पबैत अछि । कहबी छैक

जकरे ले चोरि करी सैह कहय चोरा । एही मौगीकें सुख देबाक खातिर हम शहरमे एक सय टाका दऽकऽ भाड़ापर मकान लेने छी आ यैह मौगी हमरा उपदेश देबऽ लागत । आब तँ हाथो पकड़ऽ लागल अछि । राति जे सिनेमा देखिऽ बहरयलियनि से घूरिकऽ डेरा नहि गेलियनि । आइ रविए थिकैक । एक्के दिनमे मौगो सोझ भऽ जइतीह ।

(एक दिस सुन्दर जाइत अछि, दोसर दिस सँ नूनूक प्रवेश । नूनू अंगपोछा माथमे बन्हने आ फाँड़ कसने अछि, देहमे सौंसे थालकादो लागल छैक ।)

नूनू : खेतिओ-पथारीमे कम झंझटि नहि छै । मीताक खेखनियाँ कयलहुँ तँ हऽर भऽ गेल अपना लगाकऽ दू गो, मुदा जऽनमे किल्लति भऽ गेल । कादोकें सूखऽ तँ नहि दितिऐक, अपने बीया उपाड़ऽमे भिड़ि गेलिऐ । धरती तँ माता छथिन, वसुन्धरा, हिनकर सेवा करू तँ मेवा पबैत रहू । कहने छथि घाघ-नित्तह खेती दोसरे गाय, जे ने ताकय तकरे जाय । जाइ छी गामपरसँ जऽनसब ले पनपिआइ आनि कऽ देबऽ ले । **(जाय लगैत अछि ताबत ओम्हरसँ सुन्दर प्रवेश कऽ नूनूसँ पूछैत छैक–)**

सुन्दर : नूनू रायक घर कोन टोलपर छनि ?

नूनू : **(आश्चर्यचकित होइत)** सुन्दर हौ ! तों कोना एम्हर ? एह् धन्य भाग हमर ! मोन होइत अछि पाँजमे समटि लियऽ, मुदा तों बाबू-भैया छह, हमरा सौंसे देहमे माटि लागल अछि, तोहर कपड़ा दूरि भऽ जयतह ।

सुन्दर : **(आरो बेसी आश्चर्यचकित होइत)** अय हौ नूनू ! तोंही थिकाह नूनू राय एम.ए. इन फिलासफी ? तोहर आवाजसँ चिन्हलियह, चेहरा देखिकऽ नहि चीन्हि सकैत छलियह । गुरुक सप्पत, तोरा देखिकऽ भेल जे कोनो महिसवार थिक ।

नूनू : आ तोरा देखिकऽ हमरा भेल जे एम.ए.क नामपर ई कोनो कलंक थिक । **(कहैत हँसैत घिचने लेने चल जाइत छैक । परदा उठैत अछि आ पुरने नूनूक दलानक दृश्य देखबामे अबैत अछि । नूनूक पिता कुड़ुर-आचमन करैत देखि पड़ैत छथिन ।)**

(सुन्दरक संग नूनू प्रवेश करैत)

नूनू : बाबू तों जलखै कयलह कि ने ?

वृद्ध : हँऽ रय नूनू, तोरा अबेर भऽ गेलऽ ताले हम किछु पानि पी लेलियऽ । कनेक हुक्का भरिकऽ दऽ दिते । **(ताबत वृद्धक नजरि सुन्दरपर पड़ैत छैक)** अँय रय नूनू ! ई तोरा जऽरे के छथुन ?

नूनू : ई हमर कॉलेजियासंगी थिकाह **(कहैत हुक्का आनऽ जाय लगैत अछि ।)**

वृद्ध : सुन, सुन, पाहुन साच्छात् विस्नु थिकाह । गिरहस्तकेँ जखनी भाग्गक उदय होइ छै तखनी पाहुन अबैत छथिन । पहिने पैर धोइ ले पानि आ बैठऽले' बिछौना लेने आ तखनी हुक्का **(नूनू झटकि कऽ चल जाइत अछि ।)**

वृद्ध : (सुन्दरसँ) अहाँ की करै' छिकी बाबू ?

सुन्दर : हम सर्विस करैत छी ।

वृद्ध : सर्विस कोनो चीजक बेपार होइ छै ?

सुन्दर : **(मुसकुरा कऽ)** व्यापार नहि, नौकरी ।

वृद्ध : ओऽऽ, नौकरी करै' छिकी । **(एही बीचमे पहिलुके छौंड़ा फेर पढ़ैत अबैत अछि आ चल जाइत अछि–)** नूनू कयलनि एम.ए. पास, मुदा छिलै' छथि घोड़ा घास । सुन्दर विस्मित भेल छौंड़ा दिस देखऽ लगैत अछि ।

वृद्ध : की देखै' छिऐ बाबू, ई छौंड़ा हमरा एनाहिते किचकिचबैत रहै'ऐछ । नूनूकेँ कहै' छिऐ' जे नौकरी-चाकरी ताक, महज ई काने बात ने **(तावत काँख तर कंबल, एक हाथमे लोटा आ एक हाथमे हुक्का लेने नूनू आबि जाइत अछि ।)**

नूनू : **(वृद्धक हाथ कऽ हुक्का आ सुन्दरक हाथकऽ लोटा दऽ कंबल ओछबैत)** की कहियऽ सुन्दर, ई हमर पिताजी थिकाह । हिनका एतबे भुकनी लागल रहैत छनि जे नौकरी ताक, मुदा हम नोकरी कऽकऽ पराधीन भऽ जाउ तँ वृद्धमाता-पिताक सेवा कयलपार लागत ? नौकरी तँ लहं लाढ़िला करय डिक्सनरीमे फैमिली माने होइत छैक– अपन पत्नी आ अपन धीयापूता, जे माय-बापक ऋणकेँ सरकारी ऋण जकाँ पचा लेबामे बुधियारी बुझैत हो, मुदा जकरा अपन निर्वाह योग्य सम्पत्ति होइक, वृद्ध माता-पिताक उत्तरदायित्व होइक, ज्ञानक उद्देश्यसँ शिक्षा ग्रहण कयने हो से नोकरीक पाछाँ किएक बेहाल होयत ?

वृद्ध : सुनियौ औ बाबू, लिखि-पढ़िकऽ...

नूनू : हौ सुन्दर, जेँ अपना देशमे लिखबा-पढ़बाक अर्थ भऽ गेलैक नौकरी करब तेँ ने शिक्षित बेरोजगारक संख्या सुरसाक मुँह जकाँ बढ़ले जाइत छैक, हमरा तँ जहिए गुरुजी पढ़ौलनि– ''माय-बाप गुरु सेवामे आसक्त, मूर्खो नीक, न बुध पुनि ततय विरक्त' तहिए ठानि लेलहु जे पढ़ब तँ एम.ए. धरि, मुदा माय-बापक लग रहि जिनगी भरि हुनके चरणक सेवा करब । **(सुन्दर नूनूक गप्प सुनैत जाइत अछि, मुह विर्वण भेल जाइत छैक ।)**

सुन्दर : (सहसा उठिकऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि) अच्छा भाइ नूनू, आब आज्ञा दैह।

नूनू : कथीक आज्ञा दियह ?

सुन्दर : जयबाक ।

नूनू : से किएक ? कतऽसँ अयलह, कोम्हर अयलह से किछु ने कहलह आ आज्ञा मङैत छह ।

सुन्दर : शहरसँ दिग्भ्रान्त भेल अयलहुँ, अपन कर्त्तव्य बिसरि गेल छलहुँ । हम दस टाका नौकरी कऽ अहंकारमे आन्हर भऽ गेल छलहुँ । तोहर पितृभक्ति आ कर्त्तव्यपरायणता हमर आँखि फोलि देलक ।

नूनू : सुन्दर, एतेक नहि बनाबह हमरा । हम कोन योग्य छी जे ककरो आँखि खोलि सकबै । ई तँ हमर भाग्य जे एखनो धरि हम मोन छलियह ।

सुन्दर : **नूनूकें भरि पाँज पकड़ि हिचुकऽ लगैत अछि ।)**

नूनू : **(छोड़बैत)** मथा तोहर ठीक छह कि किछु गड़बड़ा गेलह अछि ?

सुन्दर : गड़बड़ा गेल छल, मुदा आब ठीक भऽ गेल । हम माता-पिताक प्रति अपन उत्तरदायित्व बिसरि गेल छलहुँ । नूनू, छोड़ हमरा । हमर माय मरणासन्न अछि । हमरा आइए ओकरा डेरा पर लऽ जाकऽ दवाइ करयबाक अछि ।

नूनू : बेस, चल जइहऽ मुदा बिनु मुह अँइठौने दुआरिपरसँ कोना जाय देबह ।

सुन्दर : नहि नूनू, आब पाँचो मिनटक विलम्ब हमरा सहाज नहि अछि ।

नूनू : हम गृहस्थक धर्म छोड़बाक हेतु तैयार नहि छी । दस मिनट लगतह । **(सुन्दर नहि नहि कहैत रहैत छैक, नूनू ओकरा भीतर दिस घिचने चल जाइत छैक । परदा खसि पड़ेत छैक ।)**

(साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित लेखक– कार्यशाला-शिविर, वाराणसीमे रचित)

[मिथिला मिहिर 16.7.1978 ई.]



कौआ लऽ गेल कान

पात्र परिचय

डाक्टर साहेब : अधवयसू, पैंट–कोट–टाइमे

धन्नू : अधवयसू, धोती–कुर्तामे

जगतबाबू : अधवयसू भद्रजन, धोती–कुरतामे

आनन्द भट्ट : अधवयसू, धोती–कुर्ता, आँखिपर मोट शीशाक चश्मा

पड़ौआ : युवक, गोलगला गंजी आ ठेँठ धोती पहिरने

मनोज ओ मोहन : नवयुवक छात्र

दाइ : प्रौढ़ा, मैल मोचड़ल नुआ पहिरने

[स्थान– डाक्टरक आवास, मुखान्धकसमय, डॉ० थाकल आ आराम कुर्सी पर पड़ल, केवाड़ ओठङाओल, नौकर दूधक पैकेट लऽ अबैत अछि]

डॉक्टर : (पदध्वनि सुनिकऽ भितरेसँ) की रौ पड़ौआ, दूध भेटलौ ?

पड़ौआ : जी सरकार, दूध तऽ भेटल, महज ए गो बात...

डॉक्टर : अगाउ जे जमा छलै से सठि गेलै ?

पड़ौआ : जी नइँ ।

डॉक्टर : तखन की एक गो बात ?

पड़ौआ : बौआ सिन्दरी सऽ कहिया घूरै के बात कहले छलखिन ?

डॉक्टर : तेरह तारीख कऽ ।

पड़ौआ : महज़ आइ तऽ उनैस तारीख ने हइ ?

डॉक्टर : गामक गेल, निन्नक सूतल कखन आओत, कखन जागत, के कहि सकैए ? पटना होइत अयबाक छलनि । भऽ सकैए ओतहि विलम्ब भऽ गेल होइनि । से की ?

पड़ौआ : जगत बाबू कहै छला गऽ जे कहाँ दुन बौआ के रस्तेमे पकइड़कऽ वियाहि देलकनि गऽ ।

डॉक्टर : हँऽ हँऽ अन्हेर होइ छै जे पकड़ि कऽ बियाहि देतै । हुनका ई बात के कहलकनिहें ।

पड़ौआ : से तऽ ऊ जानैथ, महज ऊ मजाक मे नइँ, सीरियस हो के कहला । **(पड़ौआ चल जाइत अछि । केवाड़ खटखटयबाक शब्द ।)**

डॉक्टर : **(बाहर होइत)** अहा, धन्नू बाबू, आउ आउ, एह, अहाँ तँ डुमरिक फूल भऽ जाइत छी । कहू तँ आइ कतेक दिन पर ई बाट सूझल अछि !

धन्नू : डॉ० साहब ! ई बाट तँ विलंबोसँ सुझिते अछि, मुदा एखन जेहन संकटमे हम फँसि गेल छी, ताहिसँ बहरयबाक बाटे ने बुझाइत अछि ।

डॉक्टर : से की ?

धन्नू : आ रे हमर माझिल बालक छथि ने....

डॉक्टर : हँऽ हँऽ मोहन, जे एम्.ए. इंगिलिशमे पटनामे पढ़ैत छथि, हमर मनोजो तँ सिन्दरी जाइत काल कहने गेलाह जे घुरतीमे मोहनसँ भेट करैत घूरब । से की भेलनि हुनका ?

धन्नू : अपनो इच्छा छल आ हुनको विचार जे एम्.ए. पासकऽ कतहु नोकरी चाकरी भेटि गेलाक बादे विआह करब ।

डॉक्टर : उत्तम विचार । आब ओ जमाना नहि रहलै' जे बिना अपना पैर पर ठाढ़ भेने गर्दनिमे ढोल लटका दिऐक ।

धन्नू : से ढोल लटकि गेलनि ।

डॉक्टर : से कोना **(नौकर कें सोर पाड़ैत)** रौ पड़ौआ, कने चाहो बनबिहें । कोना की भेलै से कने फड़िछा कऽ कहू ।

धन्नू : एखन तँ सुनबे कयलहुँहें, मुदा उड़न्ती नहि, सत्ते बुझाइत अछि ।

डॉक्टर : सत्ते बुझबाक आधार की ।

धनू : आधार ई चिट्ठी, आइए बैरन भेटल अछि, अपनेसँ कने पढ़ि लिऔ ।
(जेबीसँ बाहर कऽ दैत छथिन, डॉ० जोर सँ पढ़ैत छथि)

सर, प्रणाम

आगाँ हाल समाचार जे अहाँक बेटाकेँ एक टा संगी साँझमे कतहुसँ आबि कऽ बलजोरी संग लऽ गेलनि । ई ओहू कालमे पढ़िते रहथि । कहलकनि— एना दिनराति बेर-कुबेर बिनु देखने, घरमे घोंसिआयल, पोथीएमे डूबल रहबेँ तँ माथे खराब भऽ जयतौक । उठ चल, कने चाह ताह पीबि आबी, माथ फ्रेस हेतौक । ई ओकरा संग एकटा केबिनमे गेला । ओइ ठाँ एकटा टेबुल पर पहिनेसँ चारि टा छौंड़ा बैसल रहैक । कातबला टेबुल पर बैसलाह । ओ सब छओ प्लेट दू टा कऽ सिंघाड़ा आ चारिटा कऽ रसगुल्लाक औडर देलकै । हिनको दूनू गोटेक टेबुल पर बैरा छौंड़ा आबिकऽ दऽ देलकनि । ई दूनू गोटे ओकरा सभक मुँह ताकऽ लगलथिन तँ ओहिमे सँ एक गोटे कहलकनि— होउ होउ, आइ आम सभा जकाँ आम जलसा थिकै । एक गोटे दिस आङुर देखबैत कहलकनि— ई हमरा सभक फ्रेण्ड थिकाह, इंगलिश ऑनर्समे फर्स्ट क्लास भेटलनिहेँ । कोनो बापक कमायल नहि, ससुरक पठाओल रुपैया थिकनि । आइ जे कोनो स्टूडेण्ट एखन आबि जायत, ई प्लेट सबकेँ नसीब हेतै । अहूँ दूनू गोटे विद्यार्थीए छी, नसीबगर तँ छीहे तेँ एखने आबि गेलहुँ, होउ होउ ।

जलपान भऽ गेलाक बाद उठलाह तँ दू गोटे दूनू गोटेक गट्टा पकड़ि कहलकनि— ई जलसाक शुरुआत थिकै, खतम हेतै सिनेमा शो खतम भऽ गेलाक बाद । बाहरमे जीप लागल रहै, ई सब नाकर नूकर करिते रहलथिन, ओ सब घिचने-घाचने ठेलि-ठालि कऽ ई कहैत जे एहन संयोग सब दिन थोड़े होइ छै, आइ सँ अहूँ दूनू गोटे हमरा सभक कम्पनीक मेम्बर भऽ गेलहुँ, जीप पर बैसा लेलकनि । जीप फुर्र भऽ गेल । पटनासँ बाहर जखन जीप वाइपास पर आबि गेलै तँ ई सब चकुअयलाह जे जीप तँ अनपेक्षित दिशामे भागल जा रहल अछि । हिनकर संगी पुछलथिन— अहाँ लोकनि कतऽ लेने जा रहल छी । तँ ओहिमे सँ एक गोटे बजलै— रोक जीप, ई बड़ टेटियाह बुझाइत अछि, उतारि दे एहि सारकेँ । जीप रुकलै, हिनका संगीकेँ उतारि देलकनि तँ अहूँक बेटा कहलथिन— हमहू उतरब, कि हिनका से तबड़ाक कनगोज तका मारलकनि जे चाउन्ह आबि गेलनि । हिनकर संगी जहाँ

किछु बाजऽ लगलथिन कि एक गोटे पाछुए सँ पीठ पर से लात मारलकनि जे खत्तामे सड़कक नीचाँ गुड़ुकि गेलाह, जीप अहाँक बेटाकेँ लेने अज्ञात स्थान दिस चल गेलैक । सुनै छी हुनका बिआहि देलकनि ।

अपनेक

एक हितचिन्तक

(एहि बीच पड़ौआ दू कप चाह, एक गिलास पानि राखि जाइत छनि)

डॉक्टर : **(चिट्ठीकेँ उनटा-पुनटा नीचाँ ऊपर देखि)** एहिमे ने तारीख अछि ने जतऽसँ आयल अछि ताहि स्थानक नाम आ ने जे लिखलक अछि ताहि व्यक्तिक नाम छैक । तखन मोहनक संगीए लिखलनिहेँ तकर कोन विश्वास ?

धन्नू : हँऽ से तँ छैक मुदा...

डॉक्टर : मुदा की ?

धन्नू : मोहनक संगीक हाथ ताथ टूटि गेल होइनि अथवा अपना लिखबाक साहस नहि भेल होइनि तेँ अनकासँ लिखौने होथि ।

डॉक्टर : मुदा मोहनक संगी खत्तामे ओंघड़ा गेलथिन तखन ई कोना बुझलथिन जे लऽ जा कऽ विआहिए देलकनि, दोसर बात जे ओ अपन नाम पता तँ लिखितथि ने ?

धन्नू : ओ अनुमान कयने होइथिन, आ हड़बड़ीमे नाम पता लिखब छुटि गेल हैतनि । **(पड़ौआ आबि कहै छनि)** सरकार, चाह सेराइयऽ ।

डॉक्टर : **(पड़ौआसँ)** रौ, तोरा जगत बाबू की कहैत छलथुन ।

पड़ौआ : ऊ कहै छला गऽ जे बौआ के कहादुन रस्ते सँ पकड़ि कऽ केउ लऽ गेलनि आ बियाहि देलकनि ।

धन्नू : कोन बौआकेँ ? ककरा बौआकेँ ?

डॉक्टर : **(पड़ौआसँ)** देखहुन तँ जगत बाबू डेरा पर छथि । **(धन्नूसँ)** हँऽ हँऽ पहिने चाह पीबि लिअऽ ।

धन्नू : ई ककरा मादे कहलक ?

डॉक्टर : चलू ने जगत बाबूसँ खुलासा भऽ जायत । हमरा ई कहू जे मोहनक संगीकेँ अनुमानक आधार की भेटल होयतनि ।

धन्नू : सुनै छिऐ' एहन गिरोह सब छै जे कन्यागत सँ दस-बीस हजार लऽ बालकक अपहरण कऽ पहुँचा दैत छैक । एखन घनहन वियाहक दिन छै ।

डॉक्टर : वियाहिए देलकनि तकर कोन प्रमाण ? आ जँ मारि कऽ फेकिए देने होइनि ।

धन्नू : एहन अलच्छ कथा जुनि बाजू डाक्टर साहेब ।

डॉक्टर : एहिमे अलच्छ सलच्छक प्रश्न नहि छैक, अनुमानक आधार तँ एहन चाही जाहिसँ विश्वासोकेँ आधार भेटैक ।

धन्नू : अहाँक नोकर ककरा दऽ कहै छल ।

डॉक्टर : हमरो बालकक प्रसंग लोक कहाँदनि बाजि रहल अछि जे पकड़ि कऽ वियाहि देलकनि अछि ।

धन्नू : जाहि विपत्तिक मारल हम अहाँक लग अयलहुँ, अहूँ तेहने विपत्तिमे फँसल बुझाइत छी ।

डॉक्टर : **(चिन्तित मुद्रामे स्वगत)** जगत बाबू तँ गम्भीर लोक छथि, ओहिना किछु बाजऽ बला नहि... **(पड़ौआ प्रवेश करैत)** जगत बाबू डेरे पर छैथ ।

डॉक्टर : तोँ पुछलहुन ?

पड़ौआ : कथी ?

डॉक्टर : बेस उल्लू छेँ, कथी कथी करै छेँ ।

पड़ौआ : हमरा कुच्छो पूछेला तऽ नइँ कहले रहलीयऽ । हमरा तऽ कहली जे देखहुन जगत बाबू डेरा पर छैथ से हम गेली आ देख के चल अइली ।

डॉक्टर : अच्छा, हम अपने जाइ छी, चलू धन्नू बाबू **(हेंगर परसँ शर्ट उतारऽ लगैत छथि ता जगत बाबू आबि जाइत छथि)**

धन्नू : हे लिअऽ, जकरे नाँ सोनमा कि सैह चल आबय ।

डॉक्टर : वाह रे वाह, हम दूनू गोटे अहीं ओतऽ विदा होइत छलहुँ, बैसबो सँ पहिने ई कहि दिअऽ जे पड़ौआ केँ की कहने छलिऐ ।

जगत : सैह पूछऽ तँ अयलहुँ अछि । हमरा प्रो० आनन्द भट्ट कहलनि जे डॉ० साहेबक बेटाकेँ सत्ते पकड़ि कऽ कतऽ दन लऽ जा विआहि देलकनि अछि ?

डॉक्टर : हुनका के कहलकनि ।

जगत : से तँ भट्टजी जानथि ।

डॉक्टर : धन्नू बाबूकेँ सेहो डाक सँ बिना नाम ठेकानाक बड़का टा ढड्ढर भेटलनि अछि जाहिमे लिखने छनि जे मोहनकेँ चारिटा छौंड़ा केबिनमे सिंघाड़ा-रसगुल्ला खोआ, जीप पर चढ़ा, लऽ जाकऽ कतहु बियाहि देलकनि अछि ।

जगत : डॉक्टर साहेब, बेटा बला सब अगराइतो छथिन बेहिसाब । कन्यागत सब मुँहमे धान दैत अछि तँ लाबा होइत छैक आ बेटावला जकरा चार पर लाख खढ़ नहि, सेहो लाख सँ कमपर मुँह नहि बजैत छैक, विवेकक कोन गप्प, लाजो ने होइत छैक ।

डॉक्टर : शत प्रतिशत तँ एहने नहि अछि ।

धन्नू : अपवाद तँ सबमे होइते छैक जेना हम अहाँ, मुदा अनठानवे प्रतिशत तेहने अछि ।

जगत : तेँ जखन कोनो अत्याचार चरम पर पहुँचि जाइ छै' तँ तकर प्रतीकारो समाजकेँ सोचहि पड़ैत छैक ।

डॉक्टर : सरकार तँ दहेज लेब-देब दूनूकेँ कानूनन अपराध घोषित कऽ देने छैक ।

जगत : चोरी, डकैती, चोरबाजारी, हत्या, अपहरण आदि कानूनन अपराध थिकै कि नहि ? आ ई सब दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि । वस्तुतः ई सब सामाजिक रेग कानूनसँ नहि छुटि सकैत अछि, एकरा लै समाजक भीतरसँ क्रांति हैबाक चाही । से समाजक किछु साहसी युवक बीड़ा-पान उठा लेलक अछि जे अजग्गि कन्या सभक उद्धार हेतु योग्य वर सभक अपहरण कयल जाय ।

डॉक्टर : ओ सब की करैत छैक ।

जगत : आब तँ देशमे एहने गिरोह सब बनि गेल छै जे कन्यागतसँ दस-बीस हजार लऽ लेलक आ जाहि वरकेँ कन्यागत चाहैत अछि तकरा ठकि-फुसियाकऽ, नहि मानला पर छूरा, रिभाल्वर देखाकऽ बलजोरी लऽ जा वियाहि दैत छै ।

डॉक्टर : कतहु देखबो केलिऐक अछि कि उड़न्तीए सुनै छिऐ ?

जगत : तेसर साल मडुकियाक ओकील कोन दनि चौधरीक बेटाकेँ लऽ गेलनि ।

डॉक्टर : ओकील साहेब की कयलथिन ?

जगत : मोकदमा ठोकि देलथिन ।

डॉक्टर : मोकदमामे की भेलै ?

धन्नू : ओकील साहेबकेँ बाटेमे गोली मारि देलकनि, ठामहि रहि गेलाह ।

डॉक्टर : (**चिन्तित होइत सन**) चलू, कने भट्टजी सँ पुछियनि ।

जगत : आब एतेक राति कऽ ?

धन्नू : नओ तँ बजलैए, बहुत राति भऽ गेलै ? चलू, हमहू चलै छी ।

डॉक्टर : टॉर्च लऽ लै' छी ।

(सब विदा होइत छथि परदा खसैत अछि)

दोसर दृश्य

[स्थान- आनन्द भट्टक डेरा, केवाड़ बन्द, बाहर अन्हार, तीनू गोटेक प्रवेश]

डॉक्टर : (**केवाड़ खटखटबैत**) भट्टजी छी औ ! (**केवाड़ फुजैत अछि**)

(भट्ट बाहर होइत आँखि मिड़ैत बत्ती जरबैत छथि)

भट्टजी : अयँ, डॉक्टर साहेब, जगत बाबू, धन्नूजी, एतेक राति कऽ एक संग तीन गोटे !!! की बात थिकै ?

जगतबाबू : नओ बाजि किछु मिनट भेलै'ए, अहाँ वास्तेँ एतेक राति भऽ गेल ?

डॉक्टर : गिदरभुक्की भानस होइत हेतनि ।

भट्ट : हम सबेर भोजन कऽ सुति रहै' छी आ तीन बजेसँ उठिकऽ अपन थीसिसमे लागि जाइ छी । आँखि लगले छल'ए । अहाँ लोकनि कोमहर ?

डॉक्टर : अहाँ मनोजक बारेमे जगत बाबूकेँ पुछने छलियनि से अहाँकेँ के कहलक ?

भट्टजी : गृहिणी कहैत छलीह । अच्छा, पहिने बैसैत जाउ ।

डॉक्टर : (**सब गोटे बैसैत छथि**), हुनका के कहलकनि ?

भट्ट : पुछने अबैत छियनि । (**भीतर जाइत छथि, डॉ०-जगतबाबू दिस ताकऽ लगैत छथि**)

जगत : कतऽ सँ ई गप्प उड़ल अछि तकर जड़ि धरि पहुँचैत भोर भऽ जैत ।

धन्नू : तैयो पता लागत वा नहि से सन्देहास्पदे ।

डॉक्टर : अद्‌भुत बात तँ ई जे नगर भरि ई गप्प पसरल अछि आ हमरा पड़ौआ कहलक, सेहो तखन, जखन अहाँ पुछलिऐ'। **(भट्ट जी अबैत छथि)**

भट्ट : हमरा पत्नीकेँ दाइ कहलकनि ।

जगत : दाइकेँ के कहलकै ?

भट्ट : से हिनका नहि बूझल छनि ।

जगत : अहूँक पत्नी अबढ़ङाहिए छथि । ओकरा के कहलकै से तँ पूछक चाहियनि ।

भट्ट : से जे बुझियनि, मुदा ई से नहि पुछलथिन ।

डॉक्टर : दाइ कतऽ रहैत अछि ?

भट्ट : चौराहालग जे मस्जिद छै तकरे दछिनवारीकात घर छैक ।

डॉक्टर : कने चलब नहि हमरा संग ?

धन्नू : आहि चलता किएक नहि । **(हाफी करऽ लगैत छथि)**

जगत : एक तँ अपरचित, दोसर ठीकसँ घर देखल नहि, तेसर एते रातिकऽ जयबै तँ की कहत ?

डॉक्टर : **(धन्नू केँ हाफी होइत हिनको हाफी होइत छनि)** तेँ ने भट्टजी केँ कष्ट देबऽ चाहैत छियनि । हमरा भरि राति निन्द नहि हयत ।

(भट्टजी जगत बाबूसँ आँखि मिलबैत छथि ता भीतर सँ थपड़ीक शब्द भट्टजी ट्रे मे चारि कप चाह भीतरसँ आनि रखैत छथि)

धन्नू : देखू जगत बाबू, अहाँ भट्टिनकेँ अवढङाहि कहैत छलियनि आ ओ सबकेँ मुँह बबाइत देखि चाह बना कऽ पठा देलनि ।

जगत : भट्ट शब्दसँ अहाँ भट्टिन स्त्रीलिंग रूप बनौलहुँ अछि ?

डॉक्टर : उचित किने,नट सँ नट्टिन तँ भट्ट सँ भट्टिन सैह ने हो ।

भट्ट : डाक्टर साहेब खाली दवाइएक नहि, स्त्रीलिंगोक ज्ञान रखै छथि ।

(सब चाह पीबऽ लगैत छथि । परदा-खसैत अछि)

तेसर दृश्य

[स्थान- एक फूसक घर, फट्टक लागल । कूकुरक भूकब सुनि पड़ैत छैक । डॉक्टर सुटकऽ लगैत छथि, जगत खखसऽ, भट्टजी टार्च लेसैत)

भट्ट : दाइ छी अय, दाइ ! (फट्टक फुजैत अछि)

दाइ : के एतना राइत कऽ ई चोरबत्ती बारैयऽ !

भट्ट : हम छी, अय दाइ !

दाइ : एतना राइतकऽ केन्ने अइलीगऽ मालिक !

भट्ट : डॉक्टर साहेबक बेटाकेँ पकड़िकऽ वियाहि देलकनि से के कहलक ?

दाइ : एतनीए गो बात पूछे ला एतना राइत कऽ अइली गऽ सेहो चारि गोड़े मीलके ?

डॉक्टर : एकरा एतनी गो बात बुझै छिऐ ?

दाइ : हँऽ बाबू ! से तऽ जेकरा बेटा के बियाहि देलकै गऽ तेकरा वास्ते बड़ी गो बात भे गेलइ । कइसन कनियाँ होतइ, कइसन लोक आउर होतैक...

धन्नू : हिनके बेटा थिकथिन, (डॉ० दिस देखबैत) तेँ पूछऽ अयलाहय ।

दाइ : ओइ पोखरीभिण्डापर परफेसर नइ हथिन, पच्छिम रूखके दुर्मजिला जिनकर हइन ।

भट्ट : हँऽ हँऽ । प्रो० ललितानन्द झा ।

दाइ : हुनकरे हीयाँ एगो भाला झा हथिन । ऊहे बोलै छलखिन ग' जे डागडर बाबू कहाँ दुन रिक्सा पर जाइत हुनका मिललखिन तऽ खुदे कहलखिन जे हमरा लड़िकाकेँ पकड़के बलू बियाहि देलक गऽ से थाना जाइ छिकी ।

जगत : आब कहू डॉक्टर साहेब, आब की करब ?

डॉक्टर : कने चलू तँ ललितानन्द बाबूक ओतऽ' के थिक ई भालाझा ।

भट्ट : आब राति एगारहसँ ऊपर भेल । ओहो सूतल होयताह ।

(सब गोटे मुख्य सड़क पर अबैत छथि । ओम्हर सँ अन्हारमे दू गोटे अबैत देखाइत छनि । लग अयला पर भट्ट जी टार्च बारैत छथि आ जोरसँ बाजि उठैत छथि ।)

भट्टजी : हे लियऽ डॉक्टर साहेब,

(आगन्तुक दुनू फूलपेन्टमे, पीठ पर दुनूकें एयर बैग)

डॉक्टर तथा धन्नू एके संग- मनोज थिकाह हऔ ! मोहन थिकाह हओ !

(दुनू अपना-अपना पिताकें झूकि प्रणाम करैत)

अहाँ लोकनि एतेक राति कऽ ?

जगत : हम सब कौआ लऽ गेल कान,

भट्टजी : ताहि पाछू हरान,

मनोज : नहि बुझलहुँ ।

भट्टजी : जाकऽ घर पर बूझि लेब । **(सब एके संग हँसैत छथि)**

(परदा खसैत अछि)

[रचनाकाल 1998 ई.]



जन्म	:	2 मइ 1925 ई. खोजपुर (मधुबनी)
पिता	:	पं० मुक्तिनाथ मिश्र,
मूल	:	हरिअम्मय रखवारी, गोत्र- वत्स
शिक्षा	:	व्याकरणाचार्य, साहित्य शास्त्री, धर्मकोविद
आजीविका	:	अध्यापन, एम्.एल्. एकेडमी, लहेरियासराय, दरभंगा (अगस्त 1947-मार्च 1983)
सम्प्रति	:	सदस्य, साहित्य अकादेमी दिल्ली उपाध्यक्ष- मैथिल महासभा, दरभंगा अध्यक्ष- विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा
आवास	:	आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा- 846004 दूरभाष : 06272-223485

मौलिक, अनूदित, सम्पादित कृति

कविता	–	1. गुद्‌गुदी, 2. युगचक्र, 3. ऋतुप्रिया 4. उनटा पाल, 5. आशा दिशा 6, विविध गीत, 7. ठाँहि-पठाँहि, 8. अमर-संगीत (हिन्दी)
उपन्यास	–	9. वीर कन्या, 10. बिदागरी।
कथा	–	11. जल समाधि।
संस्मरण	–	12. कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा।
निबन्ध	–	13. मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण
विनिबन्ध	–	14. म.म. मुरलीधरझा, 15. काशीकान्तमिश्र 'मधुप', 16. दीनानाथ पाठक 'बन्धु'
इतिहास	–	17. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास 18. मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास 19. मैथिल महासभाक इतिहास
विविध	–	20. त्रिफला, 21. समाधान एकांकी)
अनुवाद	–	22. विद्यापति नीति तरंगिणी, 23. वंकिम चन्द्र चटर्जी, 24. हरिनारायण आप्टे 25. परशुरामक बीछल बेरायल कथा
सम्पादित	–	26. प्रतिनिधि एकांकी, 27. विद्यापति सूक्ति तरंगिणी, 28. स्वातन्त्र्य स्वर, 29. कथा किसलय, 30. मैथिली आलोक
संकलन	–	31. मुहावरा ओ लोकोक्ति
संयुक्त सम्पादन	–	32. ललित नारायण स्मृति ग्रन्थ, 33. सुमन साहित्य सौरभ 34. कविता संग्रह (मैथिली अकादमी), 35. जीवन झा रचनावली
सम्पादन	–	36. इजोत, 37. वैदेही, 38. लोचन, 39. निर्माण, 40. जनक आदि